नेलसन ।

मर्य्यादापुरुषोत्तम राम, श्रान्तपथिक, धीरपतिव्रता,
शान्ति और सुख, वीरचूडामणि इत्यादि के
लेखक "सुलेखक स्वर्णपदक" प्राप्त,
औरंगाबाद (गया) निवासी

अखौरी कृष्णप्रकाश सिंह

लिखित ।

हरिदास वैद्य

द्वारा प्रकाशित ।

कलकत्ता

२०१, हरिसन रोड के **नरसिंह प्रेस** में,
बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा

मुद्रित ।

सन् १९१५

द्वितीय बार १०००

मूल्य ।

स जातो येन जातेन,

याति वंशः समुन्नतिम् ।

परिवर्त्तिनि संसारे,

मृतः को वा न जायते ॥

हितोपदेशः ।



स्वर्गीय कृष्णप्रकाश सिंह ।

समर्पण

अनेक गुणसम्पन्न, विद्यानुरागी, भाषा-रसिक

श्रीयुत पण्डित रमावल्लभ मिश्र

एम० ए०

डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट तथा कलक्टर **पूर्णी**

के

कर-कमलों में सादर

समर्पित ।

अखौरी कृष्णप्रकाश सिंह—

भूमिका।

सर्वाधार, परम पूज्य, अविनाशी, घटघटवासी भगवान्‌के चरणोंमें बारम्बार प्रणाम है, जिनके कृपा-कटाक्षसे संसारी जीवों का पालन पोषण हो रहा है और सृष्टिके चित्रविचित्र कौतुक दिन रात दिखाई दिया करते है।

यह संसार एक रंगभूमि है, जिसपर कोटि २ अभिनेतागण प्रति दिन अपना अपना भला या बुरा अभिनय एक दूसरे को दिखलाते है। क्षण क्षण में दृश्य बदलता जाता है, घडी २ पटाक्षेप हुआ करता है और अन्तमें जब किसी एक का अभिनय समाप्त होता है, तो तत्काल ही उसके कार्य्यों पर दृश्यात्मक पटाक्षेप पड जाता है और तब उसके सहनर्तकोंको अवसर मिलता है कि वे अभीके समाप्त किये हुए कार्य्यकी आलोचना, प्रत्यालोचना करें तथा अपने भविष्य-पार्टमें यथेष्ट रद्द-बदल करें।

मनुष्यका आवरण प्रत्येक आत्माको मिलता ही है। संसार की रङ्गभूमि प्रत्येक देहधारियों को प्राप्य ही है, जन्म-पट सुख दुःखके रङ्गसे रञ्जित हुआ ही करता है, अपनी उन्नति का सुअवसर भी कुछ काल के लिये हस्तामलक होता ही है। इतने तुल्य स्वत्व देकर प्रकृति तब बाट जोहती है कि, कौन धीर अपने स्वत्वों का पूरा सदुपयोग कर संसार-इतिहास में अपना नाम सुनहले अक्षरों मे लिखवा जगदादर्श बनता है।

पाठक! जगत में वही नर-शार्दूल प्रकृति का अहास्पद होता है, उसी वीरके भूत कार्य्यों का स्मरण मनुष्य-जाति के

उद्धारका कारण होता है जो अपनेको अपने देशके लिये उत्पन्न समझता हुआ, देशागत मृत्यु से भी एकबार सामना करता है तथा मार भगानेकी चेष्टा करता हुआ, शरीरार्पण कर देता है और मनुष्य-जातिकी हित-कामना-रूपी योगाग्निमें अपने सुखसामान, ऐश्वर्य, दारा, गेह, देह तक को निष्काम आहुति दे देता है।

यह पुस्तक एक ऐसे ही कर्मवीर की जीवनी है। नेलसन एक दीन हीन पिता का पुत्र था ; परन्तु उद्योग, सहनशीलता तथा सहिष्णुता इत्यादि गुणों के द्वारा जगन्मान्य होगया। नेलसनकी जीवनी हमलोगों को सच्चा स्वदेशभक्त, सहृदय तथा अहङ्कारशून्य होना सिखलाती है और हमें लाखों विघ्न बाधाओं की अजेय सैन्य के सम्मुख भी अटूट दुर्ग से खड़े रहनेका उपदेश करती है।

शारीरिक दुर्बलताके रहते हुए भी नेलसनने हृदयकी वलिष्ठता के द्वारा योरोप के हौआ नेपोलियन को कैसा सबक पढ़ाया है—ग्रहणीय है। इङ्गलेण्डकी कौन कहे, इसका वह जन्मदाताही था, परन्तु नेलसन संसार भरका हितेच्छु तथा रक्षक कहा जाता है।

सन १८०५ ई० में, नेलसन की मृत्युके बाद, प्रत्येक देशों के विद्वानों ने इस वीर की जीवनी अनेक भाषाओं मे लिख लिख कर, गुणग्राहिताका परिचय दिया था, केवल अँगरेज़ी भाषा मे ही दस बारह लेखकों ने इनकी जीवनी क़िस्से, कहानी तथा इतिहासके रूपमें लिखी है।

विद्वान-देशोंमें देशभक्त वीरोंकी जीवनियों का कितना मान होता है, यह पुस्तकों की विक्री तथा आवृत्तियों से भली भाँति विदित हो जाता है। केवल एक सदी(Southey) की लिखी हुई 'नेलसन' की दस पन्द्रह आवृत्तियाँ, १८८५ से आज तक, विद्वान देशकी सुरुचिका खासा नमूना हैं।

हिन्दी भाषामें ऐसी पुस्तकोंका अत्यन्त अभाव है। यद्यपि इधर कुछ दिनोंसे कुछ भाषा-लेखकोंने इस ओर भी ध्यान दिया है और स्वदेश तथा दूसरे देशोंके महान-पुरुषोंकी जीवनियाँ प्रकाशित कर अपने भाषा भण्डार की पूर्त्ति कर रहे है तथापि इनकीसंख्याएँ अन्य भाषाओंमें की जीविनियों के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है।

इस साल सर्कारी रिपोर्टसे विदित हुआ है, कि संयुक्त-प्रदेशसे जो भाषाका प्रधान विद्या-पीठ समझा जाता है, केवल दो ही जीवन-चरित प्रकाशित हुए हैं। पाठक स्वयं विचार सकते है, कि भारतवर्षके इतने भाषा जाननेवाले विद्वानो में से कितने विचारी हिन्दी की ओर ध्यान देते है।

नेलसन से वीर की जीवनी यदि किसी एक अच्छे विद्वान के हाथसे लिखी जाती, तो कितनी उपयोगी और मनोरञ्जक होती, परन्तु जब किसीने आगे पैर न दिया, तो तावपेंच खाकर इस पुस्तक की अति आवश्यकता देख, मैंने ढिठाई करने को लेखनी उठाई। मुझ से भारी से भारी त्रुटि हो जाना असम्भव नहीं, क्योंकि मै कोई प्रसिद्ध लेखक तो हूँ नहीं,

जो मेरा लेख सर्वाङ्ग भूषित हो, तोभी आपलोगों को दयालुता की आशा है।

पुस्तक लिखनेमें निम्नलिखित पुस्तकोंसे सहायता ली गई है, अतः उन पुस्तकोंके लेखकोंको आन्तरिक धन्यवाद है।

Life of Nelson	लेखक—सदी (Southey)
Large Life of Nelson	,, क्लार्क और एम आर्थर
Story of Nelson	,, जौन लांग—

नेलसन के विषय में

उसके देशवासियों की उक्ति सुनिये:—

"He has left us a name and an example which are at this moment inspiring hundreds of the youth of England—a name which is our pride, and an example which will continue to be our shield and strength"

अर्थात नेलसनने हमलोगोंके लिये अपना नाम और उदाहरण छोड़ा है, जिससे सैकड़ों इंगलैण्डवासी युवक कर्त्तव्य करनेको आज भी उत्तेजित होते हैं—आपका नाम हमलोगोंका गर्व, आपका उदाहरण हमलोगोंका बल और वर्म सदा बना रहेगा।

पाठक! मुझे आशा है कि पुस्तक अच्छी नहीं होने पर भी, नेलसनसे देश-सेवकके जीवन-चरित से तो आप लोग अवश्य लाभ उठावेंगे और अपने देश की सेवामें तत्पर होंगे।

उपसंहारमे, मै अपने अन्तरङ्ग मित्रों, बाबू रामानुग्रह नारायण लाल तथा नक्षत्रमय-आकाश इत्यादि के लेखक बाबू सुरेशचन्द्र लालको आन्तरिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्हो ने पुस्तक सम्पादनमें सहायता तथा उत्साह प्रदान किया। लेखक।

विषय-सूची ।

नेलसन।

प्रथम परिच्छेद।

बाल्यावस्था और वंश-परिचय।

वीर नेलसन होरेशियोका जन्म नारफोक इलाके के बर्नहमथोर्प ग्राममें २९ सितम्बर सन् १७५८ ई० में हुआ था। इनके पिताका नाम एडमण्ड और माताका कैथेराइन नेलसन था। एडमण्ड उसी ग्रामके ग्रामाचार्य्य थे।

नेलसनकी माता बड़े मान्य घरानेकी थी। इनकी दादी इँगलिस्तानके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री सर राबर्ट वालपोलकी बड़ी बहन थी।

अभाग्यवश, बीबी नेलसन, सन १७६७ ई० में, आठ बच्चों को अपने पीछे बिलखते हुए छोड़कर, स्वर्गारोहण कर गईं; इनके जीवनकाल ही मे इनके तीन बच्चोंका देहान्त हो चुका था।

बीबी नेलसनकी मृत्यु विचारे एडमण्डके लिये अत्यन्त मर्म-भेदी हुई। आठ आठ बच्चोंका भरण-पोषण कैसे चलेगा, इस सोचसे बिचारा घुलने लगा।

कप्तान मौरिस सक्लिंग, अपनी बहिन, बीबी नेलसनकी मृत्युके बाद, एडमण्ड, अपने बहनोई, को सांत्वना देने आया। इसने, एडमण्डको दुःखी देख, एक बच्चे के भरण-पोषणका भार अपने ऊपर ले लिया।

समय-चक्र अविकल रीतिसे सुख दुःखकी अप्रतीक्षा करता हुआ सदा घूमा करता है। तुम्हारा समय राज-भोग भोगने में या भिक्षा माँगनेमें क्यों न व्यतीत हो, चाहे तुम प्रसन्न रहो या अविरल अश्रु-धारा ही बहाया करो, परन्तु समय इसकी पर्वाह कदापि नहीं करेगा।

बीबी नेलसनको मरे आज तीन वर्ष व्यतीत हो गये; हमलोगोंका चरित्र नायक अब १२ वर्षका हो गया है। बड़े दिनकी छुट्टीमें नेलसन घर आया है। आज एकाएक उसकी दृष्टि समाचार-पत्रके एक कोनेपर पड़ी, उसके हर्षका ठिकाना न रहा। उसने पढ़ा कि उसका मामा "रेज़नेबुल" का कप्तान नियत हुआ है।

भावोंने प्रेरणा की। नेलसनने अपने बड़े भाईसे पिताके यहाँ एक पत्री लिखनेके लिये बिनती की और जहाज़में नौ-करी करने की उत्कट अभिलाषा प्रकट की।

एडमण्ड नेलसनका स्वास्थ्य इन दिनों अच्छा नहीं था, अतः वह जल-वायु बदलनेके ख्यालसे बाथ (Bath) शहरमें रहता था ; वहीं पुत्रकी चिट्ठी पहुँची। उसने होरेशियोकी आन्तरिक अभिरुचि जानकर और अपनी आर्थिक दशा उत्तम न देखकर शीघ्रही अपनी अनुमति देदी। पिता पुत्रकी प्रकृतिसे भली भाँति अभिज्ञ था और सदा कहा करता था कि होरेशियो जहाँ रहेगा वहाँ ही सर्वश्रेष्ठ होगा।

एडमण्डने शीघ्र एक पत्र कप्तान सकलिङ्गको इस विषयका लिखा। कप्तानने उत्तरमें यह लिखा कि यद्यपि बिचारा होरे-शियो बहुत दुर्बल है तथापि उसका मन भङ्ग करना उचित नहीं है अतः उसे भेज दो ; परन्तु भय केवल इस बातका है कि कहीं पहिले ही युद्धमें उसका मस्तक गोलेसे उड़ न जाय।

पाठक ! इस उत्तरसे आप समझ सकते हैं कि, होरेशियो को नाव्य-विद्या-निपुण बनानेकी इच्छा कप्तानकी कदापि नहीं थी। यद्यपि नेलसन शरीरसे अत्यन्त दुर्बल और रोगी था ; तथापि भविष्य-गौरव, दृढ़-संकल्प और उदारता जो उसके भावी जीवनके सबसे बड़े उद्देश्य रहे, उस समय भी अपना आभास दिखाये बिना नहीं रहते थे और क्यों रहें ? क्या वाल्यकाल ही भविष्य-जीवनका अरुणोदय नहीं है ? क्या

उत्कृष्ट या निकृष्ट बीज इसी अवस्थामें मनुष्य-शरीरमेंप्रवेश कर आमरण नहीं फूलते फलते रहते हैं ? उदाहरण देखो।

एक दिन बहुत ही बाल्यावस्थामें, नेलसन एक चरवाहेके संग पक्षियोंके घोंसले खोजता हुआ अपनी पितामहीके घरसे निकल पड़ा और रास्ता भूल गया। भोजनके समय भी वह घर वापिस नहीं आया। लोगोंको भय होने लगा, कि कहीं वह यक्षिणियोंके हाथ तो नहीं पड गया; परन्तु बहुत खोजने पर वह एक दुस्तर नदीके किनारे स्थिर भावसे बैठा पाया गया। इसको दादीने पूछा कि क्यों रे, तुझे अकेले डर नहीं मालूम होता जो यहाँ बैठा है। हमारे होनहार वीरने उसी भावमें उत्तर दिया, "दादी ! डर ! डर क्या वस्तु है! मैंने तो देखा भी नहीं।" धन्य निर्भीक ! धन्य तुम्हारा पौरुष ! क्यों न हो ! वीर नेपोलियनको नीचा दिखानेवाला, इंगलैण्डको महामान्य बनानेवाला, वीर यदि ऐसा नहीं कहेगा तो कौन कहेगा ?

एक दिन शीतकालकी छुट्टी अन्त होनेपर, नेलसन अपने भाईके साथ घोड़े पर स्कूल जा रहा था; परन्तु मार्ग हिमाच्छादित रहनेके कारण लौट आया और पितासे व्योरा सुनाया। पिताने कहा, "पुत्रो ! यदि हिम अत्यन्त ही अधिक हो तो स्कूल जाना ठीक नहीं, परन्तु पुन: एकबार उद्योग करो, इस बार मैं तुमलोगोंको सत्प्रवृत्तिपर छोड़ देता हूँ।" हिम सचमुच ही इतना था, कि यदि वह बहाना करना चाहता तो मजे में कर सकता था, परन्तु सत्प्रवृत्ति नेलसनके लिये बड़ी बात थी।

उसने अपने भाइयोंसे कहा, "हमलोग अवश्य जायँगे, भइया! पिताने इस कार्य्यको हम लोगों की सत्प्रवृत्ति पर छोड़ दिया है; इससे पीछे हटना, मानो सत्प्रवृत्ति पर लात मारना है।"

नेलसन स्वभावसे ही हृष्ट था। इसके लिये कोई काम ले लेना और पूरा कर देना बायें हाथका खेल था। कैसा भी भारी काम क्यों न हो, यह कभी घबराने वा डरनेवाला पुरुष नहीं था।

एक दिन पाठशालाके लड़कोंने मिलकर गुरूजीके बग़ीचे से पक्के सेब चुराने चाहे, परन्तु इतना साहस किसीमें नहीं था कि प्राचीरके भीतर जाकर सेब चुरा लावे। नेलसनने कार्य्य को स्वयं ही अपने हाथ लेकर, उन लोगोंसे कहा कि मुझे रातके समय कपड़ेमें बाँधकर खिड़कीके नीचे लटका दो, तो मैं तुम लोगोंको सेब लादूँ। ऐसा ही किया गया; नेलसनने सब सेब लाकर लड़कोंमें विभक्त कर दिये, परन्तु अपना भाग उसमें एकदम नहीं लिया और उत्तर दिया कि तुमलोग भय-भीत थे, इसी कारणसे मैंने यह कार्य्य सम्पादन कर दिया है।

दूसरा परिच्छेद।

भिन्न भिन्न जहाजोंपर और स्थानोंमे स्थिति।

एक दिन वसन्त ऋतुमें, प्रातः समय हो, नेलसनका सेवक वेल सहम पाठशालामें एक पत्र लेकर पहुँचा। नेलसनने आज्ञापत्र आया जान, शंकित हृदयसे पत्र खोला। सचमुच यह वही अपेक्षित पत्र था, जिसमें नेलसनको जहाज़पर काम करनेकी आज्ञा थी।

नेलसन तो अब अवश्य जायगा। देश, इष्ट, मित्र, परिवार सभी छूटेंगे। ऐसे कम वयसमें प्रिय-वियोग कैसा अखरता है, सहृदय पाठ खूब जानते हैं। बाल्यकालके संगी, एक साथके खेलनेवाले मित्र, आज छूटते हैं क्रीड़ामें आनन्द देनेवाले सहोदरोंसे अब फिर भेट हो न हो, कौन जाने। आज सहृदय नेलसनका कोमल कलेजा इन बातोंको सोच सोच बैठा जाता है। आज इसके लिये रंगमे भङ्ग है। बड़े दुःखसे नेलसन अपने पिताके साथ घर छोड लण्डन पहुँचा। 'रेज़नेबुल' (Raisonable) इस समय 'मेडवे' (Medway) में पड़ा हुआ था। नेलसन अब 'चैथम' (Chatham)

जानेवाली मेल-गाड़ीमें बैठा दिया गया। वहाँ पहुँचने पर वह यात्रियोंके साथ जहाज़ पर चढ़नेको गाड़ी से उतरा।

शीत बड़े ज़ोरसे पड़ रहा था। बिचारा अनभिज्ञ युवक जहाज़ पर चढ़नेके लिये इधर उधर भटकता फिरता था। इतनेमें इसको किसी एक नाविकसे भेंट हो गई। पूछते पाछते नाविकको यह मालूम हो गया कि, नवयुवक कप्तान सकलिङ्ग का भाञ्जा है। उसने कृपा कर इसे घर ले जाकर पूरे सत्कारसे प्रसन्न किया और जहाज़ पर चढ़ा दिया। चरित्रनायकका प्रथम दुःख अभी बिल्कुल समाप्त नहीं हुआ था। जहाज़पर जानेपर ज्ञात हुआ, कि न कप्तान सकलिङ्ग ही वहाँ हैं, न किसी नाविकको इसके आगमनकी ख़बरही दी गयी है। बिचारा बालक दिन भर नौका पर घूमा किया ; परन्तु किसी ने इस पर ध्यान तक न दिया। दूसरा दिन भी योंही बीता चाहता था, कि किसी कृपालु नाविकने कृपाकर इसे खाने पीनेके निमित्त कुछ दिया।

नेलसन अपनी स्वलिखित जीवनीमें लिखता है, कि यद्यपि नाविकोंका समूचा जीवन अनेक दुःखोंसे परिपूर्ण रहता है, यद्यपि उनका हृदय भविष्य-विचार और भूत क्लेशोंसे विदीर्ण हुआ करता है, यद्यपि अनेक दुर्घटनाओं तथा अनेक दुःखोंसे उनका हृदय क्षत विक्षत होता ही रहता है, तथापि जितना प्रेम और सुमधुर वचनोंका अभाव, जितना मानसिक कष्ट

प्रथम गृह-विछोहके बाद अनुभव होता है उतना कभी भविष्य-जीवनमें होनेका नहीं।

युवक नाविकोंको अपने समग्र सुखोंका, यहां तक कि "रैन नींद अरु बासर भोजन" तकका भी परित्याग करना होता है।

हमलोगोंका चरित्रनायक शरीरसे अत्यन्त दुर्बल तथा रोगी था। अतः आदिमें जिन दुःखोंका अनुभव उसने किया था; उन्हें वह आमरण विस्मरण न कर सका।

रेज़नेबुल (Raisonable) स्पेनके झगड़ेके लिये किराये किया हुआ जहाज़ था। ज्योंही स्पेन (Spain) सरकारसे सन्धि स्थापित हुई, त्योंही इसको जवाब दे दिया गया और सक्लिंगकी बदली ट्रायम्फ (Triumph) जहाज़ पर हो गई। नेलसन भी साथ हो गया। ट्रायम्फ (Triumph) इन दिनों टेम्स (Thames)में रक्षक-यान था। एक चञ्चल नवयुवकको चुपचाप रक्षक-यानपर मक्खियां मारना कब भा सकता था? चरित्र-नायक उद्योग कर वेष्ट इण्डीज़ (West Indies) जानेवाले एक वाणिज्य-यानपर समयका सदुपयोग करने चला। यह जहाज़ कप्तान सक्लिंगके पूर्वाधीन कप्तान जान राथबोन (John Rathbone) की अध्यक्षतामें था। नेलसन इस यात्रासे एक निपुण नाविक होकर लौटा; परन्तु सरकारी नौकरीसे इसे आन्तरिक घृणा हो गयी। नेलसन इस कहावतको कि "करे सिपाही नाम हो सरदारका" सदा दोहराता था।

राथबोन (Rathbone) कदाचित अपने नाव्य-जीवनमें

उद्दिग्न और हतोत्साह हो गया था, अतः वह नेलसनको सुहृद्भावसे ऐसे जीवनमें प्रवेश करनेसे सदा वर्जता था।

नेलसनके वापिस आनेके बाद, उसके मामा कप्तान सकलिङ्ग ने उसको अपने जहाज़ पर ले लिया। कप्तानने इसको नाव्य-विद्या सीखनेसे अरुचि देखकर, अनेक उपाय अनुनय करानेके किये और उत्साह दिया, कि यदि तुम नाव्य-विद्यामें पूर्ण दक्षता प्राप्त कर लो तो तुमको प्रधान अध्यक्ष-यानके अनुगत लम्बी डोंगी पर चढ़कर चलनेका असामान्य अधिकार शीघ्रही प्राप्त होगा। इस प्रकार उत्साहित हो, कुछ ही कालमें, नेलसन चैथम (Chatham) से टावर (Tower) तक तथा स्वीम (Sweam) की खाड़ीसे नौर्थ फोरलैण्ड (North Foreland) तक आने जानेवाले जहाजमें कर्णधारका कार्य्य बड़ी निपुणतासे करने लगा। साथही साथ समुद्रान्तर्गत पर्वतों और बालुकामयी कूलोंसे पूर्ण अवगत हो गया। नेलसनको अपने भावी जीवनमें इस शिक्षाके मधुर फलका स्वाद खूब ही मिला।

नेलसन ट्रायम्फ (Triumph) पर अपने मामाके साथ बहुत काल तक नहीं रहा। नये नये साहसिक कार्य्योंके करनेकी लालसा नेलसनके समुन्नत हृदयमें लहरा रही थी। इतनेमें इसने सुना कि दो आविष्कारक यान उत्तरीय ध्रुवकी खोजमें प्रस्थान करनेवाले हैं। अब तो नेलसनकी लालसाका ठिकाना नहीं रहा। यात्राको अनेक कष्टमय जानते हुए भी,

उसने उत्कट उद्योग उस यात्रामे जानेका किया और अपने मामाकी सहायतासे सहकारी कप्तान लटविज (Letwidge) के आधीन कर्णधार नियत हो गया।

यह आविष्कारक यात्रा रायल सोसाइटी (Royal Society) के अनुरोधसे की गई थी। दोनों जहाज रेचहोर्स (Rech Horse) और कारकैस बोम्ब (Carcas Bomb) बड़ी उत्तमतासे सजाये गये थे तथा दो ग्रीनलैण्ड-निवासी (Esquimaux) निपुण कर्णधार भी भरती कर लिये गये थे। जहाज ४थी जूनको प्रस्थान कर गये।

६ ठी जुलाईको रेचहोर्स (Rech Horse) एक स्थान पर, जहाँ अनेक आविष्कर्त्ताओंके जहाज रुक गये थे, हिम-बद्ध हो गया। बड़े परिश्रम से २४ तारीख तक जहाज उत्तर और पश्चिमकी ओर ठेले गये, परन्तु उसके बाद ये ऐसे अटके कि उद्धार दुष्कर हो गया। दृष्टि जहाँ तक जाती थी, केवल तुषार के श्वेत पट ही दीख पड़ते थे।

दूसरे दिन कर्णधारों के आदेश से नाविकों ने जहाज के लिये १२ फीट चौड़ा रास्ता पश्चिमकी ओर काटना आरम्भ किया, परन्तु इतने कठिन प्रयाससे भी जहाज केवल ३०० गज़ आगे बढ़ सका। दिन पर दिन बीतने लगे। उद्धार के सब उपाय पूर्वी या उत्तरी-पूर्वी वायुके झकोरे बिना व्यर्थ होने लगे। अब कम वयस्क नेलसन को कप्तान ने

मार्ग-अन्वेषक डोंगियोंमेंसे एक का समूचा भार देकर मार्गा-न्वेषणमें नियत किया।

तरुण नेलसन इस समय एक अत्यन्त निर्भीक कार्य्य कर बैठा। एक दिन अर्द्धरात्रिको वह अपने सहचरके साथ एक भालूका पीछा करता हुआ निकल पड़ा। कुहासा खूब पड़ रहा था। बस, थोड़ीही देरमें ये लोग दृष्टि की आट हो गये। कप्तान लटविज (Letwidge) इत्यादि इन लोगोंके लिये विकल होने लगे, परन्तु दूसरे दिन सुबह तक कोई टोह इन प्रगल्भ नाविकों को न मिली। भाग्य से दिन निर्मल था। लोगोंने दोनों जनोंको दूर पर एक भयानक भालूका सामना करते हुए पाया। दोनों को वापिस आनेके लिये संकेत किया गया। नेलसनके सहचरने उसका ध्यान संकेत की ओर आकर्षित भी किया, परन्तु व्यर्थ। वह बार २ बन्दूक भालूको मारनेके लिये छोड़ता जाता था। यहाँ तक कि पास की कुल गोली बारूद खतम हो गई।

अब नेलसनके जीवनमें संशय होगया। वह भयानक भालू चुटैल होकर मेघ-गर्ज्जन करता हुआ नेलसन पर झपटा। यदि उस समय भालू और नेलसनके बीच बर्फ पिघल-जाने से एक छोटी नदी नहीं बन गई होती, तो नेलसनकी जीवनी दो चार पलमें यहीं पर परिशिष्ट हो जाती। परन्तु परमेश्वरने मानो स्वयं एक छोटी निर्झरनीके रूपमें नेलसन और भालूके बीचमें पड़कर होनहार वीरकी रक्षा की।

नेलसनने चिल्लाकर अपने साथोसे कहा, 'मित्र! मैं कप्तानके संकेतको पर्वाह नहीं करता। मुझको तो किसी प्रकार इस राक्षसके निकट पहुँच कर, अपनी बन्दूक के कुन्दे से ही इसे यमपुरी पहुँचाना है।' सेनापतिने दोनो नाविकों पर विपत्ति आई जान, अपनी बन्दूकको गोलीसे भालूको यमपुरीका रास्ता दिखलाया। नौकापर वापिस जानेपर, कप्तानने नेलसन को बहुत जली कटी बातोंसे भर्त्सना की और ऐसे दुःसमयमें शिकारका पीछा करनेका कारण पूछा। नेलसनने होंट चबाते हुए उत्तर दिया—"महाशय! मैं रीछको मार, उसके चर्मका उपहार पिताको देना चाहता था"। (नेलसन जब कभी उद्विग्न होता अपना होंठ चबाने लगता था)।

मार्ग-अन्वेषक डोंगियोंने समाचार दिया, कि निकट ही एक द्वीपमें पूर्व्वीय वायु बह रही है। दोनो कप्तानोंने आपस में यह राय ठहरायी, कि जहाज़को छोडकर सब कोई डोंगियों पर सवार हो रवानः हो जायें। परन्तु नवीं अगस्त को उत्तरी-पूर्व्वी वायुके झकोरेने जहाज़को आगे ठेल दिया। दूसरे दिन मध्यान्ह होते २ वायुके ठेलोंसे भाग्यवश जहाज़ समुद्रमें पहुंच गया और सिमनबर्ग (Semnaburgh) के नौकाश्रयमें जहाज ने लङ्गर डाला। यहां हमारी वीर-मण्डली कई दिनो तक डेरा डाले रही। इस स्थान पर किसी प्रकारके जीव कीड़े मकोड़े नहीं पाये जाते थे। पहाड़ के दर्रे हिम के बड़े २ टुकड़ो से खचित दीख पड़ते थे। ये

दूरसे अत्यन्त सुन्दर हरे रङ्गके मालूम पड़ते थे। जहाँ तक दृष्टि जाती थी हिम ही हिम था। कहीं २ तुषाराच्छादित पर्वतों से छोटी छोटी निर्झरणियाँ नीचे गिरकर मानों थके वीरों का मनबहलाव कर रही थीं। बेड़ा यहाँसे प्रस्थान कर खुशी खुशी इङ्गलैण्ड पहुँच गया।

हमलोगोंके चरित्र नायकने गद्गद हृदयसे मामा का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। मामाने इसे पुन: सी होर्स (Sea-horse) पर एक नौकरी दिला दी। यह जहाज़ ईस्ट इण्डीज़ (East Indies) को जानेवाला था। इसीपर नेलसन आगेके मस्तूलपर प्रहरीका काम करने लगा।

चरित्रनायकने अपने उन्नत चरित्रसे अपने कप्तान शेरीज़ (Sherez) को मोहित कर लिया और इनकी सहायतासे बहुत शीघ्र ही मिडशिपमैन (Midshipman) की जगह बहाल हो गया।

यात्राके आरम्भमें नेलसनका मुख अत्यन्त प्रफुल्लित और शरीर अत्यन्त सन्नद्ध और पुष्ट हो गया था। परन्तु ईस्ट इण्डीज़ (East Indies) के दूषित जलवायुने चरित्रनायकके बल और स्वास्थ्यका ह्रास करना आरम्भ कर, अठारह महीनेमें इसे बिल्कुल अस्थिचर्मावशिष्ट कर दिया। डाक्टरोंने जवाब दे दिया। अब इङ्गलैण्ड लौट आनेके अतिरिक्त और कोई उपाय बाक़ी नहीं रह गया। अन्तमें 'डोलफ़िन' (Dolphin) जहाज़में यह स्वदेश लौट आया। डोलफिनके कप्तान पिगट

(Pigot) ने इसकी सेवा सुश्रुषामें कोई त्रुटि न की और वह इन्हींकी कृपासे स्वदेश सकुशल लौट भी सका।

ईस्ट-इण्डीज (East Indies) की यात्रामें चरित्र-नायक की होनहार सर चार्लस पोल्स (Sir Charles Poles) और ट्रवीज (Trawodge) प्रभृति अफसरोंसे जान पहचान हो गई। इसको उस देशसे लौट आनेका बड़ा शोक था। वहाँ का नूतन मनोहारी दृश्य अत्यन्त रमणीय था। ईष्ट इण्डीज (East Indies) से स्वदेश-आगमनका वर्णन बड़े मनोहारी शब्दोंमें इसने स्वयं यों किया है - "मुझे दृढ़ विश्वास हो गया था, कि अब मैं अपने जीवनमें कृतार्थता नहीं प्राप्तकर सकता हूँ, मेरा चित्त उन कष्टोंको जिनपर मुझे विजय पाना अत्यावश्यक था सोच २ कर विचलित होता जाता था। मुझे सहायता करनेवाला संसारमें कोई नहीं दीखता था। मैं अपनी कीर्त्ति स्पृहाके विषयको प्राप्त करनेका कोई उपाय न खोज सका। बहुत काल तकके सान्धकार चिन्तनके बाद मेरे हृदय में सहसा स्वदेश-प्रीतिका विद्युत प्रदीप चमक उठा और मेरा देश और देशाधिप ही मुझे अपना सवर्द्धक और उपकारक बोध होने लगा। उस समय मैं दृढभावसे बोल उठा, कि मैं अवश्य ही वीर हूँगा और भाग्यपर विश्वस्त होकर सकल दुःख कष्टों का सामना करूँगा।" इसके बाद भी नेलसन अपने इन अनुभवोंका कथन बड़े प्रेमसे करता था और उसी समयसे वह सदा कहा करता था, कि उस समय मेरे अन्तर्नेत्रोंमें एक

प्रज्वलित विम्ब आन्दोलित होकर मुझे कीर्त्ति-अभिमुख प्रेरित कर रहा था।

पाठक ! आप विचार कर सकते हैं, कि नेलसनका पहिला विषस मनोविकार यथार्थमें उसको अन्तरात्माका नहीं वरन् रुग्न शरीर और खिन्नमनको छाया मात्र ही था। नेलसनको भी दृढ़ विश्वास था, कि वह पथ-दर्शक आलोकका किरणें, जिन्होने इसे महामान्य तथा जगदादर्श बनाया है मनोविकार न होकर सचमुच हो स्वर्गीय आलोक थीं।

नेलसनका सहायक मामा, जैसा इसे बोध होता था, एक दम तुच्छ नहो था। इसके पीछे कप्तान सक्लिङ्ग नौकावलो का पर्य्यवेक्षक नियत हो चुका था। स्वदेशागमन पर नेलसन का स्वास्थ्य अच्छा हो चला। नेलसन अपने मामाको कृपासे इस समय वरसेस्टर (Worcester) का लेफ्टिनेण्ट (Lieutenant) नियत किया गया और १७७७ ई०में जिब्रा-ल्टर (Gibralter) से लौट आने पर १८ वर्षकी उम्रमें लेफ्टिनेन्सीको परीक्षामें उत्तीर्ण भी हो गया।

पाठक ! यहां पर मैं कप्तान सक्लिङ्गके कुछ उत्कृष्ट गुणों का परिचय भी, एक उदाहरण दे, आपसे करा देना उचित समझता हूँ। पूर्व कथित परीक्षामें सक्लिङ्ग नेलसनकी परीक्षा का प्रधान अध्यक्ष था। नेलसन जब तक अपने प्रश्नोंका उत्तर देता रहा, आप चुपचाप बैठा देखा किया। और और परीक्षकोंसे इस का नाम भी न लिया कि विद्यार्थी मेरा भाञ्जा है। परन्तु जब

नेलसन बहु सम्मानके साथ परीक्षोत्तीर्ण हो चुका तब आपने परीक्षकोंसे नेलसनको अपना भाञ्जा बताकर परिचय कराया। परीक्षकोंके पहिले परिचय नहीं करानेसे आश्चर्य्य प्रगट करने पर आपने कहा, मै कदापि नहीं चाहता था कि नेलसन अनुग्राह्य होकर परीक्षोत्तीर्ण हो। मै जानता था कि नेलसन अपनी ही योग्यतासे परीक्षोत्तीर्ण होगा और यही हुआ भी।

दूसरेही दिन नेलसन जमाइका (Jamaica) जानेवाली लो स्टाफ़ (Low Staff) महायुद्ध-नौका पर सहकारी लेफ्टिनैण्ट नियत हुआ।

इन दिनों अमेरिकन (American) लोगोंका हौसला बढ़ा हुआ था। ये लोग फ्रेञ्चों (French) से मिलकर इङ्गलैण्ड के वाणिज्यका ह्रास कर रहे थे। लो स्टाफ़ (Low Staff) ने नौका शत्रुके एक ऐसे जहाज़को एक मुठभेड़ में पकड़ लिया जिसे अमेरिका (American) सरकारकी ओर से लेटर आँव मार्क * (Letter of Marque) मिला था। इस समय वायु भयानक तूफान होकर बहने लगी, समुद्र उबलने लगा। कप्ताननें ऐसे समयमें पहिले लेफ्टिनैण्टको

*"लेटर आँव मार्क" एक ऐसा आज्ञापत्र है जिसे किसी देशकी सरकार अपने लुटेरे नाविकों को देती है और प्रतिज्ञा करती है कि शत्रु दल के लूटनेमें उनकी नौकायें यदि नष्ट हो जायें, तो सरकारी खजानेसे उनकी क्षति पूर्त्ति की जायगी।

प्रभोकी जीती हुई शत्रुकी नौका पर जानेकी आज्ञा दी। लेफटिनेण्ट अपनेको अस्त्र शस्त्रसे सज्जित करनेको नीचे उतरा, परन्तु विलम्ब करनेके कारण लोगोंने इसको भयभीत होकर छिप गया समझा। कप्तानको जब खबर मिली, उसने नौका-पृष्ठ पर आकर देखा तो विजित शत्रु-नौकाको निकट हो उभ-चुभ करते पाया। नौकाके जल-मग्न हो जानेके भयसे व्यग्र होकर कप्तान चिल्ला उठा, 'क्यो आज हमारी नौका वीर शून्य होगयी। क्या कोई वीर शत्रु-नौका पर चढकर उसे अपना नहीं सकता?' हमारे चरित्रनायकको ऐसा ताना कब सह्य हो सकता था? परन्तु हठात् आगे बढना उचित न समझा। इतनेमें नेलसनके सहकारी लेफ्टिनेण्टने शत्रु-नौकापर जाने की इच्छा प्रगट की, परन्तु चरित्रनायक उसे पीछे खींच, सिंह की नाईं कुलाँचे मार, डोंगीपर गया और बोला, "भाई! तुमसे पहिले यह हमारी बारी है, परन्तु यदि मैं विफल लौट आया तो वह तुम्हारी होगी।" शत्रुकी नौका भारी बोझके कारण प्रायः जल-मग्न थी, परन्तु नेलसन इसकी पर्वाह न कर जहाजपर चढ गया और बहुत सा जल नौकासे निकाल कर उसे बन्दी कर लिया।

कालकी कराल गति क्या कभी फेरे फिरती है? लाखों उद्योग, करोडों परिश्रम, मृत्युके निर्दिष्ट समयमें हेर फेर करने को करो, परन्तु मनोरथ सफल कभी होनेका नहीं। नेलसन की उन्नत अवस्था देखना कप्तान सकलिङ्गको बदा न था। इसी

समय उनकी मृत्युका दुःसमाचार नेलसनको मिला, परन्तु कर्म की रेखमें मेख कौन मार सकता है, यह विचार कर चरित्र-नायकने सन्तोष किया।

नेलसन अपने प्रधान कप्तान लॉकर(Locker) का अत्यन्त कृपा-भाजन हो गया था। उसके उद्योगसे यह ब्रिटिश फ्लैग-शिप (British Flag Ship) पर नौकरी पा सका। लेफ्टिनेण्ट कौलिङ्गउड (Collingwood) चरित्र नायकका हृदयङ्गम मित्र, उसके स्थानमें नोस्टाफ पर बहाल हुआ। हम लोग देखेंगे, कि जब कभी नेलसनकी पदोन्नति होती थी उसके अन्तरङ्ग मित्रकी उन्नति भी अवश्यम्भावी थी, क्योंकि बड़े अध्यक्षके ये दोनों जने कृपापात्र थे।

नेलसन शीघ्र ही प्रथम लेफटिनेण्ट हो गया और आठ दिसम्बर १७७८ को बैजरब्रिग (Badger Brig) नौकापर सेनाध्यक्षका पद सुशोभित करने लगा। नेलसनकी प्रत्युत्पन्न बुद्धि तथा इसके असीम बुद्धि चातुर्य्यको देखकर मन मुग्ध हो जाता था।

जिस समय बैजर (Badger) जमैका के मोन्टेग (Montague) की खाड़ी में लङ्गर डाले हुए था, निकटवर्त्ती एक जहाजमें अग्नि लग गई। अग्निने भयानक रूप धर लिया। करीब दो घण्टोंमें जहाज धायँ धायँकर जल गया। नेलसनने भावी दुर्घटनाकी आशङ्कासे अपने जहाज परके गोलि बारूद को नौका पृष्ठ पर फिंकवा दिया और तोपोंका मुख ऊँचा

कर दिया। अपने उद्योगसे नेलसनने सैकड़ों बल्कि हज़ारों मनुष्योंकी प्राण-रक्षा की। ११ जून सन् १७७८ में नेलसन लोस्टाफ़ (Low Staff) परसे बदल कर हैनचिनब्रूक (Hainchin brook) का कमान नियत हुआ। इसी समय लोस्टाफ (Low Staff), जिस पर नेलसन पूर्वमें था, एक जहाजी बेड़ेके साथ एक अमेरिकन (American) क़िले पर धावा कर विजयी हुआ। जीतकी लूटमें प्रत्येक नाविकने बहुत धन प्राप्त किया। यह समाचार जब उन्नत-हृदय उदार नेलसनने सुना, तब वह साधारण प्रकृति-विरुद्ध ऐसे सुकार्य्यमें अपनी परोक्षतापर कदापि दुःख प्रकाशकर उद्विग्न न हुआ।



तीसरा परिच्छेद।

जीवन प्रभात।

जीवन का ब्राह्म मुहूर्त बीत गया। भविष्य देदीप्यमान जीवनके आगमन सूचक अरुणोदयकी लालीके दर्शनमात्र से ही लोगोंने कहा, यह जीवन-प्रभात हुआ।

यवनिकाके पीछे नटोंने धुंधली ज्योतिमे यद्यपि मनोहारी दृश्य दिखलाया, परन्तु मन न भाया। कुछ कालके निमित्त पटाक्षेप हो गया। सहसा घण्टा बजी। नाट्यशाला की ज्योति पूर्ण दीप्त हो उठी। यवनिका उठने लगी। लालायित दर्शकोंकी दृष्टि तत्काल नवरञ्जित दृश्योंपर पडी, आनन्दित हो बोल उठे, "बस ठीक है। यह नायकका जीवन-प्रभात हुआ।"

पीले पत्ते वृक्षोंसे झड गये। कोमल मुकुलित कोपलें निकल पड़ीं, परन्तु किसीने दृष्टि-क्षेप नहीं की। अब मुखचन्द्र पल्लवोंके प्रफुल्लित होते ही कोकिल, पिक, सारिकोंने वृक्षके जीवन-प्रभात पर बधाई दी।

बाल्यकालकी बाल्य-क्रीडा अब अन्तिम रात्रिका स्वप्न हुई, अब यौवनका पदार्पण हुआ। मूँछोंकी अस्पष्ट रेखा पूर्ण-मयङ्कमें काली छायाकी नाईं स्पष्ट हो गई। शरीर पर यौवन, बल और कान्तिकी वृद्धि हुई। तब हमलोग अपने चरित्रनायक के जीवन-प्रभात पर क्यों न बधाई देवें?

पाठक! अब हमारे चरित्रनायकका इक्कीसवाँ वर्ष शुरू हुआ। यौवनके विकाशके साथ ही साथ जीवनमें उल्लासकी भी वृद्धि होने लगी। वर्षोंके एक से इक्कीस होते ही, नेलसनका पद भी उत्तरोत्तर एक से इक्कीस होने लगा। वीर युवक अब कर्णधार नेलसन नहीं वरन् कप्तान नेलसन है। नाव्य-जीवन की कुल ख्यातियाँ और प्रतिष्ठायें अब इसके हस्त-प्राप्य हो चली हैं। यद्यपि अभी तक कोई सावकाश उत्कर्ष प्रतिष्ठा लाभ करनेका नेलसनको प्राप्त नहीं हुआ है, तथापि वह अपने व्यवसायमें पूर्ण दक्ष हो गया है और परिचित संसारमें इसके गुण गौरव और उत्साहका वर्णन बड़ी धूम से होने लगा है।

एकदिन एकाएक खबर मिली, कि स्पेन-सेनापति सवा सौ जहाज़ों के बेड़े और पचीस सहस्र उद्भट सेनाओंके सङ्ग जमाइका (Jamaica) टीपपर आक्रमण करनेको बढ़े जाते हैं। नेलसनने इस सुअवसरको हाथसे जाने देना उचित न समझा। शीघ्र ही उद्योग कर, पोर्ट रायल (Port Royal) के फोर्ट चार्ल्स नामक क़िलेके तोपख़ानेका

पर्य्यावेक्षक नियत हो गया। केवल सात सहस्र सेना इकट्ठी हो सकी। पाठक विचार करें, कि केवल सात सहस्र सेनाओंसे पचीस सहस्र सेनाओंका सामना करना कैसा दुःसाध्य है, परन्तु नेलसन इस बातसे किञ्चित भी संकुचित नहीं हुआ।

विचार यह ठीक हुआ, कि उत्तरीय तथा दक्षिणीय स्पेन प्रदेशोंके बीचमें बैठकर उनके सङ्गम का विच्छेद करना चाहिये।

१७८० ई० के शुरू में, नेलसनके आधीन पाँच सौ मनुष्य नियोजित कार्य्य करनेके लिये ग्रेसिअस† (Gracias) अन्तरीप को चले। वहाँ पहुँचनेपर उन लोगोंने भयभीत ग्रामवासियों को सन्तुष्ट कर अपना सहचर बना लिया। स्थान २ पर ठह-रता, अपने सहायक इण्डियनों (Indians) को एकत्रित क-रता हुआ, २४ मार्च को यह छोटा सैन्यदल सेनजुवन नदी (R. Sanjuan) पर पहुँच गया। इसी नदी पर सेनजुवनका क़िला (Sanjuan Fort) दृढ भावसे खड़ा है। इसका ही विजय करना मानो अपेक्षित युक्तिमें कृतकार्य्य होना है।

यहाँ से ही नेलसनको लौट आनेकी आज्ञा थी, परन्तु कोई ऐसा योग्य पुरुष सेनामें नहीं था, जो मार्गसे अवगत हो। अतः नेलसनने ऐसे समय पर छोड़ कर लौट जाना उचित नहीं समझा। क़रीब २०० सैन्य जल मार्ग से रवाना हुई। नदी में जल प्रायः सूख गया था। बड़ी २

† यह अन्तरीप अमेरिकाके Mosquito Coast नामक [illegible] निकट है

कठिनाइयोंसे नौका चलाई जाती थी। सैनिकों को अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पडता था। दिनमें कडी धूप और रातमें ओससे ये व्याकुल हो जाते थे।

८ एप्रिल को चरित्रनायक ससैन्य सैनबोर्टोलोमिओ (San Bortolomeo) के द्वीपमें पहुँचा। यह स्थान स्पेन वालों का एक छोटा मोर्चा था। यहाँ केवल १६ या १७ प्रहरियोंके रहनेका स्थान था।

वीर नेलसन अपने नाविकोंके साथ किनारे पर कूद पडा, परन्तु स्थान बिल्कुल दलदल था। बडी कठिनाइयोंसे नङ्गे पैर ये लोग किले पर चढ धाये और तोपों पर स्वत्व जमा लिया।

इस स्थानसे १६ मील पूर्व ओर सैनजुवन (Sanjuan) का दुर्ग था। रास्ता अत्यन्त विकट और दुर्गम था। आठ कोस तक बराबर भयानक जङ्गल ही जङ्गल था, ठौर ठौर पर कुञ्ज ऐसे दुष्पार बन गये थे कि मनुष्य क्या पक्षियोंका भी फटकना असम्भव प्रतीत होता था। नेलसन इन कठिनाइयों को कुछ भी ध्यानमें न लाकर, जङ्गल काटता छाँटता घँसने लगा।

एक दिन एक सैनिक के नेत्रमें एक ऐसे विषैले सर्पने काटा कि कुछ ही कालमें बिचारा चल बसा। घण्टे भरके बाद लोगोंने जो देखा तो विषकी गर्मीसे सैनिक का सारा शरीर सड गया था। चरित्रनायक भी एक दिन बडे भाग्य

से एक भयानक दुर्घटना से बचा। एक रात्रि को वह बिस्तरे पर वृक्षके नीचे सोया था, कि मुख पर एक कीड़ेके रेंगनेसे एकाएक उसकी नींद खुली। वह घबड़ा कर जो उठा तो पैरके नीचे एक बड़े विषैले अज़दहे को बैठा पाया। अज़दहा मारा गया और वह साफ बच गया।

भला अदृश्य को तो इसके हाथसे संसारके अनेक कार्य्यों को सिद्ध कराना अभीष्ट था। युद्ध-क्षेत्रमें विजयोल्लास-पूर्ण हृदयके साथ इसकी वीर मृत्यु-शय्या बननेवाली थी, तो फिर अज़दहे के विषसे इसके प्राण जायँ तो क्योंकर?

दूसरा उदाहरण चरित्र नायक पर अदृष्टकी कृपा का सुनिये। एक दिन नेलसन प्यासा होकर जलकी खोज में इधर उधर भटकता फिरता था, इतनेमें इसकी दृष्टि सुदूर एक निर्मल झरने पर पड़ी। वहाँ जाकर इसने भर पेट जल पी लिया। जल एक प्रकार के विषैले पौधेके संसर्ग से दूषित हो गया था। जलके विषसे इसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव तो अवश्य पड़ा, परन्तु उसकी गरल-शक्ति इसे मार न सकी।

११वीं तारीखको,बोरटोलोमिओ (Bortolomeo) लेनेके दो दिन बाद, हमलोगोंका वीर सैन्यदल सैनजुवन (Sanjuan) क़िले पर घेरा बाँध कर बैठ गया। नेलसनकी निर्भीक सम्मति तो क़िले पर चढ़ जाने और लड़कर विजय प्राप्त करने की थी, परन्तु बिना प्रधान सेनाध्यक्षकी आज्ञा के ऐसा कठिन

कार्य्य कब हो सकता था। अस्तु। दस दिन इसी सोच विचारमें बीत गये। दुर्ग का जीत लेना कुछ ऐसा कठिन कार्य्य न था। परन्तु भूमि असम होनेके कारण कठोर परिश्रम अपेक्षित था। २४ तारीखको नेलसन की वीरता और सैनिकों की सहिष्णुता से दुर्ग विजय हो गया।

इस समय सैनिकों में भयानक रूप से महामारी का प्रकोप हुआ। इतने मनुष्य मरे कि निकटवर्ती नदियाँ मृतकों से भर गईं। दो सौ मनुष्यों में से इसके तो केवल १० ही जीवित लौटे। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके भी दैवसे यह सैन्य-समूह पराभव हो ही गया। नेलसन भी अछूता न बचा। कुछ दिनोंके बाद यह भी आमातिसार द्वारा भयानक रूपसे पीड़ित हुआ। शीघ्र ही यह जमैका द्वीपमें लौट आया और जैनस (Janus) जहाज़ का कप्तान नियत हुआ; परन्तु भूत दुर्घटनासे इसका स्वास्थ्य अत्यन्त बिगड़ गया था, अतः अपने कामपर न जाकर शीघ्र ही छुट्टी लेकर स्वदेश लौट आया। रोगने और भी भयानक रूप धारण किया। जलवायु बदलनेको जब यह बाथ (Bath) शहरमें जा रहा था, मार्ग में हिलना डोलना कठिन हो गया था। रह २ कर यह व्यथासे चीत्कार कर उठता था।

तीन मासमें परमेश्वरकी कृपासे यह पुनः चङ्गा हो गया और लण्डन (London) आकर इसने पुनः वृत्तिके निमित्त

निवेदन-पत्र भेजा। चार मासके बाद अलबरमेल (Alburmail) जहाज़ पर यह कप्तान नियत हुआ।

नेलसन का स्वास्थ्य अभी तक एकदम अच्छा नहीं हुआ था। जिस समय वह अपने जहाज़की यात्राके निमित्त ठीक कर रहा था पुनः बीमार पड़ गया। अब की बार उसने छुट्टी नहीं ली, बल्कि शीतकाल उत्तरीय समुद्रमें ही बिताया।

बड़ी कर्कशतासे उसने इन दुःखों का वर्णन किया है जिससे साफ़ झलकता है कि नाविकोंके साथ असद् तथा क्रूर व्यवहार से वह कितना क्रोधित रहता था।

इस उत्तरीय समुद्र की यात्रा से नेलसन को डेन्मार्क (Denmark) के कूलों और खाड़ियों का ज्ञान पूरे तौर से प्राप्त हो गया था। यह अनुभव आगे के दिनोंमें इङ्गलैण्ड (England) के लिये अत्यन्त लाभदायक हुआ।

नेलसनका अलबरमेल (Alburmail) जहाज़ उत्तम नहीं था। स्वदेश लौटने पर उसको जहाज की अनेक त्रुटियोंकी पूर्त्ति करनी पड़ी।

एक दिन जब उसकी नौका डौन (Dawn) अन्तरीप में लङ्गर डाले हुई थी, वह किनारे पर बड़े अफ़सर से बातें करनेको उतरा, इतनेमें एक ऐसा भयानक तूफ़ान आया कि नौका-समूह लङ्गर उखाड़ २ कर इधर उधर छितर बितर हो गया। अलबरमेल (Alburmail) का एक कोष-यान भी इस दुर्घटना से खिंचकर निकल गया। नेलसन भयभीत

हुआ, कहीं यह बालुकामयी कूलोंमें न जा भटके। हठात् वह कूल पर दौड़ गया। बड़े २ निपुण नाविकोंकी बुद्धि नौका-पृष्ट पर चढ़नेमें चकराने लगी। कुछ वीर उस नौकाके रोकने का परिश्रम करने लगे। परन्तु वीरवर नेलसनका साहस देख कर सब अवाक् रह गये। वह कूद कर समुद्र के उफानसे कूदते हुए नौका-पृष्ट पर चढ़ ही तो गया। कोषयान नेलसनके असीम साहस के द्वारा जलमग्न होने से बच गया।

चरित्र-नायक को अब क्यूबेक (Qubec) जाने की आज्ञा मिली। यद्यपि इसके मित्रोंने और डाक्टरोंने इसको इस यात्रामें जानेसे मना किया, परन्तु उसने भूतपूर्व एड-मिरल सैण्डविच (Admiral Sandwich) की आज्ञा को उनके उत्तराधिकारी कैपेल (Chapel) साहब से रद्द करवाना उचित नहीं समझा और कनाडा (Canada) को प्रस्थान कर दिया।

नेलसन बड़ा ही सदय था। वह दूसरों पर दया दिखानेमें त्रुटि करना नहीं जानता था। कनाडा(Canada) की यात्रा में अलबरमेल (Alburmail) जहाज़ने एक मछली मारनेवाली नौकाको पकड़ा। इसमें नौकाके स्वामी की कुल कमाई लदी हुई थी। नाविकने कहा, "महाशय! मेरा एक बहुत बड़ा परिवार घर पर उत्सुकता से हमारे प्रत्यागमन की बाट जोहता होगा, कृपाकर मुझे बन्दी न कर दया

दिखालावें" । यह सुनकर उदारचित्त नेलसनने जहाज को केवल छोड़ ही नहीं दिया, वरन् एक प्रशंसापत्र अपने हाथसे लिखकर दे दिया; जिससे बीचमें कोई जहाज़ उस नौकासे अधिक छेड़छाड़ न कर सके ।

यह हस्त-लिखित पत्र आज तक बोस्टन (Boston) में रक्षित रहकर, हमारे चरित्रनायककी असीम दयालुता, कोमलता तथा उदारताका परिचय संसारको दे रहा है ।

बोस्टन (Boston) बन्दरसे पार होनेके समय चार फ्रेञ्च जहाज़ोंने अलबरमेल (Albumail) पर धावा किया, परन्तु नेलसनने अपनी नाव्य-विज्ञता पर विश्वास कर बालुकामयी कूलोंपर जहाज़ोंको खैंचकर फ्रेञ्च नाविकोंकी आँखोंमें ऐसी धूल झोंकी, कि वे अपना सा मुँह लिये लौट गये ।

इस समय की एक घटना विशेष द्रष्टव्य है । बोस्टन ही में नेलसन एक अयोग्य विवाह-बन्धन करनेपर कटिबद्ध हुआ ; परन्तु अपने एक मित्र अलखजन्डर डेरीसन (Alexander Darison) के विशेष अनुरोधसे ऐसा न कर पाया ; नहीं तो आज चरित्रनायक का जीवन विषम और विषमय हो जाता ।

जहाज अलबरमेल (Alburmail) को एक न्यूयार्क (New York)जानेवाले देश-निकासित बेड़ेका भार दिया गया था । सेण्डीहुक (Sandy Hook) पहुँचने पर नेलसनने प्रधान एडमिरल (Admiral) डिगवी (Digwi) से भेंट

की। डिगवी (Digwi) नेलसन पर अत्यन्त कृपा दृष्टि रखता था।

एक रोज डिगवी (Digwi) ने कहा, "मित्र! तुम्हारी नूतन स्थिति तो अत्यन्त लाभदायिनी है।" नेलसनने उत्तर दिया, "ठीक है, महाशय! परन्तु वेस्ट इण्डीज़ (West Indies) बड़ा गौरवदायक स्थान था।"

चरित्रनायककी व्यवहारदक्षता अब लोगों पर खूब विदित हो चुकी थी। एक दिन लार्ड हुड, सक्लिङ्ग (Suckling) के एक अन्तरङ्ग मित्रने राजकुमार विलियम हेनरी(William Henry)से नेलसनका परिचय कराया। उन्होंने कहा, 'यदि कुमार गूढ़ नाव्य-विषयपर कुछ पूछनेकी इच्छा रखते हों तो इस युवकसे पूछें। नेलसनको छोड़कर और कोई कप्तान इस विषयकी पूरी व्यवस्था नहीं कर सकता।'

उस समयसे राजकुमार नेलसनको अत्यन्त प्यार करने लगे और नेलसनकी सुन्दरता तथा गुणज्ञताका बखान बड़े प्रेमसे करते थे। जब कभी नेलसन उत्साहसे नाव्य-विषयों पर इनसे बातें करता तो यही ज्ञात होता था कि, नेलसनकी विचक्षण बुद्धिकी समता दूसरा कोई नहीं कर सकता है।

पाठक! जगत्‌के अनेक मनुष्योंका नाम बड़ा हुआ है; अनेकोंने विशद ख्याति प्राप्ति की है। ऐसे बहुत अल्प मनुष्य देखे जाते हैं, जिनमें गुणोंका पूरा समूह विद्यमान हो। परन्तु हमलोगों का चरित्रनायक एक ऐसा ही सर्व-गुण-सम्पन्न कर्मवीर था।

ऐसा देखा जाता है, कि जिन मनुष्योंको विशेष ख्यातिकी अभिरुचि होती है,वे अपने ही को सर्वश्रेष्ठ मानते और अपने मित्रों तथा आधीनोंकी गुण-प्रशंसा कदापि नहीं करते, परन्तु हमारी सम्मतिमें वे नराधम हैं।

विज्ञ पाठक! नेलसन एक आदर्श पुरुष था। इसके सर्वगुणोंमें गुणग्राहिताका अनमोल गुण प्रशंसनीय था। यदि नीचेसे नीचा सिपाही भी नेलसनकी दृष्टिमें कोई विशेष-गुण-सम्पन्न बोध होता तो बिना उसकी बड़ाई किये वह कदापि नहीं रहता।

नेलसनको अलबरमेल (Alburmail) पर की न्यूयार्क (NewYork)वाली यात्रामें ऐसा अनुमान होता था कि, बाहमा (Bahma) के रास्ते पर फ्रेञ्च लोगों का सामना अवश्य करना पड़ेगा। लार्ड हुड (Lord Hood) ने इस पर विचार करते हुए एकदिन नेलसनसे कहा,"महाशय! मैं अनुमान करता हूँ कि बाहमा (Bahma) के मार्ग पर अनेक बार आने जानेसे आपको मार्गका अच्छा ज्ञान होगा।" नेलसनने गम्भीर भावसे उत्तर दिया, "यह ठीक है कि मै मार्गसे पूरा परिचित अवश्य हूँ; परन्तु मेरा सहकारी लेफ्टिनेण्ट (Lieutenant) इस विषयमें मुझसे कहीं बढ़ा चढ़ा है।" पाठक! इसका नाम सच्ची गुणग्राहिता है।

फ्रेञ्च लोग केबोलो के नौकाश्रय में धँस बैठे थे। नेलसन अपने जहाज़ पर फ्रेञ्च झण्डा लगाकर 'केबोलो'

और 'लाग्य्‌ आरा' के बीच टोह लगा रहा था। इतनेमें एक 'स्पेन' का जहाज़ उधर से आ निकला। इस समय स्पेनवाले फ्रेञ्चोंकी सहायता कर रहे थे। नेलसनके जहाज़ ने फ्रेञ्च भाषामें उसे पुकारा। स्पेनवालों को इसके अंगरेज़ी जहाज़ होनेका स्वप्नमें भी अनुमान न था। बात ही बात में नेलसन ने शत्रुओंकी सैन्य और जहाज़ोंकी संख्या मालूम कर ली। सब बातें मालूम होने पर 'स्पेन' की यह नौका फ़ौरन बन्दी कर ली गयी।

उस जीते हुए जहाज़ पर 'जरमन' सम्राट्‌का एक राजकुमार प्राकृतिक इतिहास (Natural History) के नमूने ढूँढ़ने वाले अपने अनेक वैज्ञानिक फ्रेञ्च मित्रोंके साथ पकड़ा गया।

नेलसनने उनके आदर सत्कारमें कुछ त्रुटि न की। बड़ी आवभगतसे उनको अपने साथ खिला पिला कर, उन्हें डोंगियों पर स्वच्छन्दता से विचरनेकी आज्ञा दे दी। परन्तु उनसे एक पत्र लिखवा लिया कि, यदि प्रधान सेनाध्यक्ष हमारे इस प्रस्तावको स्वीकार न करेंगे तो इन लोगोंको स्वयम्‌ बिना आपत्तिके बन्दी करा देना होगा।

रास्ते ही में नेलसनको समाचार मिला कि शत्रु राज्यसे सन्धि स्थापन हो गई। नेलसन शीघ्र ही 'अलबरमेल' (Alburmail) पर स्वदेश लौट आया। नेलसनका पहिला कार्य्य स्वदेश लौट आनेपर यह हुआ, कि उसने अपने स्वजनोंसे

मिलनेके पहिले अपने नाविकोंका बाकी वेतन दिलवा दिया। नेलसन अपने इन कार्य्यों से नाविक-संसारमें सर्व-प्रिय हो गया। नेलसनको राज्यदरबारमें जानेका यह पहला सुअवसर प्राप्त हुआ। दरबारके नियमित संस्कार समाप्त होने पर उसने अपने मित्रके सङ्ग भोजन किया। अपना लोहवर्म उतार कर, आज नेलसन सुखपूर्व्वक मामूली वस्त्र पहिन कर मित्रोंसे मिलता फिरा। शेष दिन हँसी खुशीमें कटे। नेलसन प्रतिदिन अपनी नीति कहानी अपने परिजन वर्गों को सुना प्रमुदित करता था।

पाठक! नायक का सचमुच ही जीवन-प्रभात हुआ।



चौथा परिच्छेद ।

परदेश यात्रा और विवाह ।

जीवनमें यदि सदा ही सुख होता तो, सुखकी मर्य्यादा नहीं रहती। नेत्र यदि सदा ही प्रिय-दर्शक होते तो, प्रेमका नेम ढीला पड़ जाता। जिह्वा यदि सदा ही मधुरास्वादक होती तो, मधु कटु प्रतीत न होने लगता। प्रकृति इन्हीं कारणों से अपने साम्राज्यमें सदा परिवर्त्तन करती रहती है।

नेलसनको दिनरातकी समुद्रकी कान फाड़नेवाली लहरों तथा समर-कलकलोंसे कुछ दिनोंके लिये शान्ति मिली है। अब वह गार्हस्थ्य जीवनकी शान्तिकी ओर कुछेक आकर्षित हुआ है। अब उसे परिवारके मध्यमें रहने का कुछेक सुख अनुभव होने लगा है।

नेलसन अपने एक पत्रमें लिखता है, "समरका तो अन्त हो गया, परन्तु मेरी निर्धनताका अन्त नहीं हुआ। तोभी हृदयसे मैं जितना प्रणय और सच्चे सम्मानका भूखा हूँ; उतना

नश्वर धनका कदापि नहीं हो सकता।" नेलसन अपने समयका सदुपयोग करनेके लिये फ्रांसको कप्तान मेकिनमरा (Macanmara) के सङ्ग रवाना हुआ; परन्तु भाग्य पुनः इसे स्वदेश खेंच लाया। इसकी प्रिय बहिन ऐनी (Anne) की अकाल मृत्युसे पिता अत्यन्त दुःखी हो गये हैं, यह सुनते ही वह स्वदेश लौट कर पिताको सांत्वना देनेके लिये उनके साथ रहने लगा।

दुःख शोक तथा प्रिय-मित्र-वियोगकी अग्नि यदि मनुष्यके हृदयमें एक सी कुछ दिन भी रहती, तो संसारमें स्वास्थ्य और सुख स्वप्न हो जाते। परन्तु विषोंके लिये संसारमें प्रतिविष भी हैं। समय, विवेचना तथा धर्म ही भयानक शोकाग्निके लिये विषघ्न जल हैं। मनमें शोककी मात्रा ज्योंही बढ़ने लगती है त्योंही इनका प्रादुर्भाव होता है और शनैः शनैः इन-का ह्रास भी हो जाता है।

नेलसनके पिता भी अब स्वस्थचित्त हो चले। पिताको ढाढ़स बँधा देख, नेलसन पुनः फ्रांस लौट आया और एक अँगरेज़ पादरीकी कन्याके साथ विवाह करनेका उद्योग करने लगा। परन्तु अपनी आर्थिक दशाकी हीनताके कारण उसने अपनी इच्छा पर बलात्कार विजय प्राप्त की। यदि चरित्र-नायक चाहता तो व्याहकर अल्प वेतनमें ही दुःखसे निर्वाह कर सकता था, परन्तु उसे अपने कष्टोंमें एक निरपराधिनी स्त्री को संगिनी बनाना सरासर अपनी सत्यवृत्तिके प्रतिकूल बोध

हुआ, बस शीघ्रही वह प्रेमपाश तोड़, फ्रान्स छोड स्वदेश लौट आया।

पाठकवृन्द! यदि भारतके नवयुवक इस प्रकारका आत्म-संयम सीखें, तो क्या भारतको इस बढ़ी चढ़ी दरिद्रताके कम हो जानेकी आशा नहीं है? प्रतिदिन भारतकी असंख्य जन-संख्या बढ़ाने वाले 'अपुत्रस्यगतिर्नास्ति'के दमामा बजानेवाले माता पिता अपने अकर्मण्य दस या बारह वर्षके पुत्रोंका व्याह न करके उनके वीर्य्य बल तथा भावी सुखकी रक्षा करते तो पुनः भारतकी क्या कुछ उन्नति नहीं होती?

इस प्रकार अपनी इच्छाओं पर विजय पानेके लिये तथा फ्रान्ससे हट जानेकी इच्छासे, वीर नेलसन अपने एडमिरलसे मिला और "बोरियस" (Boreas) जहाज़ पर नियुक्त हो, लीवार्ड द्वीपकी सेनाका रक्षक होकर चला। इसके जहाज़पर कोई तीस युवक मिडशिपमैन (Midshipman) थे। ये लोग ऐसे सदय तथा सुहृदय अध्यक्षकी आधीनतामें सदा ही प्रसन्न रहते थे। नेलसनका भी इनके साथ अत्यन्त सुष्टु व्यवहार था। यदि कोई युवक नाव्य-जीवनसे भयभीत दीख पड़ता था तो यह उसे बड़े प्रेम भावसे कहने लगता, 'युवक मित्र! मैं मस्तूलके सबसे ऊँचे भागपर चढ़ने जाता हूँ, क्या तुम भी मेरे साथ चलोगे?' प्रेम-भावसे वा आज्ञा उल्लङ्घनके भयसे कोई इंकार नहीं कर सकता था। जब दोनों जने ऊपर मिलते तो यह युवकको बधाई देता हुआ उपदेश देता था,

कि क्या वह मनुष्य जो मस्तूल पर चढ़ना कठिन और भया-नक बताता है, मूर्ख नहीं है ?

प्रतिदिन यह नाव्य-विद्यालयोंमें आकर उनकी पढ़ाईकी आलोचना करता था। जब कभी यह किसी गवर्नर या भारी पदाधिकारीके यहाँ बुलाहटमें भोजन करने जाता तो एक अपने युवक मिडशिपमैन (Midshipman) को अवश्य ले जाता था और अपने निमन्त्रकसे क्षमा माँगता हुआ उदारचित्तसे कहता था, कि महाशय! मैं अपने साथ एक मिडशिपमैन (Midshipman) को लाया हूँ, मेरा यह विचार रहता है, कि यथाशक्य मैं इनको उत्तमसे उत्तम संगतिमें रखूँ ; क्योंकि जहाज़ पर मेरे अतिरिक्त और कौन इनका शुभेच्छु हो सकता है ?

वेस्ट इण्डीज़ (West Indies) पहुँचने पर नेलसनने अपनेको अन्य अफ़सरोंसे अधिकारमें ज्येष्ठ पाया। नेलसन जहाज़के नियमोंसे पूरा अभिज्ञ था। एक दिन इसने ले-टौना (Latona) जहाज़ पर, प्रधान अध्यक्ष की उपस्थिति सूचक झण्डा देखकर,पोर्ट कमिश्नर(Port Commissioner) से इसका कारण पूछा। उत्तरमें कमिश्नर मौन्ट्रे (Montray) साहबने एक पत्र प्रधान अध्यक्ष का भेजा, जिससे विदित हुआ कि झण्डा ऐडमिरलकी (Admiral) अनुपस्थित समयमें भी पोर्ट कमिश्नर (Port Commissioner)के जहाज़ पर लगाया जा सकता है। परन्तु नेलसन जिस विषयको

अन्त:करणसे नियम-विरुद्ध समझता था उसका खण्डन दृढ़ता से किये बिना कदापि नहीं रहता था। उसने शोघ्रही लेटोना (Latona) जहाज़के कप्तानको झण्डा उखाड़ कर रख देनेकी आज्ञा दे दी। अधिकार ज्येष्ठ तो था ही, आज्ञापालन हो गयी।

सन्ध्या समय इसने पोर्ट कमिश्नरके साथ बड़े प्रेमसे भोजन किया और बात ही बातमें इसने ही सबसे पहिले समाचार दिया कि झण्डा मैंने नियम-विरुद्ध लगानेके कारण उतरवा दिया है। चरित्र-नायकको मौण्ट्रे (Montray)के साथ भोजन कर, यह दिखलाना था कि कर्त्तव्य विचारसे भिन्न और किसी प्रकारका द्वेष मैं हृदयमें नहीं रखता।

मौण्ट्रेने इस विषयकी चिट्ठी प्रधान अध्यक्षको लिखी। वहाँ लोगोंने, अपनी भूल स्वीकार कर, नेलसनकी बातका समर्थन किया।

दूसरे समय भी इसने ऐसी प्रकारकी दृढ़ प्रत्युत्पन्नमति का उदाहरण दिया। एक दिन कुछ फ्रान्स देशके जहाज़ मौरिशस द्वीप (Mauritius) का नक्शा लेनेको मौरटेनि-को (Mortanico) से आये थे, परन्तु नेलसनने उनके काम में बाधा डालनेका विचार पहिले ही कर लिया था। फ्रेञ्च कप्तानसे मिलकर, इसने उनका बड़ा शिष्टाचार किया और कप्तानके मना करते रहने पर भी शिष्टताके बहाने उनका अनुकरण करनेका विचार प्रगट किया। इसने उन लोगोंको

एक मिनटके लिये भी नेवोंसे चोट नहीं होने दिया, यहां तक कि फ्रान्सवालों को बिना अपना काम किये ही लौट जाना पड़ा।

एक दूसरा उदाहरण और भी सुनिये। इस समय अमेरिकावाले इङ्गलैण्डके साथ व्यौपार करके अँगरेज़ी प्रजाओं के उन स्वत्वोंका उपभोग—जो अमेरिकावालोंको स्वाधीन होनेके पहिले थे—शासकोंकी आँखोंमें धूल झोंककर करते थे। परन्तु नेलसनको चट्टेबाज़ी दिखलाना ज़रा टेढ़ी खीर थी। नेलसनने चट इनकी धूर्त्तता देख ली और इनको रोकने का उपाय करने लगा। ब्रिटिश प्रजा इन धूर्त्त व्यापारियोंके कारण बड़े घाटेमें रहती थी।

एक दिन जब ऐसे कई जहाज़ बन्दरगाहमें आ लगे, तब नेलसनने प्रधान अध्यक्षसे मिलकर पूछा, कि हमलोगोंको क्या देशके व्यौपारकी ओर ध्यान देना नहीं चाहिये? क्या हमलोगोंकी सरकारके नेविगेशन ऐक्ट (Navigation Act) के प्रतिपालनका उद्योग नहीं करना चाहिये?

ये धूर्त्त व्यौपारीगण नित्यप्रति हमलोगों की प्रजाके व्यापारका ह्रास करते हैं, अतः इनको रोकना हमलोगोंका धर्म है।

प्रधान अध्यक्षने उत्तरमें कहा, कि Navigation Act की कुछ खबर मुझे नहीं है, न इन्हें रोकनेकी कोई आज्ञा ही है। नेलसनने पूर्वोक्त कानूनको दिखला कर अपने कथन का

समर्थन किया, और अभिलषित आज्ञा उसने ले ही कर छोड़ी।

मेजर जनरल सर टामस शरली (Major General Sir Thomas Shirly) साहब गवर्नर से भी इन बातों पर नेलसन का भारी वादविवाद हुआ। शरली साहब ने चिढ़ कर एक दिन कहा, "मैं तुम्हारे से छोकरों से गूढ़ विषय पर वादाविवाद करना नहीं चाहता।"

नेलसन तो अपने कर्म करने पर दृढ़ था, बोल उठा, "महाशय! इंगलैण्डके वर्त्तमान राजमन्त्री मेरी ही वयस के होने पर भी इतना बड़ा राज्यकार्य्य चला सकते हैं। विद्वत्ता में वयस की बहस नहीं होती। मैं अपने कार्य्य करने में वैसाही विज्ञ हूँ जैसा इंगलैण्डके प्रधान-मन्त्री अपने राजकार्य्य में।"

क्रीट (Crete) द्वीप में आकर व्यौपारी जहाजों को इस बात की घोषणा कर दी कि नेविगेशन ऐक्ट अब व्यवहार में लाया जायगा। अमेरिकन जहाज ने वहाँ से उस समय तो लङ्गर उठा अपना रास्ता लिया, परन्तु एक महीने के बाद लार्ड ह्यूग (Lord Huge), प्रधान अध्यक्ष, ने घोषणा की, कि यदि पोर्ट गवर्नर व्यौपारी जहाज़ो को आने देना चाहें तो ऐसा कर सकते है।

नेलसन अपने कर्म को खूब जानता था, तुरन्त प्रधान अध्यक्षके यहाँ उसने अपील की, कि मै इस नियम-विरुद्ध

आज्ञा का पालन नहीं कर सकता। एडमिरल पहली दफे तो बड़े क्रोधित हुए ; परन्तु फिर कुल बातों पर विचार कर नेलसनको उन्होंने बड़ी बड़ाई की तथा अपनी आज्ञा रद्द कर दी।

शुल्क स्थानों (Custom House) में विज्ञापित कर दिया गया, कि एक निर्दिष्ट समय के बाद से कुल परदेशी जहाज़ जो ब्रिटिश नौकाश्रयों में पाये जायँगे बन्दी कर लिये जायँगे। कुछ दिनों के बाद चार विदेशी जहाज़ नौकाश्रय में पाये गये और विज्ञापनके अनुसार उन लोगों को ४८ घण्टे में स्थान छोड़ देने की आज्ञा दी गई।

परन्तु नाविकोंने साफ इनकार किया और यहाँ तक झूठ बोले, कि हम लोग अमेरिकावासी नहीं हैं। पूछने पर इन लोगों ने, चरित्रनायकके जहाज़ पर, नाव्य विचारधीशों के सम्मुख अमेरिकन होना फिर स्वीकार किया। विचारधीश की आज्ञा से इनका सारा माल-मता ज़ब्त कर लिया गया।

अब तो टण्टा बढ़ा, विदेशियोंने चन्दा कर अपील की और साथही साथ कर्मवीर नेलसन पर ६ लाख रुपये की हानि का दावा किया। चरित्रनायक अपने जहाज़पर गिरफ़्तार हो जाने के भय से रहने लगे। इस समय चरित्रनायक की स्थिति किञ्चित दुःखप्रद थी। इस स्थिति पर शोक प्रकाश करते हुए नेलसनके एक साथीने कहा "महाशय आपकी अवस्था करुणाजनक अवश्य है।"

नेलसन के लिये 'करुणा' शब्द अत्यन्त ही घृणास्पद था।

आपने कहा, "करुणा! क्या यह करुणास्पद अवस्था है? महाशय! मैं जगत्-आदर्श हुआ चाहता हूँ और ऐसा होने के लिये मैं प्राण को भी अर्पण कर सकता हूँ।"

आठ सप्ताह तक चरित्रनायक इस प्रकार अपने जहाज पर निरुद्ध रहे। इस बीच में मामला नाट्य-न्यायाधीशों के हाथ में आ गया और आप उनकी रक्षामें जहाज से उतरे।

दुष्ट व्यापारियों ने चरित्रनायक को पुलिस के हाथ में देने का बड़ा प्रयत्न किया, परन्तु जजों के भय से वे ऐसा कर न सके। इस समय नेवी के मुख्य सभासद हर्बर्ट साहबने, असामान्य उदारता का परिचय दिया। आपने चरित्रनायक के १० हजार पौण्ड के ज़ामिन होकर उनको रक्षा की।

चरित्रनायक ने एक आवेदनपत्र इंगलैण्ड भेजा, जिस पर राज्य-व्यय से इनका पक्षसमर्थन करने की आज्ञा हुई। आपके आवेदनपत्र तथा कार्य्य-विषय के प्रस्ताव पर स्टेट सिकत्तर ने एक "रजिस्टर ऐक्ट" का विधान किया।

अपने प्रस्ताव का अनुमोदन तथा अपने कृतकार्य्य पर सरकारको सन्तोष प्रकट करते देख, आप अत्यन्त सन्तुष्ट हुए। परन्तु प्रधान अध्यक्ष को सरकार से देश की व्यापार-रक्षा पर धन्यवाद पाते देख भी आप जल उठे।

आप कहते हैं, "यदि अधिकारियों को कुल बातें मालूम होतीं, तो मुझको धन्यवाद न देकर, प्रधान अध्यक्ष को धन्यवाद कदापि नहीं देते। मुझे अत्यन्त वेदना होती है कि तन, मन,

धन देकर भी मैं अपने कृतकार्यों पर धन्यवाद न पा सका। मैं जितना दुःखी इस प्रकार तिरस्कृत होकर हुआ, उतना नौकरी छूटने से कदापि नहीं होता। या तो मैं नौकरी से छुड़ा ही दिया जाता या मुझे कुछ धन्यवाद ही मिलता। यदि मेरे सच्चे कर्म्म अनुष्ठान का यही बदला है, तो मैं अब सदा सावधान रहूँगा, जिसमें ऐसे कामोंमें अग्रसर कदापि न होऊँ, परन्तु मैं इतने ही से सन्तुष्ट हूँ कि मैं ने अपना कर्म किया है।"

सुविज्ञ पाठक! राज-नियम के दुःखप्रद अनिर्णयों से चरित्रनायक कैसे दुखी हुए थे, यह उनके पूर्वोक्त वचनों से साफ झलकता है।

रसिक पाठकवृन्द! आप लोगों के कोमल कलेजे पर चरित्रनायक के दुःखों को सुन कर अवश्य ही भारी धक्का पहुँचा होगा। अस्तु, आपके मन-विनोद का उपाय मुझे करना अत्यावश्यक है। अच्छा पाठकगण! अब आप लोग लेखक के निहोरे, उस चरित्रनायक की बारात में चलने की तैयारी कीजिये। मनोविनोदके साथ ही साथ Wedding Cake (ब्याहमिष्टान्न)से भी आपलोगोंका सत्कार किया जायगा। आप इस बारात में वेश्याओं के बेसुरेगान के साथ रसिकों की झूठी वाहवाही की तान यदि आप न सुने तो निमन्त्रक को, मुर्दादिल और कृपण न कह कर, क्षमा करेंगे। चरित्रनायक की दिगदिगन्त में फैली हुई कीर्त्ति और यश-गान तथा

देश-बन्धुओं को अन्तरात्मा से उत्पन्न सुरों के नक्कारखाने के सामने झूठी —मनगढ़न्त टप्पों की बेसुरतान को—तूती की आवाज़ सुनना उचित नहीं।

पाठक! क्षमा करेंगे, दूलह ऊँचे तामझाम पर चढ़ कर नहीं निकलेगा। अनियंत्रित बारात पारटी (Mis-managed Barat Party) कह कर निमंत्रक की मिट्टी पलीत न करें। क्या किया जाय, चरित्रनायक अपने स्वदेश-गौरव के उस चिरस्थायी उन्नत सिंहासन पर बैठ कर व्याह करने चला है जिस पर बैठे हुए को उतार कर ऊँचे तामझाम पर चढाना मानों नीचा दिखाना है।

नेलसनने अपनी ब्रह्मचर्य्यावस्था पूरी कर, अपनी युवावस्था के पराक्रम को प्रमाणित करते हुए सर्व्वश्रेष्ठ कहला कर, ११ मार्च १७८७ को, अपने उपकारक, मित्र हर्बर्ट साहबकी भतीजीका पाणिग्रहण किया। ऐसे सुअवसरमें, राजकुमार हेनरी भी उपस्थित थे और इन्होंने ही कन्यादान किया। पाठक! बड़ा आनन्द समारोह है, लेखक आपसे "जलवये शादी सरजाम मुबारक होवे" गद्‌गद्‌ हृदय से गाने का अनुरोध करता है।

चरित्रनायक की उदारता का वर्णन करते करते, यदि इन्हे कर्ण वा निष्काम भीष्म कह बैठें तो अत्युक्ति न होगी। एक समय हर्बर्ट साहबने, अपनी दुहिता से चिढ़कर, अपनी कुल सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी अपनी भतीजी चरित्र-

नायिका को बनाना चाहा। यह सम्पत्ति यदि नेलसन ले लेते तो इनको दरिद्रता क्षण भर में दूर हो जाती, परन्तु उन्नत-हृदय, उदार-चरित्र नायकने इस प्रकारसे प्राप्त परधनको मिट्टोके ढेलेके समान समझा। आपने अपने ससुरको ऐसा करने से रोका और बड़े उद्योगसे बाप बेटोके फटे दूध रूपो मनोमालिन्यको जमाया।

ब्याहके बादसे अनेक मूर्ख यह विश्वास करने लगे थे, कि चरित्रनायक अब अपने सुख सम्भोगमें मग्न होकर देश-कार्य्यसे हाथ खींच लेंगे, परन्तु यह एकदम मिथ्या विचार था। पाठकगण! नीचे उद्धृत कुछ लिखावटोंसे आप ही अनुमान कर सकेंगे, कि नेलसनने कितनी कर्त्तव्य-निष्ठा तथा कैसी प्रेम-लिप्सासे युक्त होकर अपनेको विवाह बन्धनमें नियोजित किया था। विवाहके कुछ दिन पहलेके पत्र देखिये:—

(१)

प्यारी!

हमलोग विलग तो अवश्य ही है, परन्तु यह वियोग हमारे प्रेमके अंशोंका प्रतिदिन संयोग ही करता जाता है। जगत् से स्वदेशका अधिकार मुझपर बहुत जियादः है। सार्वलौकिक कर्मके सम्मुख आत्मसुखका त्याग हो, मैं अपना धर्म्म समझता हूँ। कर्तव्य ही नाविकोंका मुख्य धर्म्म है। अस्तु.स्वकर्तव्यके निमित्त अनेक कष्टोंसे भी आत्मोल्लास पर विजय पाना सराहनीय है।

प्रेमजीवी

नेलसन।

(२)

प्यारी !

तुमने यह कहावत सुनी होगी कि, "समुद्रका खारा पानी तथा परोक्षता प्रेमको हृदयसे धो बहाते हैं" परन्तु मैं इस लकीरका फ़क़ीर नहीं हूँ। यद्यपि मैं प्रतिदिन छ:कुण्ड समुद्र-जलसे स्नान करताहूँ, यद्यपि मैं तुमसे बहुत दूर हूँ, तथापि तुम देखोगी कि तुम्हारा यह प्रेम-पिपासु निर्दिष्ट समयके कुछ दिन पहिले ही तुमसे आ मिलेगा।

प्रेमपिपासु

नेलसन।

(३)

प्रिये !

तुम्हारे पास पत्र लिखना, मानो तुम्हारी पत्री पानेके आनन्द से किञ्चित ही अल्पानन्दका अनुभव करना है। सच्चे हृदयो-द्गारसे पूरित तुम्हारी पत्री बाँचनेसे मेरी अन्तरावस्था कैसी होती है, यह अनिर्वचनीय है। मेरी लेखनी शक्तिहीना है। सुख जो पूछो, तो तुमसे वियोगमें सुख कहाँ ? तुम्हीं हमारी सर्वस्व हो, तुमसे रहित यह जनपूर्ण संसार मेरे लिये निर्जन कानन है, क्योंकि पूर्वसे ही मुझे इस संसारका अनु-भव है। यह क्लेश तथा उद्विग्नताका जन्मदाता है, वर्त्तमान में मेरा ऐसा विचार है और यदि ईश्वरने चाहा तो भविष्यमें

भी ऐसा ही रहेगा। प्रेम स्वयम्भू है, यह दबाव या स्वार्थका फल नहीं है।

तुम्हारा

नेलसन।

चरित्रनायक लीवर्ड द्वीपमें कुछ दिनों तक रहे। आपका प्रत्येक कार्य मानो देश-हितके लिये ही होता था। यहां पर आपने ठेकेदारो, पारितोषिक बांटनेवाले प्रतिनिधियों तथा अन्य नाव्य अधिकारियोंकी अनेक चारियां पकड़ी। आपने इस विषय में जो जांच की तो मालुम हुआ, कि इन दुष्टोंने क़रीब डेढ करोड रुपयेका धोखा सरकारको दिया है।

आपने इन हिसाबोंकी एक एक नक़ल प्रत्येक दफ्तरमें भेजी, परन्तु इन चोट्टोंकी ऐसी साख ऊपर भी जमी थी, कि इन लोगोंने इस विषयकी जांच ही नहीं बन्द करवा दी, बल्कि चरित्रनायक पर ही अनेक दोषारोपणकर प्रधान अध्यक्ष के कान भी भर दिये।

चरित्रनायक देश लौटनेके पहले, इन दुष्टोंकी करामातसे क़रीब क़रीब नौकरीसे अलग ही कर दिये गये थे। धन्य रे राज्य-न्याय !

नेलसनके बोरियस जहाज़के नाविकोंको छोड़ और कोई ऐसा नहीं था जो इस द्वीपकी दूषित वायुके कारण अस्वस्थ न रहता हो। चरित्रनायक अपने सहचरोंके स्वास्थ्य तथा मनो-

विनोदका पूरा ध्यान रखते थे। आप सदा हँसी दिल्लगीसे उनका मन प्रसन्न रखते थे ।

आज हमलोगोंके चरित्रनायक द्वीप छोड़कर देश लौटते है । आज आप अपने ज्येष्ठ अध्यक्षसे बात ही बातमें कह बैठे, "महाशय! मैंने इतने दिनोंकी नौकरीमें सरकारकी अगुणग्राहिता का परिचय पूरे तौरसे पा लिया । मेरी यह अन्तिम नौकरी है, अब मैं कदापि सरकारी नौकरी नहीं करनेका, देश लौटते ही मैं इस्तीफा दे दूँगा ।" कप्तानने ज्योंही इनका हृदयोद्गार सुना, त्योंही बिना इनसे कुछ कहे, एक चिट्ठी प्रधान अध्यक्षके यहाँ इस विषयकी भेजी , साथ ही यह भी लिखा कि यदि नेलसन स्थिति परित्याग कर देगा, तो ब्रिटिश राज्य आधारका एक बड़ा स्तम्भ टूट जायगा । चरित्रनायकने स्वदेश लौटने पर एक आज्ञापत्र पहले प्रधानाध्यक्षसे मिलनेका पाया ।

नेलसन देश लौटते ही बड़े सत्कारके साथ प्रधान अध्यक्षके यहाँ पहुँचाये गये तथा राज्य-आदरसे भी सत्कृत हुए ।

पुरानी बातें सब भूल गईं, चरित्रनायक अब पुनः प्रसन्न-चित्त रहने लगे ।

राजकुमार हेनरीको जो उपदेश आपने एक समय एक शत्रु पर कृपा करनेके लिये दिया था, सराहनीय है तथा इनके उन्नत हृदयका परिचय दे रहा है ।

राजकुमारके एक अपराध पर आपके नाव्य-शिक्षकने कोर्ट मार्शलकी प्रार्थना की थी। राजकुमार इस अभियोग से

माफ छूटे गये, परन्तु हृदयसे उस कप्तान पर क्रोधित हो गये।

नेलसन यह बात सुनकर एकदिन कुमारसे कहने लगे:—"राजकुमार! यदि मैं यह निवेदन करूँ, कि आप उस कप्तान की अवज्ञाको भूल जायँ तो क्या आप मुझे क्षमा करेंगे? राजकुमार! सुहृद्भावसे मैं यह उपदेश करता हूँ, कि आपको यदि फिर कभी उस कप्तानकी अध्यक्षतामें काम करनेका अवकाश हो तो आप अवश्य करें। इस क्षमाके द्वारा आप सर्वाग्रगण्य और लोक-प्रिय हो जायँगे। शक्ति पाकर ही क्षमा करना चाहिये। यद्यपि कप्तान ऐसा धृष्ट कार्य्य कर बैठा, परन्तु मैं यह हाँककर कहता हूँ, कि एक दोषसे मनुष्य खराब नहीं कहा जा सकता है, जगत्का कोई मनुष्य चरित्र त्रुटिसे बचा नहीं है। राजकुमार! मुझसे अधिक विद्वान और विज्ञ मित्र आपको अनेक मिलेंगे; परन्तु मेरे सदृश हितेच्छु मित्र मिलेगा कि नहीं, कह नहीं सकता। राजकुमार! मैं किसीके वश होकर ऐसा उपदेश नहीं करता; वरन् मेरी यही आन्तरिक इच्छा है कि आप इस देशके वास्तविक गौरव और जगत् के मान्य होवें।'

चरित्रनायक राज-मानपाकर "अहमेव सर्व्व" समझते हुए अकर्मण्य नहीं हो बैठे, बल्कि उन्होंने उन दुष्ट देश-द्रोही व्यापारियोंको दण्ड दिलाकर ही छोड़ा और भविष्यमें देशके असंख्य धन-भाण्डारकी रक्षाका उपाय कर दिया।

कर्मवीर नेलसन सदा कहते थे, "यद्यपि राज्य मेरा यथेष्ट मान नहीं करता, तथापि मैं इस कीर्त्तिके लिये अभी सब धक्के सहनेके लिये तैयार हूँ। मैं अपने देशके निमित्त नौकरी करनेसे, पहलेसे भी अधिक, दीन होगया हूँ।

परन्तु इससे क्या, इस समय भी वह आशा राक्षसी जो सच्चरितोंको प्रलुब्ध किया करती है मुझे विश्वास दिलाती है, कि यदि मैं स्वदेश-सेवाके लिये रूशिया वा किसी शत्रुसे सामना करनेको जाना चाहूँ, तो मैं अवश्य ही जा सकूँगा।

मै सदासे अकपट सैन्य धर्मका निबाहनेवाला हूँ। मैं अपने सुयशके लिये अकृतज्ञ देशकी दुःखप्रद नौकरी करनेमें कदापि नहीं हिचकता। वर्त्तमान देशवासी मेरे गुणोंका मान करें या न करें, परन्तु भावी सन्तान मेरा पूरा न्याय करेगी, इसमें संशय नहीं।

सच्चरित्रता तथा विमलताका सदा एकसा अनुभव करने वाला मनुष्य एक न एक दिन अवश्य ही अपनी अभिलषित कीर्त्ति प्राप्त करेगा, यह निःसंशय है।"

चरित्रनायक दम्पति इस समय फ्रान्स जानेका विचार कर रहे थे, परन्तु वृद्ध पिता शय्यागत थे। पुत्रकी यात्राकी तैयारी करते देखते ही वात्सल्य प्रेम उमड़ आया, कुछ रोने लगे, पश्चात्तापके कारण मुखसे वाक्य सीधे नहीं निकलते थे, परन्तु लड़खड़ाते लड़खड़ाते बोले —"पुत्र! मुझे छोड़कर फ्रान्स जाना चाहते हो? तुम्हें देखकर मेरा कष्ट न्यून बोध होता है।

बेटा। अब मैं तुम्हारा अल्प समयके लिये मेहमान हूँ, मुझे छोड़ न जाओ।"

सुहृद नेलसनको इतना वचन उमड़ा देनेके लिये बहुत था। आप तत्काल ही यात्राका विचार छोड़कर, सपत्नी पिता-सेवामें लीन हो, गृहपर ही रहने लगे।

जब पिता सो जाते थे, चरित्रनायक प्रिया अर्द्धाङ्गिनीके संग पुष्पवाटिकामें कभी इधर कभी उधर बालककी नाईं पक्षि-योंको पकड़ते हुए, कभी बंशी बजाकर गीत गाते हुए क्रीड़ा करते फिरते थे।

ऐसे शान्त समयमें भी नेलसनके लिये शान्ति नहीं थी। इस समय बन्दी किये गये अमेरिकन जहाजोंका झगड़ा पुन: उठ खड़ा हुआ था। कभी कभी नेलसनको इस झगड़ेकी एक टक्कर लग ही जाती थी।

एक दिन चरित्रनायक एक घोड़ा ख़रीदने मेलेमें गये हुए थे। इतनेमें एक सरकारी बर्कन्दाज अमेरिकन कप्तानोंके ३ लाख रुपयोंके दावेका नोटिस मकान पर दे गया।

नेलसनने घर लौटकर जो नोटिस देखा सर्द होगया। भावी नाशका विचार विचारेके हृदयको तप्त करने लगा। आप बोल उठे, 'इतनी अवज्ञाके योग्य मैं कदापि नहीं हूँ। परन्तु अब मैं फटकार नहीं सह सकता। मैं शीघ्रही खज़ानेमें इस विषयका समाचार देता हूँ। यदि सरकार इसबार मेरा पक्ष न लेगी तो देश त्यागकर फ्रान्स चला जाऊंगा।"

चरित्रनायकने एक पत्र इस विषयका खज़ानेमें भेजा, साथ ही यह भी लिखा, कि यदि फिरती डाकसे पत्रोत्तर न मिला तो मैं अवश्य फ्रान्स देशकी शरण ग्रहण करूँगा । पत्र डाकमें डालकर आपने कुल सामान देश त्यागका कर लिया ।

क्या देशभक्त चरित्रनायकको पत्रोत्तर न देकर, इङ्गलैण्ड अपने स्वच्छ नाममें कालिमा पोतेगी ? नहीं ! नहीं ! कदापि नहीं ! कोई देश, अपने ऐसे निःस्वार्थ भक्तको अवज्ञाकर, उन्नतशील नहीं हो सकता ।

दूसरे दिन मनोवाञ्छित उत्तर आ गया । चरित्रनायकका सब दुःख शोक दूर होगया । पत्रमें लिखा था—“आप बड़े वीर नि.स्वार्थ देश-सेवक हैं, आप कदापि भय न खायें,सरकार निज व्ययसे आपकी रक्षा अवश्य करेगी ।”

इसबार नेलसन बहुत प्रसन्न हुए, परन्तु ‘दूसरी बार जब आप नौकरीके लिये तीन चार बार उद्योग कर विफल मनोरथ हुए तो पुन आपकी उद्विग्नता बढ़ने लगी । परन्तु अपने अन्तरङ्ग मित्र राजकुमार हेनरी तथा हुड साहबकी कृपासे ३० जनवरीको (Agmamnon) एगमेमनन पर जगह मिली ।

पाँचवाँ परिच्छेद ।

नेलसन भूमध्य सागरमें ।

सुसमय अब समुपस्थित है । देखना है, चरित्र नायक क्योंकर इसका उपयोग करते हैं । ६४ तोपवाले 'एगमेमननका' सम्पूर्ण भार चरित्रनायकको ता: ३० जनवरीको मिला । अभी अध्यक्षता-सूचक अभिषेकका तिलक भी नहीं सूखा था, कि सुननेमें आया कि फ्रेञ्च-प्रजा-सत्ताक सैन्यसे हालैण्ड और इङ्गलैण्डकी सेनाने समर आरम्भ कर दिया ।

नेलसन तो सर्व्वप्रिय पहले ही होचुके थे । इस समय समरमें चरित्रनायक भी जानेवाले हैं, यह सुसमाचार सुनते ही नेलसनके स्वग्रामवासी नाविकोंका टिड्डीदल उमड़ पड़ा । जो आते वह अपनी इच्छा सदय कप्तान नेलसनके 'एगमेमनन' पर ही बने रहनेकी प्रकट करते थे । यह देख और और सहयोगी कप्तान नेलसनकी इस लोकप्रियता पर ईर्षा करने लगे ।

चरित्रनायकको फ्रान्सदेशवासियोंसे आन्तरिक घृणा थी ।

आप अपने सहचरोंको तीन बातका उपदेश दिया करते थे। पहली—उन्हें सदा अपने प्रधानको आज्ञा बिना तर्क वितर्क किये माननी चाहिये। दूसरी—अपने देश तथा राजासे द्रोह करनेवालेको अपना शत्रु समझना चाहिये। तीसरी—फ्रान्स देशवासियोंको राक्षसोंसे भी बढ़कर घृणास्पद समझना चाहिये।

इंगलैण्डमें इस समय खलबली फैलगई। लोगोंने सुना कि फ्रेञ्च सेनाको एक ऐसी युक्ति मालूम है, कि वह गोले मारकर अपने शत्रुके जहाजको जलाकर राख कर देती है।

नेलसनके पास जब यह समाचार पहुँचा, आप खूब ठठाकर हँस उठे और बोले "कुछ पर्वाह नहीं, हमलोग इन अग्नि बरसानेवाले महाशयोंसे इतना भिड़कर युद्ध करेंगे, कि उनके गोले बिल्कुल बेकाम हो जायँगे।" इसी विचारसे चरित्रनायक अपने जहाजको शत्रु नौकाके निकट भिड़ानेका उद्योग करने लगे।

पहिले इन लोगोंने "टौलाउन और मार्सेलीज" नगर पर धावा किया, परन्तु यहां युद्ध नहीं हुआ। चरित्रनायक इस समय घोर समरके निमित्त उत्सुक थे। आप कहते थे कि इस घेरे में हमलोगोंको कीर्ति लाभका उत्तम सुअवसर था।

पांच महीनेके बाद चरित्रनायकको कोर्सिका द्वीपमें जाने की आज्ञा मिली। समर-प्रिय वीर आज बड़े आनन्दसे नई यात्राकी तैयारी करने लगे।

पाठक! यहाँ पर कोर्सिका द्वीपका कुछ पूर्व इतिहास आपको सुना देना बहुत उचित है। यह द्वीप इटली देश का एक भाग समझा जाता है। प्रकृति ईश्वरकी इस द्वीप पर विशेष कृपा है। यद्यपि मलेरिया इटलीके प्रायः सब द्वीपोंमें बहुतायतसे फैला रहता है, परन्तु कोर्सिका द्वीप इस व्याधिसे बचा हुआ है। यहाँ की भूमि सुस्वादु फल फूलोंकी ही नहीं, बल्कि वीर स्वदेश-भक्तोंकी भी प्रसवनी है।

जिनोआके प्रजामत्ताक राज्यने इस द्वीपको फ्रान्सदेशवालों के हाथ बेच दिया। यदि पाठक जिनोआवालोंके अधिकारके बारेमें पूछें तो यही कहना अलम् होगा, कि जिसकी लाठी उसीकी भैंस!

कोर्सिकावासी अपने पड़ोसीकी इस धृष्टता पर जल उठे और अपनी समग्र शक्ति एकत्रित कर फ्रान्सवालोंसे जा भिड़े। परन्तु बाघ बकरीका युद्ध था, बिचारे कोर्सिकन हार गये। ब्रिटिश सिंह फ्रान्सवालोंका यह अन्याय सह नहीं सके। ब्रिटन लोग स्वतन्त्रता देवीके एकांग भक्त हैं। अतः जब कभी किसी भक्तको इस देवीकी प्रतिमा रक्षामें कटिबद्ध, परन्तु अशक्त, पाते हैं तो शीघ्र ही अपनी विकट हुंकार करते हुए धर्मरक्षा पर आ डटते हैं।

इस समय भी ऐसा ही हुआ। सरकारकी आज्ञासे प्रधान अध्यक्षने वीर चरित्रनायकको इस धर्मयुद्धमें भेजा।

नेलसन पर लार्ड हुड, प्रधान अध्यक्ष, का पूरा भरोसा

था। इसी कारणसे बस्तिया (Bastia) शहरके घेरेमें आप नियुक्त हुए। यह शहर युद्धका प्रधान स्थल था। चरित्रनायक पूरा उद्योग विजय पानेका करने लगे, परन्तु कार्य्य कुछ ऐसा वैसा नहीं था, कि शीघ्र ही सिद्ध हो जाता। शत्रु-सैन्यकी संख्या नेलसनकी सेनासे कहीं अधिक थी। इतनी अधिक सेनासे पराजित होना कुछ अधिक लज्जाकी बात नहीं कही जा सकती; परन्तु इसपर भी वीर ने प्रधान अध्यक्षके यहाँ कभी आतुरता नहीं प्रगट की। नेलसन ऐसी २ कठिनाइयोंसे कब उद्विग्न होनेवाले थे? आपको विश्वास था, कि उनका एक वीर सैनिक तीन-शत्रु सैनिकोंका सामना कर सकता है।

चरित्रनायकने केवल १२०० सेनाके सङ्ग भीम विक्रम तथा रणकौशल दिखाते हुए ४३०० शत्रु-सेनासे शस्त्र रखवा ही लिये। बस्तिया नगर पर अब इंगलैण्डका भव्य झण्डा फह-राने लगा।

बस्तिया (Bastia) विजयका समाचार जिस समय प्रधान अध्यक्षने पाया, विश्वास नहीं किया, परन्तु जब चरित्र-नायकका पत्र मिला, आप आनन्दोन्मत्त हो गये। उन्होंने नेलसनको बुलवाया और उनकी बहुत प्रशंसा की। चरित्र-नायक तो केवल सम्मान के भूखे थे, इस सम्मान पर फूले न समाये।

समाचार मिला, कि फ्रान्सवाले बस्तियामें पराजित होकर भागना चाहते हैं। हुड शीघ्रही नेलसनको सङ्ग ले एक

समरस्थान पर सैनिकोंके सङ्ग शत्रुओंकी टोहमें निकल पड़े।

चरित्रनायकने इस समय एक पत्र अपनी स्त्री को लिखा:—

प्यारी!

मैं इस समय शत्रु-सैन्यकी टोहमें जाता हूँ और परमेश्वरसे विनती करता हूँ, कि किसी प्रकार उन लोगोंको पा जाऊँ। प्रिये! यदि मैं इस युद्धमें काम हो आजाऊँ, तोभी मुझे पूरा विश्वास है कि तुम राज्य-आदरसे अवश्य ही आदृत होगी। मेरे लिखनेका यह तात्पर्य नहीं, कि मैं मारा ही जाऊँगा बल्कि अधिक सम्भावना है कि मेरे मरनेके बदले मैं कीर्त्ति के साथ विजय प्राप्त कर तुम्हारे पास लौट आऊँ।

मैं दृढ़ हूँ, कि मेरे हाथसे ऐसा कार्य कभी नहीं हो सकता जिससे मेरे परिजनवर्ग कभी तिरस्कृत हों। प्राणाधिके! मैंने अपना सर्वस्व तुम्हे दे दिया है, जो कुछ मेरा है वह सत्य की कमाई है।

अन्तमें,मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि होनी हो सो मुझ पर होवे, परन्तु तुम अपने पुत्रके भाग्यसे सकुशल रहो।

नेलसन।

शत्रु नौकाका पता लग गया। अब नेलसन सर चार्ल्स स्टुअर्टके सङ्ग "काल्व्ही" के घेरेमे सहायता देनेके निमित्त भेजे

गये । स्टूअर्ट भी नेलसन ही के ऐसे वीर और सहिष्णु थे । बड़ी हानि इन वीरोंको कालवह्नीके दूषित जलवायुसे होने लगी । दो सहस्र मनुष्यों में से आधेके करीब तो बीमार हो पड़ गये थे, जो बाकी बचे वे भी बिल्कुल स्वस्थ नहीं रहे ।

इस युद्धमें चरित्रनायक भी बीमार हो गये थे । एक दिन युद्ध बड़े झोंके से शुरू हुआ । नेलसन नौकापृष्ट पर खड़े दृश्य देख रहे थे । इतने ही में सामने एक गोला आकर फटा । इसमें से अनेक लोहे और बालूके कणोंने निकल कर आपकी आँखोंको बिल्कुल ढक लिया । एक नेत्र तो ऐसा जखमी हुआ कि फिर कभी खुला ही नहीं ।

पाठक ' कर्म्म-यज्ञमें वीरोंको केवल मनोल्लास, हर्ष विषादकी ही आहुति देनेसे विश्वस्त तथा अक्षय कीर्त्तिका लाभ नहीं हो सकता । सुयश देव कठिन तपस्या से मिलते हैं । चरित्रनायक ने पहिले अपने सुख-सामानकी आहुति दी । अब अङ्गप्रत्यङ्गों की बारी है । देखे अङ्ग-आहुतिसे भी देव प्रसन्न होते हैं वा प्राण लेकर ही सन्तुष्ट होते हैं ।

वीरवर ' तुमने एक नेत्र देकर देशके कोटि २ नेत्रोंको अपनी ओर आकर्षित कर लिया । रणपुङ्गव ' अपनी जन्मभूमि के लिये तुम अटूट परिश्रम और असह्य दुःखोंका सामना कर रहे हो ' रणशार्दूल ' तुम स्वअङ्गोंसे लाल धारा बहाकर माता की मुख-लालिमा रखना चाहते हो । देव ' तुम धन्य हो '

तुम्हारी वीरता, तुम्हारा मातृ-प्रेम धन्य है, तुम हम लोगोंके पथ-दर्शक आलोक हो।

नेलसन ऐसी व्यथासे विकल रहने पर भी आप अपने स्थानसे न टले और बोले, "प्राण छूटने पर ही कर्त्तव्य छूटेगा।"

अन्तमें 'कालवड़ी' का पतन हुआ, वीरकी जीत हुई, इस समय नायकका जहाज एकदम घायलों और अस्वस्थोंका मानों रुग्नागार होगया।

शत्रु-फ्रेञ्च-सेना यद्यपि कोर्सिकामें परास्त हुई परन्तु और स्थानोंमें विजयी हुई।

इस समय ग्रेट ब्रिटेन, आष्ट्रिया और हालेण्डकी सम्मिलित सेना फ्रान्स और बेल्जियमसे निकाल दी गयी थी। प्रुशिया तथा अष्ट्रियावालोंने खदेड़े जाकर राइन नदीके दक्खिनी किनारे पर आश्रय लिया। स्पेनमें फ्रान्सका झण्डा ऊँचा हो गया।

योरोपकी भविष्य तुला इस समय जरासे बोझमें नव सकती थी। बोनापार्ट की विजयी सेन्य योरपके दाँतका दर्द हो रही थी, सभी देश इसके भयसे आतुर थे।

सभोंकी निरनिमेष दृष्टि इस समय इंगलैण्ड और उसकी जलसेना पर अड़ी थी। इंगलैण्ड पर ही इस समय सब देशोंकी एकमात्र आशा थी।

भूमध्यसागरमें 'कोर्सिका' द्वीपकी विजयने सचमुचही इंगलैण्डका गौरव बढ़ा दिया था। फ्रेञ्चोंने विचार कर यह देख

लिया था, कि जब तक हम लोग ब्रिटिश बेड़ोंका समूल नाश न कर सकेंगे, तब तक हमारा विजय-स्तम्भ दृढ़ नहीं हो सकता। अस्तु, पन्द्रह बड़े बड़े जहाजों और छः छोटे जहाजोंका फ्रेञ्च बेड़ा अँगरेज़ोंसे सामना करनेके लिये ता: ८ मार्च सन् १७८५ को भेजा गया।

एडमिरल होथम, जो अब लार्ड हुडके स्थानपर काम करते थे, थोड़ी सेना लेकर उन लोगोंका सामना करने चले। अँगरेज़ोंके बलका ऐसा दबदबा शत्रु-सैन्य पर था, कि स्वल्प-बल-युक्त रहते भी होथमका सामना करनेका साहस फ्रेञ्चोंको न हुआ। शत्रुदल रातभर तीन मीलकी दूरी पर पड़ा रहा। सवेरा होतेही ब्रिटिश जहाजोंने शत्रुपर धावा किया। इस समय नेलसनने अपने नियमानुसार एक चिट्ठी अपनी अर्द्धांगिनीको लिखी :—

प्यारी!

सबका जीवन परमेश्वरके हाथ है। वह पूरा विज्ञ है, कि किसकी रक्षा और किसका नाश करना उचित है। जीवनका वारान्यारा करना यद्यपि उसके हाथ है तथापि चरित्र और सुयशकी रक्षा मेरे ही हाथ है। इत्यलम्

नेलसन

नेलसनका जहाज अत्यन्त शीघ्रगामी था। शत्रुदलके निकट पहुँच कर उसने "काइरा" जहाजको बन्दी कर लिया। काइरा बड़ा जहाज़ था; परन्तु बहुत बड़ा होना

भी भद्दापन है। इस समय 'ऐगममनन' की लाघवता ही उसकी विजयका कारण हुई। नेलसन अपनी तोपोंका मुँह तब तक बन्द किये रहा, जबतक वे शत्रु-जहाज़के एकदम पास न आ पहुँचे, वहाँ पहुँचते ही इसने ऐसी गोलोंकी बाढ़ दागी कि काइराके पतवार इत्यादि नष्टभ्रष्ट हो गये। अब फ्रेंच जहाज़ अपने 'काइरा'की दुर्दशा देख नेलसन पर झपटे। इधर हौथमने नेलसनको फिर आनेका संकेत किया, परन्तु इस वीरने जब शत्रुके जहाज़के छक्के छुड़ादिये तभी लौटा। "काइरा" ऐसा नष्ट हुआ, कि अब इसे दूसरे जहाज़ 'लौसेनसौयूर' को आश्रय के लिये लेना पड़ा।

दूसरे दिन शत्रुके और जहाज़ तो निकल गये, परन्तु 'काइरा' और 'लौसेनसौयुर' पीछे पड़ गये और नेलसनके हाथ लग गये। चरित्रनायकने अनेक प्रार्थनाएँ शत्रुके बचे जहाज़ोंका पीछा करनेकी की, परन्तु हौथमने एक न सुनी। उन्होंने कहा, 'बस अधिक लालच बुरा है, इतने ही पर सन्तोष करो।'

चरित्रनायकको एडमिरलका यह कुसमयका सन्तोष बहुत बुरा लगा। आपने कहा, "महाशय! यदि हम लोग ग्यारह जहाज़ोंमेंसे दस जहाज़ पकड़ लेते और यदि बन्दी होनेके लायक केवल एक जहाज़ भी छूट कर निकल भागता, तो मैं कदापि सन्तुष्ट होनेवाला नहीं था।"

प्रधान अध्यक्ष हौथम शान्त-चित्तके मनुष्य थे। वे चरित्र नायककी नाई उद्धत प्रकृतिके नहीं थे। नेलसन तो अपनी शक्ति

पर कदापि ध्यान देते ही न थे। ये सदा आक्रमण करना ही पसन्द करते थे।

समर-कलकल अब समाप्त हो गया। युद्धका झोंका जब तक रहता था, नेलसनको अपने तन मनकी सुध भी नहीं रहती थी, अब नेलसन नेत्र-पीड़ा से अत्यन्त विकल हो उठे।

इस समय लार्ड हुडकी छुट्टी पूरी हो गई थी। चरित्र-नायक उत्सुकतासे इनके वापस आनेकी बाट जोहते थे। हुड चरित्रनायक को पुत्रवत् मानते थे। परन्तु अभाग्यवश लार्ड हुडके स्थान पर लार्ड हज (Howe) आये। परन्तु गुणका आदर सब ओर है। हज ने चरित्रनायकको प्रधान कप्तान बना कर आस्ट्रिया को सहायता देने के लिये भेजा। आष्ट्रिया इस समय फ्रान्ससे रिवीरा*स्थान पर लड़ रहा था।

इस समय चरित्रनायकने नाव्य-दक्षता दिखलाते हुए राज-नीतिज्ञता का भी पूरा परिचय दिया।

पाठक! स्मरण रक्खें कि अभीतक वेलिंगटनका समय नहीं आया था, जबकि ब्रिटिश स्थल-सेना भी जल-सेनाकी नाईं विख्यात होगयी थी। इस समय केवल ब्रिटिश बेड़ोंका ही दबदबा चारों ओर था।

एक फ्रेञ्च लेखक लिखता है, "इस समय देखना है ये समुद्री भेड़िये क्योंकर थल पर अपना विक्रम प्रगट करते हैं।"

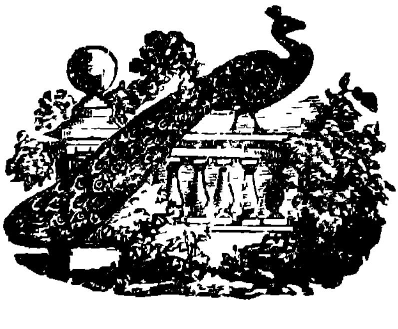
कुछ दिनोंके बाद एडमिरल जर्विसने, जो आगे चल कर

*रिविरा इटली देशका एक भाग है।

लार्ड सेन्ट व्हिन्सेन्ट होंगी, अध्यक्षताका कार्य्य अपने हाथमें लिया।

जर्विसने तुरत नेलसनको "कैपटेन" (Captain) जहाजपर जगह देकर सम्मान बढ़ाया। चरित्रनायकका पुराना "ऐगमेमनन" अब छूट गया, परन्तु नेलसन सदा कहते रहे, कि ऐगमेमनन के वीर युवक नाविकगण तोपके गोलेको मटरके दानेसे अधिक नहीं समझते थे।

पाठक! वीरके प्यारे 'ऐगमेमनन' जहाजने सच्चे मित्रकी नाईं ट्राफ़लगरकी अन्तिम लड़ाईमें साथ रह कर अपने वीर अध्यक्ष की सेवा की थी और नेलसनके लोकान्तर होनेके १५ वर्ष बाद साउथ अमेरिकाकी लड़ाईमें अपने भूत अध्यक्षकी नाईं विजयोल्लासमें ही समुद्र-मग्न हो गया।



छठा परिच्छेद।

सेण्ट विन्सेण्ट का युद्ध।

विजयी फ्रेञ्च सेना स्थल-युद्धमें सर्वत्र अपनी विजय-पताका फहरा रही है। संसार इसके विजय-कोलाहल से कंपायमान हो उठा है। अब जल-युद्ध में क्योंकर प्रसिद्ध ब्रिटिश नाविकों को धता बताकर चक्रवर्ती संसाराधिप हों - यही फ्रेञ्चों का दिवस-मनन और रात्रि-स्वप्न है।

नेलसन से बार बार जलयुद्ध में मार खाकर, फ्रेञ्च लोग अब मारीच स्पेन की सहायता लेने चले हैं। स्पेनवालोंने भी जब और बचने का उपाय न देखा, तब शीघ्र ही अपनी जल-सेना एकत्रित कर अपने भयानक पड़ोसियों का साथ दिया। देखना है, अब यह दुरङ्गी सेना क्या यश पाती है?

टौलाउन का नौकाश्रय, मिश्रित सेनाओं का अड्डा नियत हुआ है। चारों ओरसे बृहत नौकादल घोर घटाकी नाईं एकत्रित हो रहा है। बीच बीचमें तोपों की हड़हड़ाहट और

बारूद का भक से जल उठना, मानों वर्षा ऋतु की पूरी छटा दिखा रहा है।

ब्रिटिश वीरो! सावधान! सावधान!! इस भीषण घटा और अपेक्षित अविरल अग्नि वर्षासे तुम्हारा निस्तार तब तक नहीं दीख पड़ता, जब तक कि तुम्हारा आराध्यदेव नेलसन गोवर्धन रूप अपने हृदय उत्साह और उद्योग से तुम्हारी रक्षा न करे।

दुर्बल हृदय जिनोआ (Genoa) ने भी सर्वविजयी फ्रेञ्चों से डरकर सन्धि कर ली। इस सन्धि-स्थापन से फ्रेञ्च ऐसे शक्तिशाली होगये, कि अंगरेज़ लोगोंका बस्तिआ (Bastia) बेड़ा भूमध्यसागर छोड़ देने को बाध्य हुआ। एलबा द्वीप भी कुछ दिनों के बाद छोड़ही देना पड़ा; परन्तु इस त्यागके पहले वीर नेलसन, जो उस समय मिनरवा (Minerva) जहाज़ पर थे, एक बार शत्रुसे झोंके से भिड़ गये और उन्होंने उसको दिखला दिया कि, ब्रिटिश वीर इतने पर भी अजेय हैं।

इस युद्धमें नायकने स्पेन जहाज़ "लासैबीना" (La Sabina) को बन्दी कर लिया। जिस समय वे विजित जहाज़को लूट रहे थे, सम्मुख से दो स्पेन के जहाज़ आ निकले और उन्होंने मिनरवा का पीछा किया। यद्यपि "मिनरवा' पूर्व युद्ध में छिन्न भिन्न हो गया था; तोभी साफ़ निकल गया और उसने 'फोरेजा' (Ferraja) के नौकाश्रय में आश्रय लिया।

लासैबिना(La Sabina) के कमान स्टुअर्ट डान जैकोबा

इस धावे में मिनरवा (Minerve) पर ही बन्द थे। उदार नेलसनने इन्हें सम्मान पूर्वक शान्ति का झण्डा लगाकर एक डोंगी पर स्पेन वापिस कर दिया।

पाठक! यद्यपि यह उदारता युद्ध-नियमों के विरुद्ध है, तथापि नेलसनने अपने भूतपूर्व्व देशनिष्काशित स्टूअर्ट राजाओंके वंशधर का सम्मान करना अपने देश के गौरव-वर्धन का द्वार समझा। स्टूअर्ट लोग स्वभाव से ही वीर थे, अस्तु डॉन जैकोब भी इससे रहित नहीं थे। स्पेन के कुल सेनापतियों में ये वीर थे। नेलसनने मुक्त कण्ठसे शत्रु होने पर भी इनकी प्रशंसा की।

कुछ दिनों के बाद मिनरवा (Minerve) को पुन: एक बार ऐसे असम शत्रु-दल से सामना करना पड़ा, परन्तु प्रत्युत्पन्नमति नेलसनने उनकी आँखों में धूल झोंक ही दी।

एक दिन जिब्राल्टर (Gibraltar) से निकलकर, प्रधान अध्यक्ष के जहाजके पास जाते समय, मिनरवा (Minerve) समग्र शत्रु-दल के दृष्टिगोचर हो गया। शत्रु-दल बाज़ की नाईं बेचारे लवा सदृश मिनरवा पर झपट पड़े। एक बड़ा शत्रु-जहाज उसके निकट पहुँच गया। घोर युद्ध और नाश में अब तनिक भी संशय नहीं रहा। ऐसी गड़बड़ में नेलसनके कान में भनक पड़ी कि, एक नाविक जलमें गिर पड़ा है। आप अपने दयार्द्र चित्तका परिचय दिये बिना नहीं रह सके। शीघ्रही एक डोंगी उसके बचाने के लिये पानी में लटका दी। डोंगी

के द्वारा नाविक तो बच गया परन्तु अब डोंगी का जहाज़ के निकट आना ही दुःसाध्य हो गया। इधर शत्रु-दल एक गोली के फासले पर डटा था। जरासा विलम्ब बचाव में होने से अँग्रेजी बेड़े का वारा न्यारा हो जाता है, कठिन समस्या है। नेलसन ने धीर भाव से कहा, "ओह! होना हो सो हो, अपने एक नाविक को यों विपत में छोड़ भागना कायरपन है। जहाज को आगे बढ़ाकर डोंगी को उठा लो और शत्रु से बचकर निकल चलो।" यह आज्ञा सुनते ही शत्रु मित्र सब इस धीरता पर अवाक् रह गये। नाविक सकुशल जहाज़ पर चढ़ गया और मिनरवा भी सकुशल निकल गया।

दूसरी रातको "मिनरवा" यकायक शत्रु-बेड़े के बीचमें पड़ गया, कुहासा अधिक था, भाग्यवश शत्रुओं ने अँगरेजी जहाज को पहचाना नहीं, ये भी चुपचाप स्पेन एडमिरल के संकेतों का अनुकरण करते हुए चले जाते थे, जिससे धोखे से शत्रु-दल इन्हें अपना ही जहाज़ समझे।

पाठक विचार करें, कि यह कैसा नाजुक समय है, कुहासा यदि एक क्षण के लिये हट जावे, सूर्य्य यदि अपना विमल मुख इस समय दिखलादे, तो बेचारे चरित्रनायक के जहाज की धज्जियों का पता भी शत्रु-दल नहीं लगने दे।

इस असमंजसमें एक एक पल एक वर्ष सा बीत रहा था, कि अरुणोदयकी लाली पूर्वमें दीख पड़ी। कुहासा विलीन हो चला, परन्तु परमेश्वरने इस समय अपनी अटूट कृपा का परि-

धय दिया। शत्रु-दल ने आपसे आप केडीज़ (Cadiz)की ओर अपना मुँह फेर दिया।

अब नायककी अवसर मिला और वह निकल भागे। प्रधान अध्यक्ष इनकी चतुरता पर खूब हँसे। उसी दिन संध्या को नेलसन ने अपने जहाज़ कैप्टेन पर जा कर विश्राम किया।

दूसरे दिन प्रातःकाल शत्रु के २७ जहाज़ों का एक बेड़ा युद्धके सामानों से लैस आता हुआ दीख पड़ा। उसकी व्यूहरचना सराहनीय थी। छः जहाजों का एक बेडा पीछे था और मुख्य इक्कीस जहाजों के बेड़े की रक्षा कर रहा था।

इधर ब्रिटिश बेडा पहिले तो दो कतारों में जा रहा था, परन्तु सम्मुख शत्रु का व्यूह देख, इन लोगों ने भी छः तीव्र-गामी जहाज शत्रुके बीच व्यूह तोडने को आगे भेजे।

स्पेनवाले सामानों से लैस होने पर भी युद्धके लिये बिलकुल तैयार न थे। अनार दुरुस्त हो कर रहे थे, कि एडमिरल जार्विस के विकट धावे से उनका व्यूह टूट गया और वे दो भागों में बँट गये। इस प्रकार स्पेन के बड़े २ जहाजों पर अँगरेज़ोंकी विकराल तोपोंने गोला उगलना आरम्भकर दिया।

शत्रु के विलग हुए जहाजों ने अपने विपद में फँसेहुए जहाजों की सहायता करनी चाही। परन्तु अँगरेज़ों की मार के कारण वे जान बचा तितर बितर हो गये। प्रधान अध्यक्षने नेलसनको, जो इस समय पश्चात भागमें रक्षा कार्य्य पर नियुक्त थे, बढ़कर लड़नेका संकेत किया, परन्तु शत्रुदल अब जहाज़

का पाल वायु की ओर फिरकर या तो अपनी कतार दुरुस्त किया चाहते थे या बिना युद्ध किये भागा चाहते थे, यह देख कर नेलसनने अध्यक्ष के संकेत का ध्यान न कर शत्रु-दल को रोकना चाहा और अपने बेड़े को अविलम्ब चढ़धाने की आज्ञा देदी। प्रधान अध्यक्ष की आज्ञाके प्रतिकूल होते हुए भी नेलसन की युक्तिने स्पेनवालों के उपाय को मिट्टी में मिला कर ही छोड़ा। एक अँगरेज़ी बेड़ेने स्पेनवालों को रोका, दूसरोंने आगे बढ़कर उनको नाश कर दिया।

अब पश्चात् भागसे दक्षिण भागका, फिर वहाँसे वाम भाग का सैन्यभार "कैप्टेन" (Captain) के अध्यक्ष नेलसनको मिला। वीर ने अकेलेही सबसे पहले शत्रु का सामना किया। (Culloden Blenhiem) कलोडेन ब्लेनहिम जहाज तथा कप्तान कौलिङ्गउड (Collingwood) का 'एक्सेलेगट' (Excellent) जहाज् नायकको, असम शत्रु-दल से असीम वीरता प्रगट करने वाले युद्धमें, पहले पहल सहायता देने पहुँचे।

नायकका जहाज इस समय नष्ट प्राय: हो गया था। इसके सम्मुख का पतवार शत्रु के गोले से उड गया। इतिहास वेत्ताओं का कथन है कि, 'कैप्टेन' जहाज पर एक रस्सी भी अछूती न बची। इसका चक्का भी गोले की चोट से बिल्कुल चूर हो गया। नेलसन ने अपने जहाज को बिल्कुल बर्बाद हुआ देख, अपने सैनिकों को खड्ग हाथ में लेकर शत्रु के नौकापृष्ठ पर चढ़जाने की आज्ञा दी।

आज्ञा देकर, निर्भीक केसरी सबसे आगे शत्रु-नौका सैन-निकोलस (San Nicholes) की पृष्ठ पर अपना लपलपाता रुधिर-पिपासु खड्ग हाथमें ले चढ़ गया, साथ ही साथ समग्र नाविकगण कुलांचे मार २ चढ़ने लगे। शत्रु दल इन वीरों के अचानक धावेसे हक्काबक्का रह गया और काठ के पुतले की नाईं उसने अपने शस्त्र रख दिये।

पाठक! इतनी चपलता, इतनी द्रुतता न तो विद्युत् में न वर्षा कालीन निर्झरियों में ही देखी गयी है, जितनी नायक के खड्ग चलाने और उनके नाविकों के शत्रु विजय करने में पायी गयी।

San Nicholes (सैननिकोलस) पर कुछ रक्षकोंको छोड़ कर फिर वैसे ही भीमविक्रम दिखलाते हुए नायकने चिल्ला कर कहा—"भाइयो! या तो रणकी विजय वैजयन्ति या तिय-देवोंसे वर जाना" बस खड्ग खैंच लो, और पुनः अपने नायकका गौरव बढाने तथा देशकी रक्षाके लिये शत्रु-नौका "सैन जोसी-आई" (San Josn) के पृष्ठ पर चढ जाओ।

वेरी साहब सहकारी कप्तान इस समय सबसे अग्रसर हुए। स्पेन नाविकोंकी तो घिग्गी बँध गई, तुरत शस्त्र रख दिये। चरितनायक अब शान्त चित्तसे स्वयम् अपने हाथोंसे विजित सैनिकोंके खड्ग लेलेकर अपने एक पुरातन अनुचर के हाथमें देते जाते थे।

पाठक! यह अत्यन्त ही सुन्दर दृश्य था। अंगरेजों

प्रधान अध्यक्षकी नौका विक्ट्री (Victory) अब नेलसनकी गौरव-भूमि पर पहुँची। पहुँचते ही बादल फाड़नेवाली करतलध्वनिसे इन लोगोंने वीर चरित्रनायकका अभिवादन किया।

प्यारे युवक पाठक! बस जीवन आज सफल हो गया। चरित्रनायकका सारा समर-कष्ट मानों भूल सा गया। क्या आपलोगोंके हृदय पर इस दृश्यका प्रभाव नहीं पड़ता? क्या आप अपने जीवनको इस प्रकार सफल नहीं कर सकते? क्या "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" मन्त्रसे प्रति दिन अपने हृदयको अभिषिक्त कर आपको ऐसा गौरव पाना दुर्लभ है?

पाठक! आप सब कुछ कर सकते हैं, परन्तु उत्साह और सहिष्णुताकी आवश्यकता है।

चार बजे सन्ध्या समय युद्ध बन्द हो गया, चरित्रनायक प्रधान अध्यक्षसे मिलने गये। जॉन जर्विस बार बार नायकको आलिङ्गनकर कहने लगे,"भाई! आज तुम्हारे ही कारण देशका भेष रहा, तुम्हें किन शब्दोंमें धन्यवाद दूँ, मुझे सूझता नहीं।"

कप्तान काल्डर (Calder) ने परिहाससे कहा,"महाशय इसमें तो संशय नहीं कि कैप्टेनने सचमुच ही समर विजय किया है। परन्तु इतना होने पर भी इसने आपकी आज्ञा उलङ्घन की।"

प्रधान अध्यक्षने हँसकर उत्तर दिया,—"काल्डर! यदि

कभी तुम भी आज्ञाउल्लङ्घन कर समरमें विजय प्राप्त करो तो, मैं तुम्हारी अवज्ञा भी सहर्ष क्षमा करूँगा।"

राजकीय सम्मानोंकी वर्षा भी, इस विजयपर, विजयी वीरों पर खूब हुई। जर्विस सेगट 'विह्नसेगटके लार्ड'की उपाधिसे भूषित हुए। चरित्रनायक भी बैरन बनाये गए, परन्तु धनाभाव से आपने इस पदवीको स्वीकार नहीं किया। अस्तु, आप नाइट ऑव गार्टर (Knight of Garter) ही बनाये गये।

जर्विस साहबने आपको एक बहुमूल्य खड्ग पारितोषिक दे सतकृत किया, जिसे चरित्रनायक सदा स्पेनयुद्धके पश्चात् अध्यक्ष जर्विसका खड्ग कहकर आदर करते थे। नायकने उस पुरस्कार खड्गको नौरविच शहरमें भेज दिया और लिखा, "मैं अपनी जन्मभूमिका प्रधान शहर नार्विच छोड और कोई स्थान इस योग्य पुरस्कारके रखनेके योग्य नहीं समझता, जहाँ इसे रखकर मैं अपने परिजनवर्गोंको अधिक मुदित कर सकूँगा।"

मुमुर्ष पिता भी हृदयोद्गार रोक नहीं सके। पुत्रको लिखा, "बेटा! तुम्हारी विजयका समाचार सुनकर, तुम्हारे यशका गान आज सामान्य भाटोंसे लेकर असामान्य अँगरेजी थियेटरों तकमें सुनकर फूला नहीं समाता और न अपने आनन्दाश्रुओंको ही रोक सकता हूँ।"

नायकके विजयका साथी "कैप्टन" जहाज़ बिलकुल नष्ट भ्रष्ट हो गया था। अब वह लड़ाईके योग्य नहीं रहा था। अस्तु,

चरित्रनायक सर होरेशियो Reai Admiral of the Bule, का झण्डा नूतन थिसियस (Theseeus) जहाजपर फहराने लगा। इस थिसियस जहाज़के नाविक गण अभी इङ्गलेण्डके समुद्रगत बलवेके साथी थे, देखना है अब ये अपने नव अध्यक्षसे कैसा व्यवहार करते हैं।

सुहृद नेलसन नाव्य-संसारमें सर्वप्रिय था। इसकी सुख्यातियां वीरता और उदारता तो शत्रुको भी बलात्कार अपने गुणके वश कर सकती थीं, ये तो भला गुणग्राही अङ्गरेज नाविक ही थे।

नाव्य-पृष्ठ पर आनेके दूसरे ही दिन इनको सब नाविकोंका हस्ताक्षरित एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था :—

"ईश्वर एडमिरल नेलसन और कप्तान मिलरको दिग्वजयी करे! हमलोग उन अधिकारियोंके अत्यन्त अनुगृहीत हैं, जिन्होंने ऐसे वीरोंके हाथ हमलोगोंका भाग्य-सूत्र सौंपा है। हमलोग अपने सेनापतियोंको अपनी नसोंका रुधिर बहाकर भी सन्तुष्ट करनेकी चेष्टा करेंगे। हमलोग थिसियसको भी कैप्टन जहाजकी नाईं विख्यात करके ही जीवन सुफल करेंगे।"

पाठक! इन वीरोंने अपने आजके वचनको आगेके दिनोंमें पूरी तरह चरितार्थ कर दिखलाया।

अब नेलसनको केडीज (Cadis) अवरोध करनेवाले बेड़े की अध्यक्षता मिली।

नेलसनने जितनी वीरता इन हाथों हाथकी लड़ाइयोंमें दिखलाई, शायद औरमें कदापि नहीं दिखलाई होगी । यह अत्यन्त ही युद्ध-प्रिय थे, एक बार इनके जहाज़ पर कुछ स्पेनवाले चढ़ आये । आते ही खड्गका ऐसा प्रहार नेलसनपर किया कि, यदि जान सक्स नामक एक कर्णधार इस समय विद्युत् चपलतासे इन्हें पीछे नहीं खींच लेता, तो बस इनके जीवनकी समाप्ति हो हो जाती ।

केडीज़ अवरोधके बीच ही में समाचार मिलाकि, स्पेनके एक कोषयानने मेक्सिकोसे चलकर अँगरेज़ोंके भयसे टेनरिफ़ द्वीपमें आश्रय ले लिया है । नेलसनको टेनरिफपर धावा करनेकी आज्ञा मिली । यद्यपि वीरने पूरी वीरता दिखलाई, परन्तु सफल मनोरथ नहीं हुए । इस युद्धमें चरित्रनायकके दाहिने हाथमें गोली लगी । यदि जोशीआ निसबेट इस समय बड़ी सफाईसे घाव पर पट्टी बाँध रुधिर न रोक देता, तो आज अवश्य ही नेलसनकी मृत्यु हो जाती ।

पाठक ! यह दूसरी अंग-आहुति देश-सेवामें हुई ।

ऐसा भयानक घाव लगने पर भी किसीका आश्रय ग्रहण न कर, नेलसन सिंहकी तरह उछलकर नौकाके ऊपरी पृष्ठपर चढ़ गये और सर्जन (Surgeon) से शान्त भावसे बोले, "डाक्टर साहब ! मैं जानता हूँ, अब मेरा दहिना हाथ किसी कामका न रहा । कृपा कर जहाँ तक शीघ्र हो निकम्मेको काट ही डालिये ।" मूर्त्तिमान साहस हो, वीरने अपनी

बाँह कटवा डाली। पाठक! एक आह भी वीरके मुखसे न निकली, न इसने पुनः कभी इसकी चर्चाही की। घावके शारीरिक दुःख तथा टेनरिफ युद्धकी हारके मानसिक दुःखसे यह बहुत बीमार हो गये।

एक दिन बीमारीमें हो यह कहने लगे—"बस भाइयो! अब मैं अपने देश और मित्रोंका बोझ हो गया हूँ।"

दूसरे दिन लार्ड विन्सेण्टको यों पत्र लिखा :—

महाशय!

क्या आप मुझे एक नौका अपनी लोथको देश पहुँचानेको देंगे? एक इकहत्था एडमिरल अब देशके किस काम आ सकता है?

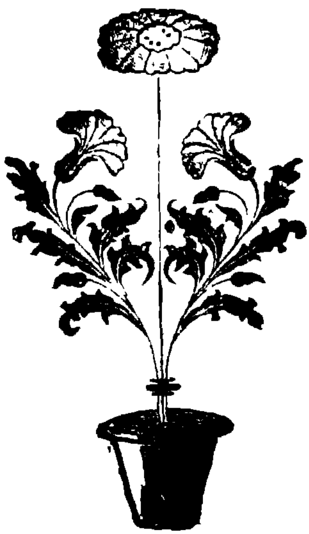
नेलसन।

एडमिरलने इसके उत्तरमें अत्यन्त दुःख प्रकाश करते हुए इन्हें देश लौट जानेकी अनुमति दी।

स्वदेश पहुँचने पर देशवासियोंके सुस्वागतसे आप अत्यन्त प्रसन्न हुए। यह लण्डन और ब्रिष्टलके फ्रीमैन (Freeman) बनाये गये। इङ्गलेण्डाधिपने अपने हाथोंसे इन्हें Order of Bath की खिल्अत पहनाई तथा पन्द्रह हजार रुपयेकी वार्षिक पेन्शन नियत कर इन्हें उत्साहित किया।

कुछ दिनोंमें दुःखदायी घाव भर गया और ये परमेश्वरकी असंख्य कृपाओंका धन्यवाद देते हुए पुनः Vanguard जहाजका आधिपत्य ले केडिज (Cadis) बेड़ेसे जा मिले।

वृद्ध लार्ड व्हिन्‌सेण्ट (Vincent) को इनके आनेका असीम आनन्द हुआ। अपने प्यारे नेलसनका सुस्वागत करते हुए वह कहने लगे,—"बस, नेलसनने आकर मुझे नव जीवन प्रदान किया।"



सातवाँ परिच्छेद।

नाइलका युद्ध।

सेएट विन्सेण्टका युद्ध समाप्त हो गया, फ्रान्स वाले बार बार धूल फाँककर कटकटा रहे थे, अब क्रोधमें अन्धीभूत नेपोलियन संसारके सब शत्रुओंका अवतार इँगलैण्डको ही मानकर इसके मूलोच्छेद करनेका उपाय करने लगा।

कहावत है, कि कोई मनुष्य कौओंके मारे तङ्ग आ गया था। एकदिन एक कौआ उसके घरमेंसे एक रोटीका टुकड़ा ले बाँसकी एक सीढ़ी पर जा बैठा और प्रत्येक डण्डे पर उठता बैठता हुआ घरके छप्पर पर चढ़ गया। भले मानुषने समझा, बस मौका ठीक है, अगर सीढ़ी हटालें तो दुष्ट कौआ छप्पर परसे उतर न सकेगा और भूख प्याससे मर जायगा। चटपट विकट बदला उसने ले ही लिया, सीढ़ी हटाकर निश्चिन्त हँसता हुआ आ बैठा। परन्तु सीढ़ी उतारनेके खटकेसे कौआ उड़ गया और बुद्धिमान महाशय मुँह लटकाकर बैठ रहे।

पाठक ! बस ठीक इसी भले मानुषका स्वाँग फ्रान्सवालोंने किया ।

इन लोगोंने विचारा, यदि हिन्दुस्थान अँगरेज़ोंके हाथसे निकाल लें, तो शत्रु लोग आपसे आप पराजित हो जायँगे ।

फ्रान्सवालोंने अपने चुने चुने जहाज़ों और सेनाओंका एक बेड़ा तैयार कर, ईजिप्ट होते हुए, हिन्दुस्थान आनेका विचार कर लिया । पाठक ! हवाई घोड़ोंपरकी सैर भी खूब ही होती है, कभी तो सुवर्णमयी भारतभूमिपर अकड़ अकड़ कर चलने का और कभी अपने मस्तकपर युरोपका चक्रवर्ती छत्र लगानेका सुख-स्वप्न नेपोलियन देखने लगा । परन्तु वह यह भूल ही गया था कि, "मन्दर्से ख्याले न फ़लक दर्से ख्याल ।"

इस कूटनीति और विकट तैयारीकी खबर इङ्गलैण्डमें पहुँची । वीरवर नेलसन कैडीज (Cadis) से भारी जहाजोंके बेड़ेके साथ शत्रुका सामना करनेको भेजे गये ।

अभाग्यवश, रास्तेमें ऐसा भारी तूफान आया, कि नायक-का वेनगार्ड जहाज एक दम नष्ट भ्रष्ट हो गया । आगेके पतवार इत्यादि कुल आँधीके झोंकोंसे उड़ गये । बेड़ेकी महायुद्ध-नौकाओंने अध्यक्षकी नौकाकी दुर्दशा देख विचार किया, कि अब जिबराल्टर लौट गये बिना यह पुनः युद्धके योग्य नहीं हो सकती । अस्तु, वे पुनः जिबराल्टर लौट गये ।

नेलसनको महायुद्ध-नौकाओंको जिबराल्टर लौट जानेका बड़ा खेद हुआ , क्योंकि चार दिनमें ही बढ़इयोंके उद्योगसे

वैनगार्ड युद्धके योग्य बना दिया गया। बेड़ेकी Fargate महायुद्ध नौकायें मानो चक्षु हैं, इनसे रहित बेड़ा चक्षु-हीन है। चरित्रनायक अपने बेड़ेके साथ अलकजन्द्रिया (Alexandria) पहुंचे। अंगरेज़ी बेड़ेके पहुंचनेके तीनही दिन बाद फ्रेञ्च बेड़ा भी पहुंच गया था, परन्तु इन लोगोंको उनका कहीं पता नहीं लगा।

हिरास होकर नेलसनने पुनः सैराकूज़ (Saracuse) आकर लङ्गर डाल दिया। नौ सौ कोसका चक्कर लगाकर भी अंगरेज़ी बेड़ा कुछ पता न लगा सका।

इङ्गलैण्डमें लोग इस समाचारसे कनमन करने लगे। कोई कहता था, कि प्रधान अध्यक्षने ऐसे नवयुवकको ऐसा भारी काम सौंपकर अच्छा नहीं किया। कोई कहता, "अजी तुम क्या जानो, नेलसन ऐसा वैसा नहीं है कि शत्रु उसकी आँखों में धूल झोंक निकल जायेंगे।"

पाठक! क्या आप भी सोचते हैं कि, चरित्रनायक चुपचाप हाथपर हाथ दे बैठ रहे? नहीं, नहीं, अपने अमोलोंके उद्योगसे यह भी घबरा रहे थे। एकदिन वह कहने लगे कि सैराकूज(Saracuse) आनेसे मेरा दिल बैठा जाता है। कहीं इसी विफल मनोरथमें, मैं मर न जाऊं।

अबकी बार फिर भी टोह लगानेवाली नौकायें निकलीं और भाग्यवश शत्रुका सुराग़ पाकर लौटीं।

पहली अगस्त १७९८ को अन्वेषकोंने सूचित किया कि,

शत्रुका बेड़ा, अबूकिर (Abaukir) में,जो अलकज़ान्ड्रियासे१५ मील पूर्व्व में है, लङ्गरडाले हुए है। अब इतने दिनोंका विफल प्रयास सफल हुआ ; नेलसनने जो कई दिनोंसे शोचमें पूरा भोजन नहीं करते थे, आज बड़े आनन्दसे सब कप्तानोंके साथ भोजन किया। आज मानो भावी समर-स्मरणसे चरित्र-नायकका उत्तप्त हृदय शान्त हुआ। पाठक ! युद्ध-प्रिय वीरोंको मृतकोंका भयानक चीत्कार ही सुमधुर गान बोध होता है। प्रशस्त आकाश ही इनका वितान है, तोपोंका गुड़ुम धुड़ुम शब्द ही उनका मृदङ्ग शब्द है और समर-विजय ही सच्चा व्याह-सुख है।

दोनों ओरकी नौकाओंकी संख्या बराबर थी, परन्तु ब्रूआइज (Brueyes) फ्रेञ्च एडमिरलकी नौकायें बड़ी और अधिक बलशालिनी थीं।

फ्रेञ्च बेडे पर आक्रमण करनेके लिये अँगरेजी नौकाओं को एक ऐसे पछिले पानीके मुहानेसे पार होना था जहाँ बालू में ही अटक जानेकी सम्भावना अधिक थी ; पहुँचना तो दूर रहा।

ब्रूआइज़को यह विश्वास था, कि इस पछिले रास्तेसे शत्रुका आना दुःसाध्य है, अतः वह उधरसे निश्चिन्त सा था। बेड़ेके पीछेसे शत्रु आक्रमण करते हैं, यह नियम है। यह विचार कर फ्रेञ्च एडमिरल उधरसे ही आक्रमण रोकनेका उपाय कर रहे थे।

परन्तु ब्रूआइज़ (Brueyes)को क्या ख़बर थी, कि नेलसन बालुकामयी भूमिपर भी जहाज़ पार करानेमें अद्वितीय है।

इस समय वायु फ्रेञ्च बेड़ेकी ओर ही बह रही थी, अतः नेलसनको आक्रमण करनेकी और भी सुविधा मिली। इन्होंने अपनी आक्रमण-युक्तियाँ शीघ्र ही प्रत्येक कप्तानको सङ्केत द्वारा जता दीं।

उनके अन्य सेनापति जब नेलसनकी नौकापर इकट्ठे हुए, उन्होंने कहा—"वीरो! पहले तुम विजय प्राप्त करलो, फिर मनमानी लूट मचाओ, तुम्हें कोई नहीं रोकेगा।" सेनापति यह सुन सुनकर शीघ्र लड़ाई छेड़नेको उत्सुक होने लगे। एकने कहा "महाशय! यदि हमलोग इस समरमें विजय प्राप्त कर लें, तो संसार कितनी प्रशंसा करेगा?"

नेलसनने हँसकर कहा—"विजय पानेमें 'यदि' जोड़नेकी आवश्यकता नहीं है, हमलोग विजयी तो अवश्य होंगे, परन्तु इस लड़ाईसे कोई बचकर विजय-समाचार देने देश जायगा, इसमें अवश्य कुछ संशय है।"

साढ़े पाँच बजे सन्ध्याको समरके लिये पंक्तिबद्ध होनेकी आज्ञा नेलसनने दी।

कप्तान हुड और फोली (Foley)अपने 'ज़ेलस' (Zealous) जहाज़पर सावधानीसे थाह लेते हुए आगे बढ़े। अध्यक्षकी नौका वैनगार्ड (Vanguard)का पंक्तिमें छठा स्थान इस

निमित्त रक्खा गया कि, यदि आक्रमण-युक्तिको रद्द बदल करनेकी आवश्यकता हुई, तो वह यहाँ से पीछेवाली नौकाओं को ठीक कर लेगी।

ह्वेनगार्डपर छः झण्डे, भिन्न भिन्न स्थानोंपर, इसलिये फहरा रहे थे कि कहीं शत्रु-गोलेसे कुल झण्डे एक ही बार न उड़ जायँ। नेलसनकी चतुरतासे रास्तेकी बालुकामयी भूमिको साफ पार करते हुए देख, ब्रूआइज़का माथा ठनका और भावी युद्धका भयानक दृश्य अब उसकी आँखोंके सामने घूम गया।

कप्तान फोली (Foley)को इस समय एक और युक्ति सूझी। वह सावधानीसे थाह लेता हुआ आगे बढ़कर फ्रेञ्च-पंक्तिकी दूसरी नौका कौंक्वेरेण्ट (Conquerant) के सामने बाईं तरफसे जा भिड़ा। पीछेसे अन्य चार जहाज़ पहुँचकर, फ्रेञ्च बेड़े और समुद्र कूलके बीचमें जा डटे।

ह्वेनगार्ड यानी अध्यक्ष-नौकाने अन्य नौकाओंके साथ दाहिनी ओरसे जा उन्हें घेर लिया।

इस प्रकार फ्रेञ्च बेड़ा दोनों ओरसे बन्द हो गया। पाठक! नेलसन की इस सराहनीय युक्तिसे शत्रुके आगेकी पाँच नौकाओंको, असहाय हो, आठ नौकाओंका सामना करना पड़ा। पीछेवाली नौकाओंको स्थानाभावसे सहायता करने का मौका ही नहीं मिलता था।

एक तो अंधेरी रात दूसरे तोपोंसे निकलते हुए अविरल धुएँसे आकाश-पटपर मानों एक दूसरे काले पटका चन्दोवा तन गया था, हाथसे हाथ नहीं सूझता था। जहाँ देखो वहाँ ही अन्धकारका साम्राज्य था। ऐसे अन्धकारमें एक अँगरेजी नौका "मैजेसटिक" (Majestic) भूलसे अपनेसे कहीं बड़ी फ्रेञ्च अध्यक्षकी नौकासे जा भिड़ी। जीतोड लड़ाई हुई और "मैजेसटिक" में आग लग गई।

एक घण्टे तक घनघोर लड़ाई होती रही। अँगरेज लोग अपने २ स्थानपर डटे रहे। इसी समय शत्रु-दलका एक गोला नेलसनके सिरमें आ लगा। 'मैं मरा' कहता हुआ वीर बेरी साहबकी गोदमें गिर गया। बड़ी शीघ्रतासे लोग इन्हें अस्पतालमें लेगये।

डाक्टर इस समय एक नाविक की मरहम पट्टी कर रहा था, तुरन्त छोड़कर अध्यक्षको देखनेके लिये आया, परन्तु धीर, वीर, उदार नेलसन यह कदापि सह न सके। उन्होंने कहा—"डाक्टर! तुम मुझसे पहले गिरे हुए हमारे नाविकोंकी पट्टी ठीक कर दो, पीछे हमारे पास आना, मैं उनके जीवन को अपनेसे कहीं मूल्यवान समझता हूँ।"

पाठक! दया की चरम सीमा है! अपने प्राणात्मक दुःख की वीर को कुछ चिन्ता नहीं है चिन्ता है अपने नाविक के सुख की! बलिहारी तेरी उदारताकी! देश-गौरव वीर! तूने आज दयालुता और कोमलता की पराकाष्ठा दिखला दी।

शत्रु-त्रासकारी ! आज दो सौ वर्ष तुझे देशहितके लिये दृण-वत् प्राणत्याग होगये , परन्तु आज भी हम अन्य देशवासियोंके हृदयमें तुम्हारे चमत्कृत जीवनका छाया-चित्र मानों नवीन खचित चित्रकी नाईं चमक रहा है। आज भी तेरे जीवन के साँचेमें अपने को ढाल देनेकी इच्छा होती है। आज भी संसार तुझे पूज्यभावसे प्रणाम किये बिना नहीं रह सकता।

डाक्टरने घावकी परीक्षाकर उसे प्राणघातक नहीं बतलाया। तुरत औषधिकी, पट्टियोंका प्रयोग किया गया , परन्तु जयोत्सुक चरित्रनायकको ऐसे समय में जब कि विजय-देव अपनी जयमाल लिये इधर उधर डोलते फिरते थे कब शान्ति मिल सकती थी ?

अब अलग खडी हुई अँगरेजी नौकाएं शीघ्रतासे आगे बढकर नूतन बल और उत्साहके द्वारा समर की काया पलटा चाहती है ' इन नौकाओं के आगेका कालोडेन (Callo-den) जहाज बालूमें फस गया। सेनापति वीर ट्रौब्रिज (Troubridge)ने अनेक उद्योग उद्धारके किये,परन्तु निष्फल। तब इन्होंने अन्य पीछेसे आती हुई नौकाओं को बचाने के लिये अपनी नौका पर लाल रोशनी कर दी और उन्हें सकुशल रणक्षेत्र में पहुँचा दिया।

नये बलका पहुँचना था कि, वीरों ने हुँकार ध्वनि की। लड़ाई पुनः घनघोर होने लगी , तोपोंके गोले उगलनेसे समुद्र भी मानो गर्म हो उठा। अब फ्रान्सवालों के छक्के छूट गये।

एडमिरल ब्रूआईज की प्रधान नौका में आग लग गई। इस अग्नि के चट-चट, तड़ तड़ शब्द से दिशा गूँज उठी। अन्धकार लोप होगया। वीर एडमिरल ब्रूआइज दो घाव खाकर इसी भयानक अग्नि में जल मरा।

पाठक! भयानक काण्ड मचा! एक धड़ाकेके शब्दके साथ जहाज़ टुकड़े टुकड़े हो गया। इतने बड़े जहाज पर से केवल सत्तर मनुष्य अंगरेज़ नाविकों के उद्योग से बचाये गये। इन जलकर मरे हुए मनुष्योंमें एक अत्यन्त होनहार बालक भी था। यह बालक नौका-पृष्ठ पर अपने पिताकी आज्ञा से खड़ा था। अग्नि लग गई, सब मनुष्य जिधर सींग समाये जा घुसे, परन्तु यह वीर पुत्र: पिताकी आज्ञा बिना कैसे हटे? ज्वाला ने चारों ओर वृत्तरेखा की नाईं घेर लिया, बालक मृत पिताको पुकार पुकार पूछता था, 'बाबा! आज्ञा दो तो हट जाऊं।' परन्तु कर्तव्यनिष्ठ! तुझसे पुत्र को बाबा स्वर्ग में भी साथ रखना चाहता है। वीर कैसबिअनका! जाओ! जाओ! स्वर्ग की अप्सराएँ तेरे सुस्वागतको खड़ी हैं। तुझ से पुत्रका पिता भी खिंच कर स्वर्ग में आ गया है। जाओ! जाओ! पिता की शीतल गोद को गर्म करो।

जाओ! जाओ! धीर! धनहीन दुःखी सामान्य कर्णधार के पुत्र होकर भी तुम सुयश के सुवर्ण सिंहासनके अधिकारी हो! जाओ! हम कवियों से अपना सुयशगान सुन सुन कर नक्षत्रमय स्वर्ग-झरोखे में बैठ आनन्द उठाना। संसार की

भावी सन्तान को पितृ भक्ति का आदर्श दिखलाने वाले वीर जाओ। हम सब अपना अपना चरित्र गठन कर तुम्हे हार्दिक आशीर्वाद और धन्यवाद देंगे।

पाठक! नाइल-युद्ध विजय हो गया, प्रातःकाल देखा गया, तो ६ कोस तक भग्न जहाजोंके टुकड़े बिखरे हुए पाये गये और असंख्य मुर्दे जल-पट पर तैरते हुए दिखाई दिये।

इस समय नेलसन के हर्ष का ठिकाना न रहा। अपने कांपते हाथ से विजय का समाचार लिखकर स्वदेश भेजा।

बस एक बात और लिखकर यह परिच्छेद समाप्त करूँगा। नेलसन के एक मित्र कप्तानने, विजित फ्रेंच जहाज़ की उत्तम लकड़ियोंसे, एक शवाधार (Coffin) बनवाकर चरित्रनायक को भेंट किया और कहा, "मित्र! अपने इस विजयके स्मारक, इसी शवाधार में, आप अपना मृतदेह गड़वावेंगे, परन्तु मैं हृदय से यह कामना करता हूँ कि ऐसा दुर्दिन इङ्गलैण्ड के तथा हम लोगों के भाग्य में बहुत दिन के बाद आवे।"

नेलसनने हँसते हँसते मित्रका यह समयोचित पुरस्कार स्वीकार कर बड़े सुरक्षित स्थान में रख छोड़ा।

इस विजय से समूचा योरोप नेलसन को पूज्य-भाव से देखने लगा। टर्की के सुलतान तथा उनकी माताने हीरे मोती और सुवर्णका सन्दूक तथा बड़ी२ पदवियाँ और खिलअतें दीं। रशिया के ज़ार ने हीरा जटित अपना छाया-चित्र तथा अपने हाथ से लिखकर धन्यवाद-पत्र भेजे। इङ्गलैण्डाधिप को तो

बात चलानी ही फ़ज़ूल है। आपने कहा "नेलसन! तोहिँ अदेय मोहिं कछु नाहीं।"

नेलसन ने अपनी ओर से ३० हज़ार रुपये के पदक अपने सब नाविकों और कप्तानों को दिये। नेलसन पुनः देश लौट आये। इस समय वह जहाँ जाते थे, वहाँ ही राज्य तथा जन-मान्य से मुदित होते थे।

पाठक! निष्काम देश-सेवा के ये मधुर फल हैं।



आठवाँ परिच्छेद ।

नेलसन भूमध्य सागरमें तथा पुनः स्वदेशमें ।

प्रेमियों की भी कैसी दशा होती है । प्रिया के सुख से प्रेमी का जीवन, दुःख से बस मरण है ।

"अपने सुखों की ओर वह भ्रूक्षेप है करना नहीं,
उपहास निन्दा ताप दुख से वह कभी डरता नहीं,
उठती नहीं है भूल कर भी कामना उसकी कभी,
है दग्ध हो जाती सहज में वासना उसकी सभी ।।"

देश-प्रेमी नेलसन को अपना देश ही आराध्य था, वह इसके लिये "दिन कहीं, रात कहीं, सुबह कहीं, शाम कहीं" रहने में तनिक भी संकुचित नहीं होते थे । नाइल-युद्ध में पाठकोंको याद होगा कि, नेलसन शत्रु-गोले से अत्यन्त पीडित हो चुके थे ; परन्तु घर पर बैठ रहने से देश-सेवा पूरे तौर से नहीं हो सकती है, यह विचार कर उन्होंने इटली की ओर यात्रा की । इस यात्रा में मार्ग-कष्टों के कारण यह भयानक

ज्वर से पीड़ित हुए। १८ घण्टे तक डाक्टरों ने इन से हाथ धो लिया था, परन्तु भाग्य से पुनः जीवन की कुछ आशा हुई।

इस बीमारी में इन्होंने एक पत्र अपने प्यारे लार्ड सेण्ट विन्सेण्ट को लिखा था, जिसके प्रत्येक शब्द से नैराश्य टपकता था। उसका सारांश नीचे उद्धृत है:—

"महाशय! विश्वास होता है कि अब आपसे फिर कभी भेंट न होगी। जीवन बोझ बोध होता है। परमेश्वर करे कि अब इस उत्सुक जीवन का, जो मध्य जून से फ्रेञ्चों की खोज में बिताने से आरम्भ हुआ है, समाप्ति हो जाय। मैं अपनेको अब ईश्वर को समर्पण करता हूँ—हे ईश "राज़ी हूँ उसी में जिसमें रज़ा है तेरी।"

दुःखी

नेलसन।

चरित्रनायक परमेश्वर की कृपा से शीघ्र ही चंगे हो चले और उन्होंने इटली से नेपल्स (Naples) की ओर प्रस्थान किया। नेपल्स में इनका स्वागत बड़ी धूमधाम से हुआ।

इतिहासवेत्ता पाठक १७८९ के फ्रेञ्च प्रजा विद्रोह की बात भूले न होंगे। विख्यात लेखक वौल्टायर (Voltaire) तथा रोसियो (Rousseau) की उत्तेजना से, उन्मत्त फ्रेञ्च प्रजा, मनुष्यत्व के नियमों पर हरताल डाल, पवित्र मानुषिक-स्वत्व को अपने राजा और राज-महिषी के रुधिर से अप-

विस्त कर संसार भर में अपने अमानुषिक नियमों का प्रचार खड्गपाणि होकर, कर रही थी।

नेपल्सकी राज माता, अभागिनी मृतक फ्रेंचराज-महिषी मैरी अन्तोयनेट (Marie Antoinetee) की बहन थी। नेपल्समें भी फ्रेंचों के आक्रमण का भय था। नेलसनके वहां पहुँचते ही, मानों लोगोंकी जानमें जान आगयी। नेपल्सकी राजमाता ने चरित्रनायक का स्वागत सच्चे प्रेम और आनन्द से किया।

नेलसन को देखतेही, वह बड़े शिष्टाचार से बोली—"हे हमारे उद्धार करनेवाले वीर नेलसन! परमेश्वर तुम्हे आशीर्वाद दे और तुम्हारी रक्षा करे। हे वीर! मैं अपने राज्य, धन, तथा देशके लिये भी तुम्हारी ऋणी हूँ। हे विजयी! हे इटलीके रक्षक! समग्र इटली कुल के तुम्हीं अभयदाता हो! यह उदार अंगरेज़ों की कृपा है जो तुम्हे इस भयार्त्तों की रक्षा में नियुक्त किया है।"

नेपल्स-वासी अंगरेज़ोंको बड़ी पूज्य दृष्टि से देखते थे, परन्तु फ्रेंचों के भयसे वे अधिक सुष्टु व्यवहार दिखलाने में डरते थे।

इस समय फ्रेंचों ने पोप का शासन-दण्ड छिन्न कर रोममें प्रजासत्ताक राज्यकी नींव डालदी। नेपल्स भी निकट का ही राज्य है, कहीं यहाँ भी फ्रेंच उपद्रव न करें, इसी सोच से वहाँके राजाके हृदयमें भयानक चिन्ताग्नि चिता की नाईं धधका करती थी।

केवल उपद्रवका ही भय उसे नहीं था, बल्कि भय सबसे बढ़ कर इसका था कि, कहीं नेपल्सकी प्रजा भी फ्रेञ्चोंके उदाहरण की नक़ल न करने लगे और अपने राजा और राज-परिवारके सिरको वध-स्थानके रुण्ड-मुण्डमें मिला दे।

नेलसन तथा राज-मन्त्रियोंके अनुरोधसे नेपल्साधिप अपनी सेना इकट्ठी कर फ्रेञ्चोंपर रोम नगरमें चढ़ धाये। इस समय नेलसनने प्रतिज्ञा की कि, नेपल्सकी खाड़ीमें एक अंगरेज़ी नौका सदा राज-परिवारकी रक्षाके लिये प्रस्तुत रहेगी।

नेपल्सकी सेनाने, जो उधर रोममें लड़ने गई थी, बड़ी वीरतासे लड़कर शत्रु फ्रेञ्च सेनाको रोमसे निकाल दिया; परन्तु यह विजय उनकी अन्तिम विजय थी। नेपल्सकी सेना यद्यपि वीर थी, परन्तु सहिष्णु नहीं थी। विजित फ्रेञ्च सेना का पीछा करती हुई जब नेपल्स की सेना जारही थी, उस समय फ्रेञ्च सेना इसे थकी हुई देख, संख्यामें इनसे न्यून होने पर भी पलट कर खड़ी हो गयी और जम कर लड़ने लगी। नेपल्स की सेना इस मारको श्रान्त होनेके कारण सह न सकी। तुरन्त पैर उखड़ गये और विजय-माल फ्रेञ्चोंके गलेमें जा पड़ी।

नेपल्स शहर अब एकदम अरक्षित हो गया। राजा और राज-परिवारकी अवस्था इस समय बड़ी ही शोचनीय हो उठी। अब उनकी रक्षा केवल नेलसनके हाथ थी; इसीके सिवाए जीना और मारे मरना था।

प्रधान राज-परिचारिकाने राजपरिवार तथा राज-धन-कोष को बड़े उद्योग से एक सुरंग के द्वारा समुद्र-तट को ब्रिटिश नौका पर सुरक्षित पहुँचा दिया।

नेलसन ने बड़े उद्योग और कठिनाइयों से राज-परिवार-वालोंको वहाँ से अपनी वृहैनगार्ड (Vanguard) नौका पर पहुँचाया। दो दिन तक चरित्रनायकने खोज खोज कर शरण चाहनेवाले नेपल्स-देशवासियों को अपनी नौका पर स्थान दिया। नेपलसके कुल ब्रिटिश व्यापारी अपने माल-मतेके साथ अँगरेजी बेड़े पर सुरक्षित स्थान पा सके। इस प्रकार इतने मनुष्योंकी रक्षा कर अँगरेजी बेड़ा पेलरमो (Palermo) द्वीप की ओर चला और तीन दिन के कष्टमय मार्ग को पूरा कर, ये लोग सकुशल वहाँ पहुँच गये।

दुःखित नेपल्स-राजपरिवारको यहाँ उतार कर और उनके सब प्रकारके सुखके सामान करके, चरित्रनायक ने संसारमें अपने परोपकार और दयाका अनश्वर स्तम्भ गाड़ दिया। इसी कारण से आज दो सौ वर्ष बाद भी नेलसनका नाम क्रिश्चियन धर्म्मावलम्बी देशों का गर्व है। नेलसन अपने पैगम्बर क्राइस्ट सा परोपकारी था। उसने नेपल्सवालोंके लिये आँधी तूफ़ान इत्यादि की पर्वाह न की और इनकी रक्षाकर सच्चा क्रिश्चियन-कर्म चरितार्थ कर दिखलाया।

उद्विग्नता के समय में नेलसन रौद्र और शान्ति की अपूर्व मिश्र मूर्ति बन जाता था। वह जैसा ही वीर सिपाही और धीर

नाविक था वैसा ही वादी और विचक्षण राजनीतिज्ञ भी था। लार्ड विन्सेण्ट इसको गुणगाथा दोहराते हुए कहते थे, "तुम रणमें जैसे वीर हो, गूढ़मन्त्रणा में वैसे ही धीर हो।"

मिण्टोने झोंक कर कहा था, कि संसार केवल यही जानता है कि नेलसन स्वदेशके लिये लड़नेवाला है, परन्तु नाव्य-दक्षता और वीरताके अतिरिक्त नेलसन में योग्यता और सहिष्णुता के गुण भी पूरे हैं, जिसके द्वारा यह स्वदेश के गौरव और हित की रक्षा करता है।

भूमध्यसागरमें फ्रेञ्चोंका बल अब बहुत क्षीण हो चला था, ब्रिटिश बेड़े के बकध्यानके कारण ईजिपटसे फ्रेञ्चोंको छट-कने का सुअवसर नहीं मिलता था। इधर माल्टा में भी ये लोग धताये जारहे थे, उधर पोर्चुगीजों ने ग्रेटब्रिटन से सन्धि कर ली और अपना बेडा नेलसन के आधीन कर दिया।

इतने पर भी ब्रिटिश एडमिरल को सन्तोष नहीं था। वह इन देश-शत्रुओं का समूल नाश करने को कटिबद्ध थे।

नेलसन परमेश्वर से शत्रुओं के नाश के लिये विनती नित्यप्रति करते थे और कहते थे, "फ्रेञ्चों का अधःपतन हो। ये शब्द प्रत्येक देश के राजगृहों पर अवश्य अङ्कित रहने चाहिये।"

इस बीच में समाचार मिला कि फ्रेञ्च लोग ओपार्टो के निकट जिब्राल्टर जाने के उद्योग में हैं।

एडमिरल नेलसन इस समय कुछ बीमार थे, परन्तु उन्होंने

जो यह बात सुनी, रुग्नावस्था की अक्षमता मानों दूर भाग गई। शीतल रुधिरमें विद्युत् दौड़ गई। शरीरमें तेज और बलका संचार हो आया। वह शत्रु को रोकनेके लिये चलने को प्रस्तुत हो गये। बोले, "युद्ध करने मे एक क्षणका विलम्ब भी अनुचित है।"

तुरत एक पत्र लार्ड विन्सेण्ट प्रधान एडमिरल को लिखा:—

महाशय,

आप विश्वास रक्खें, ब्रिटिश बेडा मेरी आधीनतामें, कदापि शत्रुके हाथ नहीं पड़ सकता है। हम लोग नाश हो कर भी, शत्रु को पंख-हीन कर बन्दी हो जाने के योग्य अवश्य ही कर देंगे।

पाठक! तनिक "नाश होकर भी शत्रु को पंख-हीन कर देंगे" शब्दों पर तो ध्यान दें। ये शब्द वीर चरित्रनायक का कैसा स्वच्छ आन्तरिक भाव प्रगट कर रहे हैं। यह देश-प्रणय कैसा सराहनीय है कि,मैं मरू तो मरू, परन्तु देश-शत्रु के पंख टूट जायँ कि वह पुन: कभी देश की ओर भ्रूक्षेप न करे। धन्य!

नेलसन जनस्तुति के अनुसार पेलरमोमें शत्रुकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इसी समय बूढ़े मित्र सेण्ट विन्सेण्टके देश जानेका समाचार मिला। नेलसन इससे अत्यन्त दु:खी हुए।

इनके स्थान पर 'कीथ' साहब प्रधान अध्यक्ष होकर आये।

इस समय इन्हों ने कुल बेड़े के दो विभाग कर तेरह नौकाएँ चरित्रनायक की अध्यक्षता में सिसली की ओर रखीं और बाकी बीस टाउलौन की ओर अपने आधीन रखीं।

यदि नेलसन का सैन्य-बल इस समय अधिक होता तो शायद यह शत्रु को युद्ध के लिये वाध्य करते, परन्तु इनके दृष्ट वीरने भी बाईस शत्रु-नौकाओं से केवल तेरह नौकाओं को साथ ले सामना करना असम्भव समझा।

परन्तु कप्तान ट्रौब्रिज ने फ्रेञ्चोंको अनेक स्थानों के जल-युद्धमें परास्त किया। कुछ दिनोंमें फ्रेञ्च लोग नेपल्ससे निकाल दिये गये और नेपल्सके राजा पुन: अपने देशमें लौट आये! राज-परिवार ने अँगरेजों को अत्यन्त कृतज्ञता प्रगट की और अपने रक्षक नेलसन को ब्रोण्ट (Bronte) बना कर ४५ हज़ार रुपये की सालाना पेनशन नियत कर दी।

कीथ साहब कुछ दिनोंके लिये स्वदेश चले गये, इनके स्थान पर नेलसन को प्रधान स्थान मिलना चाहिये था, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। प्रधान एडमिरल का स्थान कीथ साहब के आने तक खाली पड़ा रहा।

नेलसन को यह अपमान सा बोध हुआ, उसने बड़े दुःख के साथ लिखा था, "मैं जब भूमध्यसागरमें प्रधान अध्यक्ष के काम करने योग्य ही नहीं हूँ, तब मेरे लिये ग्रीनविच के दवाखाने से बढ़ कर और स्थान कहां हो सकता है?"

इनके दुःखकी मात्रा उस समय और भी बढ़ गई, जब "नेपोलियन जो सदा कहा करता था कि एक न एक दिन हम लोग ईजिप्ट से अवश्य सकुशल देश लौट जायँगे" सचमुचही ११ अक्टूबर को अँगरेज़ी बेड़े के रहते हुए भी वह सकुशल फ्रान्स लौट गया।

नेलसन को, जो हृदय से चाहते थे कि फ्रान्स का एक भी जहाज ईजिप्ट से न भाग सके; इस बात की बड़ी लज्जा हुई।

इस समय नेपोलियन यदि पकड़ा जाता, तो इतिहास का रूप ही बदल जाता। नेपोलियन की क्रूरता इस प्रकार जगत्में विख्यात न हो, वीरका नाम आज या कलङ्कित न कर सकती, न वह Pest of Human race के नाम से ही पुकारा जाता।

नेलसन कहता था कि, यदि मैं माल्टाकी रक्षामें नियत न होता और मेरे पास कुछ भी और अधिक नौकायें होतीं, तो नेपोलियन इस प्रकार अकड़ता हुआ फ्रान्स नहीं लौट सकता था।

इस समय कीथ साहब स्वदेश से लौट कर भूमध्यसागरके बेड़े का भार लेने पुनः वापस आगए। नेलसन के हाथ से इस समय एक ऐसा कार्य्य हो गया, जिससे इनके सन्तप्त हृदय को शान्ति मिली। नाइल-युद्ध से भागे हुए दोनों फ्रेञ्च जहाज इस समय भाग्य से बन्दी कर लिये गये।

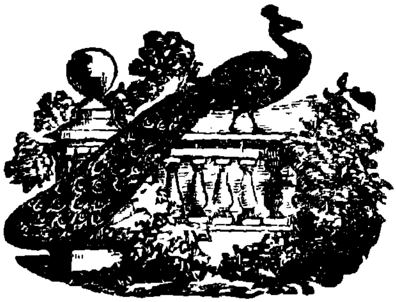
नाइल-युद्धका आरम्भ नेलसन के हाथ से होकर, समाप्ति भी इनके हाथों ही हुई।

चरित्रनायक अब स्वदेश लौट चले। जर्मनी होते हुए १८०० ई० की ६ ठी नवम्बर को यह यारमौथ (Yarmouth) सकुशल पहुँच गये।

जहाज़ नौकाश्रयमें पहुँचा। नेलसनके देश-भूमिपर पैर रखते ही समग्र इङ्गलैण्ड-वासी आ जुटे। बड़े आवभगत से एक गाड़ी पर चरित्रनायक बैठाये गये। नगर-निवासी घोड़ों की जगह आपही गाड़ी खींचकर लन्दन तक ले गये। अनेक पदवियां, अनेक खिलअतें भेंट की गईं। रात्रिके समय स्थान स्थान पर आतिशबाज़ियां छूटने लगीं। मनुष्यों ने जो जो सत्कार उचित थे सब किये।

पाठक! चारों ओर आनन्द ही आनन्द हो गया।

चरित्रनायक का भी श्रम भूल गया, वह प्रसन्न हो गये।



नवाँ परिच्छेद।

कोपिनहेगन का युद्ध।

मानवी प्रकृति भी कैसी अस्थिर होती है, एक क्षण में कुछ, दूसरे क्षण में कुछ और ही हो जाती है। आज यदि मिष्टान्न हमें अच्छा मालूम होता है तो कल उससे अरुचि हो जाना असम्भव नहीं, आज यदि जन-कलकल से हम प्रसन्न हैं तो कल एकान्तवासी, गृहत्यागी हो जाना असम्भव नहीं।

इस प्रकार की प्रकृति, यद्यपि अनेक बड़े २ मनोविज्ञान-वेत्ताओं के मत से, दुर्बलता है, परन्तु मनुष्य मात्र में ही एक न एक दुर्बलता विद्यमान है, अतः एक दोष से मनुष्य नीच नहीं हो सकता। जिस विधाता ने "सागर के जल खार कियो, अरु कण्टक पेड़ गुलाब के कीनो" उसने ही चरित्र-नायक के उज्ज्वल चरित्रमें एक ऐसा काला धब्बा भी लगाया, जिसके कारण वीरवर दुर्बल हृदय कहा गया।

परन्तु इससे क्या? यशस्वी नेलसन का क्या जगत् तिर-

स्कार कर सकता है ? स्कॉट के कथनानुसार चरित्रनायक पर दोषारोपण करने के पहले पाठक गण:-

"———*Search the land of living men,"*

"Where wilt thou find his like agen"

फिर जैसा कहते बने कहना।

नेलसन स्वदेश में आकर यद्यपि जन-सत्कार से बहुसम्मानित हो अत्यन्त प्रसन्न हुआ, परन्तु इसका गृहस्थ जीवन अपनी पूर्व प्रेयसी निरपराधिनी स्त्री को, एक नैपल्सवासिनी, बीबी हैमिल्टनके प्रेम-पाश में फँसकर, त्याग देने से बिल्कुल किरकिरा हो गया।

नेलसनका अन्त:करण यद्यपि हैमिल्टनके प्रेम चुम्बनके लिये लालायित हो रहा था, परन्तु वह अपनी पूर्व पाणिग्रहीताके सद्गुणोंको भूल न सके थे। पाठक! त्यागनेके समयके ये अन्तिम शब्द, —"मैं परमेश्वरको शपथ खा कर कह सकता हूँ कि तुम में वा तुम्हारे चरित्र में एक भी बात दूषणीय नहीं है," चरित्रनायक की सच्ची गुणग्राहिता दिखला रहे हैं। एक-मात्र आत्म-दुर्बलता ही ऐसे उदार प्रकृति नेलसन से ऐसा कठोर व्यवहार हो जानेका कारण कही जा सकती है।

नेलसनके उचित वक्ता मित्रोंने इनकी ऐसी कठोरता पर इनकी खूब ही खबर ली थी। खैर, विभ्रम भी मनुष्य जातिके लिये ही है "A man of genious and virtue is

but a man" अर्थात लाखों गुणोंसे शोभित होता हुआ मनुष्य भी मनुष्य ही है।

नेलसन स्वदेशमें अधिक दिनों तक न रह सके। पूर्व दिशामें समर भेरोंके शब्दसे शार्दूलके अङ्ग २ फड़कने लगे। पुन: देश-गौरवकी रक्षाके लिये, अविलम्ब, बेड़ा ठीक कर हुँकार ध्वनि करते हुए वह चल पड़े।

इस समय ग्रेट ब्रिटेन उदासीन देशोंकी नौकाओंकी जाँच पड़ताल बड़ी कड़ाईसे किया करती थी और जहाँ कोई वस्तु फ्रान्स देशमें जानेके लिये जहाज़ पर पाती पकड़ लेती थी।

इस धरा-पकड़ीमें डेनमार्कसे कई बार झगड़ा हो गया, जहाज जहाजमें भी कभी कभी टक्कर हो ही जाता था, परन्तु अभी तक युद्ध पूर्ण रूपसे नहीं छिड़ा था।

रशियाके ज़ार इस समय अँगरेजोंके माल्टा नहीं छोड़नेके कारण क्रुद्ध थे और बदलेमें उन्होंने तीन सौ व्यापारी अँगरेजी जहाजोंको बन्दी कर लिया था।

इस पर भी सन्तुष्ट न होकर, रशियाने स्वीडन, डेनमार्क और प्रशियाको भी अपना साथी बनाया और एक "Armed Neutrality" नामक सन्धि स्थापन की, जिसके द्वारा इन लोगोंने अँगरेजोंकी जहाज़ोंकी तलाशी लेनेसे रोका। इधर नेपोलियनने जो इन राज्योंकी कमर कसते देखा तो खूब शाबाशी दी और उनकी ५० समर-नौकाओंके द्वारा अपने कट्टर शत्रु अँगरेज़ोंके नाशकी भावना मनमें करने लगा।

पहले ग्रेट ब्रिटेनने डेनमार्कको ऐसी छेड़छाड़ न करनेके लिये बहुत समझाया। फिर रशियन बेड़ेको उसके अन्य सहायक बेड़ोंसे अलग रखनेका भी उपाय किया और एक बेड़ा हाइड पारकर तथा नेलसनके अधिकारमें यारमौथके नौकाश्रयसे रवाना किया। (१२ मार्च)

इधर डेनमार्कवालोंने जो ब्रिटिश सिंहके साथ भीषण युद्धकी संभावना देखी, तो पहले वे अपनी राजधानी कोपिनहैगनकी रक्षाका पूरा सामान करने लगे। आबाल वृद्ध डेन्स लोगोंने दिन रात कठिन परिश्रम कर टूटे प्रकोष्ठ इत्यादि को दुरुस्त करना आरम्भ करदिया। इन लोगोंका कथन था, कि या तो अपनी राजधानीकी रक्षा ही करेंगे या प्राण ही दे देंगे।

शुरू अप्रेलमें अँगरेजी बेड़ेने यारमौथसे चलकर डेनमार्क की राजधानी कोपिनहैगनसे पाँच मील पर इलिसनोर (Elisnore) में लङ्गर डाला।

पारकर साहब शुरूसे ही बड़ी सावधानतासे कार्य्य कर रहे थे। यद्यपि यह नेलसनके स्वभाव के विरुद्ध थे तथापि अपनेसे बड़े अफ़सरके काममें यह छेड़छाड़ नहीं कर सकते थे। मार्गका विचार करते हुए, पारकरने डेनमार्क जानेके लिये इंगलैण्ड और डेनमार्कके बीचके संकीर्ण मुहानेसे जाना निश्चित किया।

नेलसनको भी विचारकी सूचना दी गई। बड़ी निर्भयता से उसने कहला भिजवाया कि चलनेके मार्गके लिये इतना

रगड़ा क्यों ? जब लड़ना ही है तो किसी मार्गसे पार होकर लड़ना चाहिये।

नेलसनको अपने प्रधानके शङ्की मिजाज़से भय था, कि कहीं वह डेनमार्कवालोंको अजेय मान छोड़ न दें। परन्तु अब जब उन्होंने देखा, कि युद्ध होनेमें संशय नहीं तब तो बड़े प्रसन्न हुए और निश्चय ही विजय पानेके लिये अब वह तत्पर हो युक्तियां सोचने लगे।

पाठक! अब तनिक आंखें मूंद, समर-भूमिका ध्यान करें और अपने चरित्रनायककी अकाट्य युक्ति पर शाबाशी देवें।

कोपिनहैगनके सम्मुख दो मुहाने हैं, जिनसे बड़े जहाज़ आ जा सकते है। उन दोनों मुहानोंके बीच एक बड़ी लम्बी बालुकामयी भूमि है। भीतरी मुहानेके सन्निकट भूमिपर डेनसोंकी प्रभावशालिनी और शक्तिशालिनी सेना डटी है। उन्हें यह विश्वास है, कि शत्रु-सैन्य अवश्य इसी मुहानेसे आवेगी और हम लोगोंसे अवश्य ही पराजित हो जायगी।

इधर नेलसनने उनके हवाई क़िलेको अपनी एक युक्तिसे हवामें ही मिला दिया। इन्होंने भीतरी मुहानेसे न जाकर, बाहरी मुहानेसे घुसकर ही आक्रमण करनेका विचार किया। इस मुहानेसे प्रवेश करनेपर, अँगरेज़ी बेड़ा डेनसोंके पिछले भाग पर आक्रमण करेगा और नाश करता हुआ भीतरी मुहानेसे निकल जायगा।

अंगरेज़ी जहाज़ों पर पानी थाहनेका यन्त्र नहीं था ; अतः नेलसन दो दिन तक खुली डोंगीमें अन्धकारमयी रात्रिमें मुहानेकी थाह लेता फिरा। खैर १ एप्रिलको ब्रिटिश बेड़ेने कोपिनहैगन नगरसे २ मीलकी दूरीपर लङ्गर डाला।

नेलसनका अन्तरङ्ग मित्र कप्तान हार्डी इस समय जान जोखिमका कार्य्य कर बैठा। बड़ी चतुरतासे वह अपने जहाजसे उतर, एक डोंगीपर चढ़ कर, डेनिश तोपखानेमें घुस गया और कुहासेके अन्धकारमें यह डेन्स-प्रधान-एडमिरल की नौकाकी भी परिक्रमा कर आया। कहीं पानीकी छपछपाहट पा शत्रु जाग न जायं, इस विचारसे सांस रोकता हुआ और लग्गीसे डेंगी खेता हुआ वीर जा रहा था।

थोड़े शब्दसे बनाबनाया खेल मिट्टी हो जायगा। इस समय सर्वत्र शान्ति है। शान्त समुद्रमें वायु संचालनसे जलके थपेड़ेके शब्दके सिवाय और कोई शब्द नहीं है। दिशा शब्द-हीन हो गयी है। कहीं २ जहाजों पर जो रोशनियां जल रही हैं वे भी कुहासेके अन्धकार पटमें विलीन हो जाती हैं। प्रहरीगण रातके इस मध्य भागमें ऊंघ रहे हैं, उन्हें क्या खबर थी, कि शत्रु इतनी ढिठाई कर सकते हैं ?

चारों ओर टोह लेता हुआ कप्तान हार्डी अपने जहाज़की ओर घूमा। किसीने देखा तक नहीं। सकुशल यह नेलसनसे जा मिला और पेन्सिल कागज़ ले समूचा नकशा भीतरका खींच दिया। कहां पर जहाज घूम सकता है, कहां पर

बालूमें अटकने का भय है इत्यादि सब भेद नेलसनने अपने धूर्त्त जासूसके बुद्धि-चातुर्य्यसे जान लिये ।

नेलसनने तुरन्त प्रधान एडमिरलसे मिल, दश इनके जहाज़ आक्रमण करनेको मांगे । पारकर साहबने दो और अधिक जहाज, दुःसमय विचार, नेलसन को दिये और स्वयम् बचे बेड़ेके साथ रहिगये। और स्वीडिश लोगोंको सहायता देनेसे रोकनेके लिये तैयार हो गये ।

दूसरे दिन वायु भी अंगरेजी बेड़ेके अनुकूल बहने लगी, मानों ईश्वर भी इनको आक्रमणके लिये उत्तेजित करने लगा, परन्तु इस समय एक कठिन असमंजस पैदा हुआ । आठ बज गये, परन्तु कोई मार्ग-दर्शक ब्रिटिश बेड़ेके लिये आगे बढ़ता ही नही । इसका कारण यह था कि, मार्ग-दर्शकगण स्वयम् ही मार्गसे पूरे अवगत नहीं थे। सन्धि-समयमें किसी किसी प्रकार टोते टटोलते, ये अपने व्यापारिक जहाजोंको पार करलेते थे , परन्तु इस समय लड़ती हुई बड़ी बड़ी युद्ध-नौकाओंको रास्ता दिखलाना इन्हे असम्भव बोध होने लगा ।

खैर, यह झमेला अधिक देरतक न रहा । कप्तान मरे (Murray) ने अपने एडगार (Edgar) जहाज़ पर मार्ग-दर्शकका कठिन भार अपने ऊपर ले लिया । दस बजे सब लैस हो गये और क्रमसे चलनेका संकेत दे दिया गया ।

एडगार (Edgar) अपना कार्य बड़ी कुशलतासे कर रहा था , परन्तु अभाग्यवश आगेके तीन जहाज़, नायकका

पुराना अगमेमनन (Agmammon), बेलोना (Bellona) रसेल (Russel) बालूमें फँसकर बेकाम हो गये। इस प्रकार चौथाई आक्रमणकारी जहाज रद्दी हो गये। अबकी नेलसनकी दिग्विजयी (Elephant) की पारी थी। यदि नेलसन इस समय बुद्धिमानी नहीं करते और हार्डी का नक्शा उनके पास न होता, तो वह भी बालूमें फँसजाते परन्तु वे कठिन उद्योगसे निकल गये। बस फिर क्या था, पीछे के सब जहाज़ साफ निकल आये और दो तरफ़से गोलों की बाढ़ शत्रु पर दागने लगी।

अब, तीन नष्ट जहाजों की, अपनी वीरता से, क्षति पूर्त्ति करने के लिये, कप्तान रायोक्स (Rioux)ने हलके जहाजों के साथ आगे बढ़कर शत्रु के तोपखाने पर धावा किया। यह हलका बेड़ा ऐसा जी खोल कर लडा, कि शत्रु के छक्के छूटने लगे। मानो इन वीर नाविकों को अपनी हानि का ध्यान तक नहीं होता था।

पाठक! यही सच्चे युद्धका चित्र है। आड का कहीं नाम नहीं, दोनों ओर के तोपके गोले, दोनों ओर की नौकाओं पर ही टकराते है, गोलियोंसे तो मानो सावन भादों की झड़ी लग गयी है। वीर नाविकों को इस समय घावों की सुध भूल गई है, बेतहाशा गोलियां छोड़ते और खाते हैं। नेलसन ने कहा,--आजके युद्धसे स्वर्गमें स्थान बढ़ाने को आवश्यकता है। आज अब मालूमें न जाने कितने वीर वीरगति को पहुंचेंगे;

परन्तु जो कुछ हो, मैं तो ऐसे घनघोर युद्धके बीचसे स्वर्गके राज्य के लिये भी नहीं हटना चाहता ।"

इस छोटे स्थानमें ऐसे घनघोर युद्धकी भावना मात्रसे ही मन घबरा उठता है। युद्ध करते २ दोनों दल अब केवल दो सौ गज की दूरी पर चले आये थे। डेनिश प्रधान अध्यक्ष की नौका में इस अग्नि-वर्षा के कारण अग्नि लग गई ।

आग लग जाने पर भी वीर स्वदेश-भक्त डेनिशों ने मारना छोड़ा नहीं, परन्तु कब तक ? अग्नि भीषण रूप धर धुतकारने लगी। अब विचारा स्वदेश की सेवा करता हुआ, संसार इति-हास में अपना नाम अमर करके प्रधान डेनिश पञ्चतत्त्व में मिल गया।

मुहानेसे बाहर खड़े हुए अंगरेजोंके प्रधान अध्यक्ष पारकर साहब तोपों की विकराल गड़गड़ाहट और अग्नि की गगन-चुम्बी लौ देखकर तथा अपनी नौकाओं को अत्यन्त न्यून संख्या सोच २ कर विकल होनेपर भी वायु के प्रतिकूल रहनेके कारण सहायता नहीं पहुँचा सकते थे ।

साथही पारकर नेलसन के स्वभाव से अभिज्ञ थे। वह जानते थे कि नेलसन आमरण समर क्षेत्र से विमुख होने वाले नहीं है, अब क्या किया जाय ! एडमिरल को कोई युक्ति नहीं सूझी। घबरा कर नं० ३८ का समर रोकनेवाला सांकेतिक झगड़ा खड़ा कर दिया।

इस समय नेलसन नौका-पृष्ठ पर घूम घूम कर भीषण

समर-लीला देख रहे थे। इतने मे सकेत देखनेवाले अफसर ने नेलसन का ध्यान उस ओर आकर्षित किया। नेलसनने घबराकर पूछा —"क्यों मेरा न० १६ का जम कर समर करने वाला झण्डा तो लगा हुआ है न ?" प्रधानके हुंकारा भरने पर उन्होंने पुन: कहा —"ध्यान रखना, हमारा झण्डा नीचे झुके नहीं। डर कर समर बन्द करने के पहले. मैं अपना प्राण निकल जाना कहीं उत्तम समझता हूँ।" अपने चश्मे को दृष्टि-हीन नेत्र पर खींच कर नेलसन ने अपने सहकारी कप्तान फाले साहबसे हँसकर कहा—"क्यो जी! ऐसे २ समयों पर मेरा एकाक्षी होना मुझे आज्ञा उल्लङ्घन के कठोर दण्डसे बचा सकता है न ? सकेतक ! पुन: कहता हूँ सावधान ! मेरा जम कर लडने का सकेत नीचे न गिरे।"

पाठक ! सेण्टविंसन्‌सेण्टके युद्धमे प्रधान अध्यक्षकी आज्ञा-उल्लङ्घनसे विजय पाना आपको भूला नही होगा, वही बात पुन: आज सम्मुख आई। इस बार भी युद्ध विजय हुआ।

वीर कप्तान रायोक्स (Rioux) ने प्रधान अध्यक्षकी आज्ञा का पूरा प्रतिपालन किया। ज्योंही संकेत देख कर यह लौट रहा था और कह रहा था "हाय ! नेलसन युद्ध बन्द करनेसे क्या समझेगा !" इतनेमें शत्रुदलका गोला कुछ नाविकों को घायल करता हुआ इसे आ लगा। वीर गिर पड़ा . परन्तु गिरते गिरते भी इसने ऐसी उत्तेजना-अग्नि नाविकों के हृदय में लगाई कि कोपिनहेगन-युद्ध विजय करके ही वह बुझी।

"आओ वीरो! आजाओ! बस हम तुम एक साथ ही स्वर्ग को चलें।" ये उसके अन्तिम वचन थे। वीरोंने पुनः नूतन बल युक्त हो समर आरम्भ किया। दो बजते २ शत्रु लोग ढीले पड़ गये। शत्रु-बेड़ा आधेसे अधिक तहस नहस हो गया। उनके तोपखाने जहाँ तहाँ पानीमें डूब गये। उनका प्रधान जहाज़ जल भुन कर राख हो गया। अब वीर डेन्मों का बचना कठिन था, क्योंकि वे मरते २ भी पीछे हटनेवाले नहीं।

नेलसन इन वीरोंको मर मिटते देख न सका, तुरत एक पत्र डेन्मोंके पास इस प्रकार लिखाः—

"अँगरेजोंके प्यारे भाई डेन्मार्कवासी! लार्ड नेलसन को आज्ञा है कि वह डेनमार्कवासियों को शस्त्र रख देने पर जीवन-दान दे देवे। परन्तु यदि शस्त्र रखने में आप लोग आनाकानी करेंगे, तो नेलसन आपके कुल जहाजों को जला कर राख कर देगा और आप वीर डेन्मों को बचा न सकेगा।"

नेलसन के सिकत्तर ने पत्र को मामूली लाह से बन्द करना चाहा, परन्तु नेलसन ने ऐसा करनेसे मना किया और पत्र को ठीक तरहसे मोम मोहर कर बन्द करने की आज्ञा दी, क्योंकि यह पत्र डेनमार्कके राजाके पास जायगा। यदि वह पत्रको ठीक तरह से मोहर किया हुआ नहीं देखेगा, तो अवश्य समझेगा कि किसी घबराहट को जल्दी से चिट्ठी बन्द नहीं की गई।

अस्तु । उत्तरमें डेनमार्कके राजाने समर बन्द करके सन्धि करनेको लिखा। नेलसनने बड़ी योग्यतासे कहला दिया, कि प्रधान अध्यक्ष पारकर साहबसे इस विषयमें राय ली जाती है उत्तर आने पर सन्धि-पत्र लिखा जायगा। तब तक समर बन्द रहेगा।

उधर पत्र प्रधान अध्यक्ष के पास भेजकर नेलसनने विजित शत्रु-नौकाओं को शत्रुओंसे बहुत दूर अलग लाकर लङ्गर डाल दिया।

रात्रि होते होते सन्धि स्थापित हो गई। वाचक ! कोपिन-हैगन का प्रसिद्ध युद्ध समाप्त हो गया। यहां पर डेनमार्क-वालोंकी युद्ध-रीतिका कुछ विवरण कर परिच्छेद समाप्त किया जायगा।

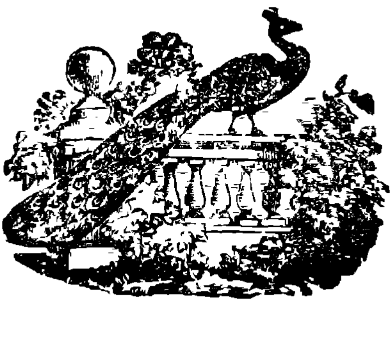
डेन्स लोग ठीक ब्रिटन लोगों के समान योद्धा थे. कोपिन-हैगन के युद्ध के पहले हम लोग फ्रान्स और स्पेन वालों की युद्ध-शैली देख चुके हैं, परन्तु ये लोग वीर डेन्सों के पैर की धूल की समता नहीं रखते थे। चार घण्टे तक अंगरेज़ों की भीमकाय तोपोंसे उगले हुए लहलहाते गोलोंको सहने की शक्ति डेन्सोंको छोड़ और भूपृष्ठ पर किसी वीर जाति की नहीं। ऐसा कार्य्य, ऐसी समर-धीरता और युद्ध-निपुणता अभी तक देखने में नहीं आई।

डेनमार्कवाले कहीं फिर रशिया से मिल कर उपद्रव न करें, यह सोचकर रशियनोंसे युद्ध करनेका विचार अंगरेज़ोंका

था, परन्तु रशियाका ज़ार ४ थी एप्रिल को चल बसा और शान्ति पूर्ण तौरसे स्थापित हो गई।

नेलसनने सन्धि की शर्त्तें ऐसी योग्यता से ठीक की थीं, कि शत्रु मित्र दोनों प्रसन्न हो गये।

नेलसनके पुराने प्रशंसक वृद्ध लार्ड सेण्टविन्सेण्टने इस समय लिखा, कि "महाशय! आदि से अन्त तक आपके प्रत्येक कार्य्य श्लाघ्य है। मुझे आपकी उपमा खोजने की आवश्यकता नहीं, संसारमें और सदृशता हो सकती है परन्तु नेलसन जगत् में एक ही है।"



दसवाँ परिच्छेद।

नेपोलियन की ईंगलैण्ड पर चढाई की धमकी।

सन्धि स्थापित हो गई। १७८० के चार शत्रुओं में से डेनमार्क तो समाप्त ही हो गया, परन्तु रशिया, स्वीडन और प्रूशिया ने अभी खुल्लमखुल्ला सिर नहीं नवाया था। फिर बिना इन्हें वशमें किये अंगरेज लोग सुखकी नींद कैसे सो सकते थे ?

अतः एक ब्रिटिश बेडा बाल्टिक समुद्रमें स्वीडनवालों की खोज में निकला। नेलसन को पुनः इस समय पुराने एलीफेन्टको छोड़ सेण्ट जार्ज (St. George) जहाजपर जाना पड़ा। अभाग्यवश सेण्ट जार्ज (St. George) में इस समय कुछ मरम्मत की दर्कार थी, इस लिये वह बेड़े से पीछे छूट गया।

नेलसन बेड़ेके साथ उपस्थित रहने के लिये अस्तव्यस्त हो रहे थे, एक पत्र में इन्होंने बीबी हैमिल्टन को लिखा था. कि सुननेमें आया है कि स्वीडिश बेडा शैलोज (Shallows)

के निकट आ गया है। हमारे जितने नाविक हैं सब युद्धमें जाने को व्यग्र हो रहे हैं, और मुझे भी यहाँ रहना विद्यार्थियोंके स्कूल में रहने के बराबर है। जिस प्रकार स्कूल में छुट्टी हो जाने पर विद्यार्थीगण अपने गृहपर गद्गद् हृदयसे लौट जानेको व्यग्र रहते हैं, उसी प्रकार मैं भी युद्ध-रूपी स्कूलको शीघ्र समाप्त कर कैसे भी इंगलैण्ड लौट जाने को उत्सुक हूँ।

सेण्ट जार्ज (St George) के युद्ध के लिये पूरी तरह से तैयार हो जाने के पहले ही, नेलसन को समाचार मिला कि स्वीडिश लोग आगे बढ़ आ रहे हैं।

युद्ध छिड़ जायगा और मैं समरक्षेत्र से इतनी दूर पड़ा रहूँगा, इस विचारने नेलसनको अपने आपेसे बाहर कर दिया। उन्होंने तत्काल एक डोंगी तैयार करनेकी आज्ञा दी और उसीमें बैठकर अपने जहाज को छोड़ दिया, और बेड़ेसे जा मिलने के लिये रवाना हो गये।

मार्गमें चरित्रनायकका हृदय, यह सोच सोच कर कि कहीं बेड़े से मैं न मिल सका और युद्ध छिड़ गया तो मैं क्या करूँगा, उथल पुथल होने लगा। जल्दीके मारे नेलसनने अपने गर्म वस्त्र तक न लिये। नाविकोंके ठहर कर कोट ले लेनेके अनुरोध करने पर इन्होंने कहा, "भाइयो! मेरे लिये शीत कहाँ है? स्वदेश-रक्षा करने की व्यग्रता ही मेरे शरीर को गर्म रखती है।" ठीक है! ठीक है! जन्मभूमिका सच्चा लाल! तू तो—

"तन्मय सदा है मग्न रहता, देश ही के ध्यान में,
निज को सदा है भूल जाता, देश ही के ज्ञान में,
कर त्याग सर्व्वस्व स्वार्थका, तू देश में अनुरक्त है,
आदर्श प्रेमी, पुण्य-भाजन, देश का तू भक्त है।"

श्रेष्ठ! तुझ सा एक देश-भक्त भी यदि प्रत्येक देशमें, प्रत्येक सदी में, जन्म लेता तो कोई भी देश दरिद्रता तथा परतन्त्रता की बेडी में क्यों जकडा जाता।

नेलसनने पुन: अपने नाविकोंसे उसी व्यग्रतामें पूछा, "क्या आगे का बेड़ा बहुत दूर निकल गया होगा? क्या वह मुझे मिलने का नहीं? क्या मैं विफल-मनोरथ हो घूम आऊँगा? नहीं। नहीं। कदापि नहीं। हे ईश्वर मुझे सहायता दो! मेरे शरीर में देश विद्रोहियों को नाश करने को विद्युत्-शक्ति दो। मुझमें आत्मबल, शरीर- बल और कष्ट सहने का बल दो! मुझमें लघिमा शक्तिका सञ्चार कर दो कि मैं स्वदेश-रक्षा के लिये एक स्थानसे दूसरे स्थान पर पक्षियोंकी नाईं उड़ जाया करूँ। बस अब मैं चला, माँझी! माँझी! भइया! आज अपनी सर्व्व शक्ति नौका खेने में लगादो। देखना वीरो! यदि मैं ठण्ड से मर भी जाऊँ तो मेरा मृतक शरीर ही रण भूमि में पहुँचा देना, इतनेसे ही मेरे आत्माको शान्ति हो जायगी!"

वाचकवृन्द! इस प्रकार बिना अन्न दानेके छ: माँझियों के साथ देशरक्षा-व्रत में व्रती वीर नेलसन आधी रात होते २

बेड़ेके निकट पहुँच गये। एलीफैण्ट (Elephant) जहाजके निकट डोंगी लगा दी गई, तथा नाविकों ने शीत और भूखसे अधमरे संज्ञा-हीन नेलसनको टाँग कर ऊपर चढ़ाया।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही स्वीडन-बेड़ा दीख पड़ा, परन्तु शीघ्र ही फिर कार्लस्क्रोना (Carlscrona)के तोपखानेके पीछे अन्तर्ध्यान हो गया।

थोड़ी देरमें एक शत्रु-नौका, शान्ति का झण्डा लगाकर, ब्रिटिश एडमिरल की नौकाके निकट पहुँची और एक सन्धि स्थापन करनेका प्रार्थनापत्र एडमिरलको दिया। पारकर साहब ने प्रार्थना स्वीकार की और युद्ध करनेकी मनाही कर दी।

अँगरेजी बेड़ा अब फिनलैण्ड (Finland) द्वीपकी ओर घूमा। ये लोग अभी कुछ ही दूर गये होंगे, कि पीछेसे एक रशियन नौका आ पहुँची। उसने ज़ार पौलका मृत्यु-समाचार तथा उनके उत्तराधिकारी ज़ार की सन्धि स्थापन करने की इच्छा प्रगट की।

बेड़ा अब जीलैण्डकी ओर यह समाचार सुन लौट पड़ा, और काओगाकी खाड़ी (Kioge Bay) में उसने लङ्गर डाल दिया।

सब समाचार इँगलैण्ड भेजे गये और वहाँ से सन्धि की मञ्जूरी ५ मईको आ गई। साथही पारकर साहब वापिस बुला लिये गये और नेलसनको प्रधान अध्यक्ष (Commander-in-chief)की पदवी दी गई।

नेलसन सन्धिकी मञ्जूरीका समाचार देने तथा शर्तें ठीक करनेके लिये अपनी नौका पर रशियन-नौकाश्रय में गया। ३०० ब्रिटिश व्यापारी जहाज़ जिन्हें रशियनोंने पकड़ लिया था, तुरन्त छोड़ दिये गये और जो शर्तें नेलसनने चाही दूसरे दलने मंजूर कर लीं। अब ज़ार ने नेलसन को शिष्टता से वापस जानेको कहा। शान्ति हो गई। नेलसनने प्रसन्न-चित्तसे १८ जूनको बाल्टिक समुद्रसे स्वदेश की ओर यात्रा की। तीन सप्ताहके बाद सकुशल वह यारमौथके नौकाश्रयमें जा पहुँचे।

लार्ड सेण्ट विन्सेण्टने इस समय नेलसन को लिखा, "महाशय! आपसा योग्य उत्तराधिकारी पाना कुछ कम सौभाग्य की बात नहीं। मैं ने अपने इस व्यवसाय में आज तक आप तथा कप्तान ट्रौब्रिज़ से ऐन्द्रजालिक, जो अपने हृदय की सच्ची उत्तेजना दूसरेके हृदय में मन्त्र-बल से संचार कर दें, कहीं देख नहीं पाये।"

यारमौथ पहुँचनेपर वहां के अधिवासियोंने ज्यों नेलसन का यथोचित स्वागत और सम्मान किया।

सदय चरित्रनायक वहां पर अधिक देरतक नहीं ठहरे। गगन-भेदी करतलध्वनि के बीच वह सीधे रुग्नागार में जा पहुँचे, जहां पर उनके पूर्व्व युद्धों के हज़ारों सच्चे नाविक पड़े कराह रहे थे।

नेलसन प्रत्येक रुग्न-शय्याके निकट ठहर कर आहतों

को ढाढ़स बँधाते थे। एक से पूछा,—क्यों जैक (Jack) क्या समाचार है?" उत्तरमें वह बोला, "महामान्य! मेरा तो दाहिना हाथ ही उड़ गया।" नेलसन यह सुन ठहर गये और अपने कटे हाथ का आस्तीन हिलाकर हँस कर बोले "जैक! तब तो मैं और तुम दोनों जने धीवरों के लिये चौपट हो गए (याने धीवरोंका जाल जिसमें सूना न फिरे इसलिये हम लोगोंने बाहे दे दीं)। खैर, जाने दो वीर! जो लड़ता है वह घायल होता ही है।"

इस प्रकारसे वह प्रत्येक रोगीके निकट कुछ देर ठहरते और उत्साहयुक्त वचनोंसे उन्हें प्रसन्न करते जाते थे। प्रधान डाक्टरने कहा, "महाशय! आपकी कृपाने तो हज़ारों डाक्टरों से भी बढ़कर उनका उपकार किया है। वे आपके वचन सुनकर अपना दुःख भूल जाते हैं और उनका हृदय आनन्द से नाच उठता है।"

स्वदेश लौट कर, नेलसन ने नौकरी से इस्तीफ़ा देकर शान्त जीवन अब बिताना चाहा; परन्तु लार्ड स्क्रिनसेण्टने बड़े उद्योग से उन्हें ऐसा करनेसे रोका और कहा,"वीर! क्या अब इतने दिनों तक कठिन परिश्रम से सेवित जन्मभूमि को ऐसे समयमें निराधार छोड़ना चाहते हो, जबकि फ्रान्स देशकी उपद्रवकारी सेना चारों ओर घोर विप्लव मचा रही है तथा देशकी स्वतन्त्रतापर आघात पहुँचनेकी संभावना प्रति क्षण देशवासियोंके हृदयमें खौला करती है?"

ऐसे आप्त वचनोंको सुनने की शक्ति सहृदय चरित्रनायक में कहाँ थी ? इन्होंने अपना विचार तत्काल ही बदल दिया। इस समय जबकि नेपोलियन चारों ओर से चुटैला होकर घिरे हुए सिंहकी नांईं केहरी-नाद कर रहा था और अपनी सब सेना इकट्ठी कर इँगलैण्ड पर चढ़ाई करने का विचार कर रहा था, तब नेलसनसे वीर अध्यक्षके विना ब्रिटिश-कुल की रक्षा होती नहीं दीख पड़ती थी। एक सामयिक इतिहास लेखक कहता है कि, "नेलसनका समर क्षेत्रमें विद्यमान रहना ही शत्रुको अपनी विचारित युक्तिको पुन: पुन: विचारनेका कारण हो जाता था"।

एकमत देशवासियों के अनुरोधसे नेलसनने पुन. उसी उत्साह और उद्योगके साथ देश-रक्षा का बीड़ा उठाया।

इँगलैण्ड यद्यपि घरसे बाहर समुद्रोंमें विजयी हो चुका था, परन्तु अभी तक अपने घरमें बैठकर, बाहरसे किये हुए आक्रमण का पूर्णरूपसे प्रतिकार करनेके योग्य नहीं हुआ था।

नेलसनने लिखा है कि प्रत्येक कार्य्यका आदि, मध्य और अन्त होता है। गृह-रक्षा करने का अब इँगलैण्डके लिये श्रीगणेश हुआ।

कैले (Calais) बोलोन(Boulogne)तथा डीपी (Dieppe) के नौकाश्रय यद्यपि इँगलैण्डके सन्निकट थे, परन्तु नेलसनके मतानुसार इधरसे आक्रमण होना सम्भव नहीं था।

उसका कथन था, कि शत्रु-दल अवश्यही दूसरी ओरसे धावाकर के कुछ सैन्य के साथ सीधे लण्डन पर चढ़ जानेका उत्कट उद्योग करेगी, इसमें संशय नहीं है।

नेलसन की रक्षा-युक्ति यह थी, कि शत्रुओं को इँगलैंडके कूल तक पहुँचने ही नहीं देना चाहिये। ज्योंही वह अपने नौकाश्रय से निकलें, त्योंही उनको आक्रमण करने देनेका अवसर न देकर, स्वयम् ही विकट धावा कर उन्हें उलटे पैर उन्हींके देशको लौटा देना चाहिये।

कदाचित फ्रेञ्च लोग, अपने बड़े जहाज़ पर धावा न कर, छोटी डोंगियों पर ही धावा कर बैठें तो उस समय के लिये नेलसनने यह आज्ञा दे रखी थी, कि ब्रिटिश सैन्य भी तत्कालही अँगरेज़ी डोंगियोंपर ही आगे बढ़कर धावा कर दे। नेलसन सदा कहता था कि "हमें पूरा विश्वास है कि वीर अँगरेज़ लोग फ्रेञ्चोंको दममें दम रहते कदापि आगे बढ़ने न देंगे।"

यदि शत्रु-दल फ्रान्ससे चलते समय इँगलैण्डको देख पड़ जाय, तो तत्काल तोपोंकी बाढ़ दाग दी जाय और उनकी पंक्ति जहाँ तक हो छिन्न भिन्न कर दी जाय। इस प्रकारसे प्रत्येक युक्ति को एक एक काट नेलसन ने सब नाविकों को समझा दी और कह दिया कि, "जिस समय शत्रु-दल इँगलैण्डके कूल पर पहुँचे, उसी समय निर्मोह होकर उसका नाश करदो, जिससे फिर वह इँगलैण्डकी ओर दृष्टिक्षेप न करे"।

पाठक! इस समय इँगलैण्ड शान्त देश नहीं, बल्कि एक

सशस्त्र-सैन्य-निवास सा बोध होता था। चारों ओर वीरों के पंक्तिवद्ध शिविर ही शिविर देख पड़ते थे। कोई वीर कहीं पर अपने शस्त्र युद्धके लिये स्वच्छ करता नजर आता था, कहीं वीरगण जोशमें आकर अपना देश-गीत God save our gracious King और उसका उत्तर Long to reign over us बड़े धूमसे गा उठते थे।

आज इँगलैण्ड पर Bony, जिसका नाम योरोप के बच्चों को डराकर सुला देने के लिये होआ के समान था, चढ़ाई करनेवाला है। आज योरोप की तरह इँगलैण्ड को भी पराजय करने को Bony आता है। ऐसे दु समय में यदि समस्त इँगलैण्डवासी स्वदेश-रक्षाके लिये सशस्त्र कमर कस कर तैयार न हो जायँगे, तो कब होंगे ?

नेलसन ने विद्युत-वेगसे शत्रु-निवारण की कुल युक्तियाँ ठीक कर स्वदेश लौटनेके केवल तीनही सप्ताह के बाद, आत्म-सुख का बलिदान, दे पुनः "यूनाइट" (Unite) जहाज़ पर झण्डा फहराया।

चरित्रनायक एक दिनके लिये भी आराम नहीं लेते थे। आज यदि वे शोरनेसमें अपने आधीनकी तीस नौकाओं का पर्य्यवेक्षण करते देखे गये है, तो दो दिनके बाद एक नई सेना जो बोनापार्ट से लड़ने को तैयार की जा रही है उसकी कवा-यद कराते हुए पाये जायँगे।

१५ अगस्त को फ्रेञ्चोंने बोलोनपर ५७ नौकाओंके साथ

स्थल पर आक्रमण कर ही दिया। अंगरेजोंने यद्यपि रोकने के बहुतसे उपाय किये, परन्तु पकड़ गये।

स्थल पर विजय पाकर भी जल-युद्ध में फ्रेञ्चोंने अपने को युद्ध के योग्य नहीं समझा। कई कारणों से इस समय युद्ध बन्द हो गया और सन्धि हो गई।

नेलसन को पुन: कुछ दिनोंके लिये शान्ति मिली और वह अपने खरीदे हुए नये इलाके मरटन(Merton) में इस समय रहने लगे।

नेलसन कहते थे, कि फ्रेञ्च अंगरेजों की सन्धि पानी पर बालू की दीवार ही समझनी चाहिये। नेलसनने इसलिये प्रधान मन्त्री के पास इस समय लिखा -"महाशय! मैं इस समय शान्ति के लिये लालायित हो रहा हूँ, तथापि आवश्यकता पड़नेपर आप मुझे सदा तय्यार पावेंगे।"

जैसा विचारा था वैसाही हुआ। कुछ ही दिनों के बाद, १६ मई को, पुन: फ्रेञ्चोंसे युद्ध छिड़ गया। चार दिनके बाद ही नेलसनने अपना शान्ति-गृह छोड़कर अन्तिम बार विक्टरी (Victory) जहाज़ पर अपना प्रधान अध्यक्ष सूचक झण्डा लगाया।

पाठक! अब केवल एक और अन्तिम ट्राफलगर (Trafalgar) का युद्ध बाकी है। बस इसके बाद आपसे विदा हूँगा।

ग्यारहवाँ परिच्छेद।

मध्यसागरमें शत्रुका पीछा तथा ट्राफलगरका युद्ध।

"उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे।
राजद्वारे स्मशाने च यः तिष्ठति सः बान्धवः"।

सत्य ही यह पुरानी कहावत मित्रोंकी कसौटी है।

जब तक यूरोपके राज्यों को यह विश्वास था, कि फ्रेञ्च लोग अँगरेजों से दब जायँगे तब तक तो वे अँगरेजों को 'त्वमेव सर्व्वम्' इत्यादि बड़ाइयाँ कर मित्रता का दम भरते थे, परन्तु ज्योंही फ्रेञ्चों का दिन कुछ फिरा और स्थल-युद्धमें विजय प्राप्त होने लगी, फिर ये स्वार्थी भँवरे कहाँ ठहरते थे।

पोर्चुगलने जो एक दिन अँगरेज़ोंका सबसे बड़ा सहायक गिना जाता था, इस समय यों आँखें फेर लीं मानों कभी की जान पहचान ही नहीं है। नेलसन का बेड़ा जब उसके नौकाश्रयोंमें पहुँचा, इन लोगोंने सभ्यताको लातमार, गृहागत अतिथि को आश्रय देनेसे भी इंकार कर दिया।

पाठक। ये प्रपञ्ची मित्रगण शूकर कुत्तेका झगड़ा अँगरेज फ्रेञ्चोंमें लगा, आप एक किनारे ठूण्डी पर हाथ रख खड़े हो तमाशा देखने लगे। ब्रिटिश लोग इस समय एक दम अकेले पड़ गये। फ्रेञ्चोंको सहायता करनेवालोंकी कमी न थी। स्पेन, पुर्त्तगाल इत्यादि जिसे देखिये वही सहायता देनेको तय्यार था। कोई सैन्यसे, कोई धनसे और कोई बातोंसे ही नेपोलियनका उत्साह बढ़ा रहा था, परन्तु संसारकी पोली बातों और वीर नेलसनकी अध्यक्षतामें अँगरेजोंके सच्चे उत्साहसे क्या मिलान? ये कभी हतोत्साह होनेके नहीं।

इस समय नेलसनकी ओजस्विनी बातें,—"यदि फ्रेञ्च शैतान द्वार पर खड़ा है तो मैं कल सवेरे ही उससे भिड़ कर उसे पीछे ढकेल दूँगा।" कैसी सच्ची वीरता दिखला रही है।

भूमध्यसागरमें जहाँ फ्रेञ्चोंके बेड़ेके पहुँचनेकी खबर है वहाँ, जहाँ तक जल्द हो, पहुँच जाना चाहिये, इस उत्सुकतामें चरित्रनायक अपने बड़े जहाज विक्टरीको छोड़, एक छोटी युद्ध नौका पर चढ़ रवाना हो गये। विक्टरीको लार्ड कार्नवालिसको लेनेके लिये कुछ दिनों तक रुकने रहनेकी आज्ञा थी।

फ्रेञ्च बेड़ा इस समय भूमध्यसागरके टौलायोन नौकाश्रयमें लङ्गर डाले था। इसलिये चरित्रनायक टौलायोनके द्वारपर ही शत्रुकी प्रतीक्षा करने लगे।

दिन पर दिन बीतने लगे परन्तु, शत्रु दल नौकाश्रयसे

बाहर निकलता ही नहीं। लोग अधीर होने लगे, परन्तु नेलसनने नाविकोंको ढाढस बँधाया और कहा भाइयो! मुझे तो घर जानेकी इच्छा नहीं होती। मैं तो वर्ष भर भी, यदि शत्रु नौकाश्रयसे न निकलें तो, यहीं ही पड़ा रहूँगा।" इन बातोंका असर नाविकों पर ऐसा पड़ा कि, वे भी धैर्य्यसे शत्रुका सामना करनेको बैठ गये। युद्धकी नौकाएँ तथा नाविकोंको नेलसनने इस प्रकारसे युद्धके लिये तैयार रक्खा था, कि कई एक महीनों तक बेकार बैठे रहने पर भी जिस समय ४ हजार माइल तक शत्रुका पीछा करनेकी आज्ञा दी गई, उसी समय वे ऐसी मुस्तैदीसे प्रस्तुत हो गये, मानो नौकाएँ युद्ध-क्षेत्रमें लड़नेके लिये अभी इंगलैण्डसे ताजी आई हों।

मध्यासगरके प्रत्येक नौकाश्रयमें बोनापाटका दबदबा ऐसा जमा हुआ था, कि भयसे कोइ भी अँगरेजोंको खाने पीनेकी चीज भी देनेका साहस नहीं करता था।

स्पेन इस समय यद्यपि उदासीन राज्योंमें गिना जाता था, तथापि अँगरेजोंको आश्रय न देकर फ्रेञ्चोंको ही आश्रय दे, अँगरेजोंका नाश करा देना, वह अपना धर्म्म समझता था।

नेलसन बड़े शोकके साथ स्पेनवालोंकी इस नीचता पर कहने लगा कि, समय भी कैसा परिवर्त्तनशील है, जो स्पेन एक दिन संसारका मालिक कहा जाता था, अपने पूर्व गौरवको एकदम विस्मरण कर, तुच्छ फ्रेञ्च राजाका चेरा

बना फिरता है। स्पेनको चाहिये था कि अँगरेज़ोंके साथ योरपके शत्रु नेपोलियनको नीचा दिखानेका बीड़ा उठालेता और परोपकार ही के द्वारा पुनः एकबार अपना नष्ट गौरव प्राप्त कर लेता।

स्पेनवालोंकी इतनी नीचता पर भी नेलसनने उनकी उदासीनताका यथोचित सत्कार किया। जो फ्रेंच जहाज़ स्पेनवालोंके नौकाश्रयसे एक गोलोंकी दूरी पर पकड़े जाते, उन्हें चरित्रनायक मध्यस्थ राज्यके नौकाश्रयमें पकड़े हुए जहाज कह कर छोड़ देते थे।

एक दिन कई अँगरेजी छोटी नौकाएँ एक बड़ी शत्रु नौकासे मुठभेड़में पकड़ गई। शत्रु लोग इस विजय पर ऐसे प्रसन्न हुए, कि चारों ओर समाचारपत्रोंमें गप्पे उड़ादीं कि, नेलसनका विक्टरी (victory) जहाज मय कुल अँगरेज़ी बेड़ेके युद्ध क्षेत्रसे मार खाकर भाग गया।

नेलसनको जब यह झूठी खबर मिली, वह जल भुन कर राख होगये। तुरत उस झूठे समाचारका प्रतिवाद छपवाया और लिखा कि यदि संसार इस बातसे अभिज्ञ नहीं होता, कि नेलसन प्राण रहते हुए समरक्षेत्रसे कभी नहीं घूमा है, न घूम सकता है, तो आज शत्रुओंके दोषारोपणसे क्या मेरा चरित्र दूषित नहीं हो जाता? फ्रेंच एडमिरलकी चिट्ठी मेरे पास रक्खी है। उस झूठेको यदि युद्धमें भाग्यवश पकड़ पाया, तो पूछूँगा कि किस प्रकारसे नेलसन तुम्हारे सामने से

भागा था और किस तरह फ्रेञ्चोंने उसका पीछा किया था तथा उसका उत्तर संसारमें पुन: प्रकट करूंगा।

नेलसन इस समयमें पूरा उद्योग शत्रुको बाहर खींच कर लड़नेका करने लगे, परन्तु निर्दिष्ट समयके पहले तक सब उद्योग विफल ही हुए। नेलसनको भय था कि कहीं फ्रेञ्च-बेड़ा कुहासेके कारण भाग न जाय। शत्रु-बेड़ा यदि बिना युद्ध किये भागा, उस झूठे फ्रेञ्च एडमिरलसे यदि मैंने लड़ कर अपना बदला नहीं चुकाया, तो बिना मारे ही मैं अवश्य मर जाऊंगा।

चरित्रनायक दो वर्ष तक वहीं ही पड़े रहे, परन्तु इतनेपर भी अपने आज्ञाकारी नाविकों और अफसरोंके मध्यमें वह उदास नहीं होते थे। एक दिन प्रसन्न होकर वह कहने लगे, "मेरे वीर भाइयो! तुमसे वीर सहचर पाकर मैं फूला नहीं समाता हूं। मैं सानन्द मृत्युका भी सामना कर सकता हूं।"

परन्तु दिन बहुत बीत गये। १८ अगस्तको निराश हो, नेलसन विक्टरी (Victory) पर बेड़ेके साथ अपने पोर्टस्मोथ बन्दरको लौट आये। वहांसे लन्दन युद्ध-मन्त्रीसे कुछ आवश्यक मन्त्रणा करने गये। इसी समय इंगलैण्डके विख्यात सेनापति वेलिङ्गटनसे इनकी भेंट हुई। दोनोंमेंसे कोई भी वीर एक दूसरेको उस समय तक नहीं जानते थे। वेलिङ्गटनने नेलसनकी बातचीतसे एक निरा बकवादी नाविक ही

समझा था: परन्तु जब ट्राफलगर (Trallagar) के युद्धके साथ ही साथ इँगलैण्डके जलयुद्धका दिग्विजयी झण्डा वीरने ब्रिटिश द्वीपमें गाड़ कर, अपनेको जगत्से समुद्राधिप सम्बोधन कराके, जल-साम्राज्यका पूरा अधिकार ब्रिटनको प्रदान किया, उस समय वेलिङ्गटनके लिये नेलसन बकवादी नाविका नहीं रहा, बल्कि उसके लिये नेलसन अब राज-नीतिविशारद, देश-रक्षक तथा वीर देवता बन गया। अब ड्यूक का मानों सिर चरित्रनायकके सम्मुख बार बार झुकने लगा।

लण्डनसे लौटकर एक दिन पाँच बजे नेलसन अपने मरटन (Merton) इलाके वाले मकानमें बैठा था, कि कप्तान ब्लाकवड (Blackwood) के आनेकी खबर पहुँची। कप्तानको देखते ही नेलसनने कहा—"उत्सुकतासे भाई तुम्हारे इस समय आनेसे मुझे बोध होता है, कि फ्रेञ्चोंका कुछ समाचार लाये हो।

ब्लाकउड़ने उत्तर, दिया, कि फ्रेञ्च लोग केडीजके निकट आ गये है।

नेलसनने यह सुन, प्रसन्न-चित्तसे बेड़ा तय्यार करनेकी आज्ञा तुरत भेज दी और जल्दी जल्दी चलनेकी तय्यारी करने लगा। यहां पर पाठकोंके चित्त-विनोदार्थ नेलसनके इस समयके लिखे रोजनामचेका कुछ अंश उद्धृत करता हूँ:—

"शुक्रवार रात्रि (सेप्ट० १३) साढ़े दसबजे मैं अपने प्रियतम

'मर्टन' (Merton) को छोड़ राजा और देशकी सेवा करने चला हूँ। परमेश्वर, जिन्हे मै दिन रात पूजता हूँ, मेरी और मेरे देशकी आशा पूरी करे। यदि परमात्माकी यह इच्छा हो, कि मैं सकुशल युद्ध-से तमे घर लौट आऊँ तब तो मेरी कृतज्ञताका ठिकाना ही नहीं है। मेरा सतत धन्यवाद उनको पहुँचेगा। यदि उनकी इच्छा पृथ्वीपरसे मेरा अस्तित्व उठा देनेकी ही हो, तोभी कुछ पर्वाह नहीं, मैं इसमें राजी हूँ। मुझे विश्वास है, कि वह दयालु मेरे बाद मेरे प्रिय आत्मीय जनोंकी रक्षा अवश्य ही करेंगे। वैसाही हो, जैसी उनकी इच्छा है। तथास्तु! तथास्तु! तथास्तु!"

नेलसन आज चलकर विक्टरी जहाज पर रवाना होनेको है। आज सवेरेसे ही नरनारियोंका जमघट पोर्टसमौथके नौकाश्रयमें हो रहा है। कहीं स्त्रियाँ, कहीं बच्चे, कहीं बूढ़े फूलोंकी झोलियाँ चरित्रनायक पर बरसानेको भर रहे हैं। पुलिसका विशेष-प्रबन्ध रहते हुए भी मनुष्योंका टिड्डी दल रोके नहीं रुकता है। सबकी यही उत्कट इच्छा है कि आगे बढ़कर मैं ही देश-रक्षकका पद चुम्बन करूँ।

नेलसन नौकाश्रय में आ पहुँचा। पहुँचते ही जन-समुद्रमें मानो भारी भूचाल आ गया। सब कोई वीरका मुख देखने ही को उत्सुक थे। जो बलवान युवक थे, वे तो गिरते पड़ते आगेको धँस पड़े। युवतियाँ ठोकरें खाकर भी बिना आगे बढ़े नहीं रुकीं, परन्तु रहगये बिचारे वृद्ध और बालक।

वृद्ध लोग तो खैर किसी प्रकार अपने कौतूहलको रोक कर किनारे से ही आशीर्वाद देते थे; परन्तु बच्चे जो रास्ता न पाते धक्कोंसे चिल्ला २ कर रोने लगते थे। सब देश-भाइयों से सत्कृत हो, वृद्धोंसे आशीर्वाद लेते हुए चरित्रनायक विक्टोरिया जहाज पर शत्रुका सामना करनेको चल पड़े।

विक्टरी पोर्चुगलकी राजधानी लिस्बनके निकट पहुँच गया। नेलसन उस दिनसे प्रतिदिन मिश्रित शत्रु-सैन्यकी बाट जोहने लगे। उन्होंने २७ सितम्बरको अपनी वर्ष-गाँठके एक दिन पहले अपने सब नाविकोंको इकट्ठा कर अपनी विख्यात युद्ध-युक्ति समझा दी।

वह युक्ति यह थी, कि शत्रु-जहाज ज्योंही सामने आवें, अपने जहाजोंको उनके साथ सटा कर युद्ध करना चाहिये, जिसमें जय या क्षय जो होनी हो शीघ्र ही निबट जाय।

खैर, २० अक्टूबरको, शत्रुओंके नौकाश्रय से बाहर आनेका समाचार मिला। अपने मित्रोंकी मण्डलीमें बैठे हुए नेलसनने २० अक्टूबरको अपने युवक नाविकोंको सम्बोधन कर कहा, "प्यारे मित्रो! आज या कलका दिन तुम्हारे जीवनका शुभ दिन होगा। कल मैं वह कार्य्य करनेवाला हूँ जिसका कथोपकथन, मेरे शुभचिन्तको! तुम्हें तुम्हारे जीवन के अन्त तक आश्चर्य और विश्वासके साथ करना होगा।"

दूसरा दिन अर्थात् २१ अक्टूबर नेलसनके वंशमें अत्यन्त शुभ माना जाता था। ४८ वर्ष पहले, आजके ही दिन, चरित्र-

नायकके मामा कप्तान सक्लिंगने, मुट्ठीभर सेनाके द्वारा शत्रुकी बड़ी सैन्यको परास्त कर, अपना नाम अमर किया था और आज ही के दिन हमारे नायकने भी अपना शुभ मुहूर्त्त जान लड़ाईकी दुन्दभी बजा दी।

२१ अक्टूबरके प्रातःकालमें समुद्र पर जो दृष्टि पड़ी, तो ऐसा बोध हुआ कि भावी संग्रामके भयसे समुद्र-जल शान्त होगया है, न कहीं लहर है और न कहीं तूफान।

संग्रामका पूरा दृश्य देखनेकी इच्छा करनेवालोंको अपने मस्तिष्कमें युद्धका मानचित्र खींच लेना उचित है। पाठक! संयुक्त बेड़ा दो लम्बी २ कतारोंमें चल रहा था। नेलसनका बेड़ा भी दो भागोंमें विभक्त था, परन्तु इसकी पंक्ति सीधी थी। रिपु-बेड़ों सा पार्श्वापार्श्वि नहीं।

फ्रान्स और स्पेनवालोंका बेड़ा अर्द्धचन्द्राकार रूपमें था, नेलसन उनसे मिलनेके लिये समानान्तर लम्बरूपमे चला।

नेलसनकी युद्ध-युक्ति शत्रुदलका एकदम नाश कर देना ही थी। अपनी चाहे जो कुछ भी क्षति हो परन्तु शत्रु-दलका नाश हो, यही उसका प्रधान मन्तव्य था और यही आज्ञा सेनापतियोंको नायकने दे भी रक्खी थी।

युद्धके पहले नेलसनने एक समयोपयुक्त सङ्केत देना निश्चित किया। संकेतदाताको आज्ञा दी गई कि, युद्धका सङ्केत इन शब्दोंमें होगा "इङ्गलैण्ड आशा करती है कि प्रत्येक मनुष्य अपने कर्मपर दृढ़ रहेगा" और दूसरा सङ्केत होगा कि "निकटतम हो युद्ध करो"

नेलसनके जीवनका प्रधान उद्देश भी इन्हीं दो शब्दोंमें था:—एक तो "कर्म" और दूसरा "हाथोहाथ युद्ध"।

नायक का प्रधान जहाज़ व्हिक्टरी (Victory) एक पंक्ति के सिरे पर और कोलिङ्गवुड (Collingwood) का रायल सोव्हरन (Royal Sovereign) दूसरी पंक्ति के सिरे पर चलने लगा।

दोपहर होते होते युद्ध आरम्भ होगया। संयुक्त शत्रु-दलने गोले दागना आरम्भ कर दिया, परन्तु नेलसनको अपने नाविकों पर बड़ा भरोसा था। वह चुपचाप बिना शत्रुके गोलों का जवाब दिये बढ़ताही गया। व्हिक्टरी (Victory) इससमय गोलोंकी झड़ीमें बढ़ रहा था। एक २ मिनटमें पचासों नाविकोंका वारान्यारा होने लगा। पाठक! इसीसे इस भयानक अग्निकाण्डकी भावना कर लेवें, कि शत्रुके एक गोलेने एकदम आठ वीरोंको उड़ा दिया।

इसी अन्धाधुन्धमें एक गोला कप्तान हार्डी और नेलसन के, जो ऊँचे तख्ते पर खड़े थे, कानोंके पाससे सनसनाता हुआ निकल गया। ईश्वरने कुशलकी, नहीं तो दोनोंकी वहीं समाप्ति थी।

आह! पाठक! कैसा भयानक समय उपस्थित था! वीरोंका धैर्य्य छूट जाता था! शत्रुकी तोपें तो दनादन गोले उगल कर क़हर मचा रही थीं और ये विचारे चुपचाप उन्हें सह रहे थे। सेनापतिकी आज्ञा बिना हाथ पैर डुलाते नहीं बनता था।

बड़ी प्रतीक्षाके बाद अब आज्ञा मिली, कि गोलों का जवाब गोलोंसे दिया जाय।

अब क्या था! बन्धनमुक्त सिंहोंकी नाईं वीर अँगरेज नाविक कुलाचें मार २ बाढ़ दागने लगे। विक्टरी (Victory) शत्रु-जहाजके एकदम निकट पहुँच गया! बातकी बातमें कहानी समाप्त हो गई। अँगरेज़ी जहाज शत्रु-बेड़ोंके इतने निकट आगया था कि, इनके गोलोंकी लहरसे ही शत्रुओंके जहाजोंमें अग्नि लगने लगी।

शत्रुओंने भी मुँह नहीं मोड़ा, जीतोड़ लड़ाई करने लगे।

शत्रु-जहाज रीडौटेबुल (Redoubtable) पर गोलोंकी मार बन्द करनेकी आज्ञा सेनापतिने दी, परन्तु शत्रु जहाज ने अँगरेजोंकी आधीनता स्वीकार करनेके बदले लड़ते लड़ते कट मरना ही उचित समझा।

यही जहाज जिसकी रक्षाके लिये नेलसनने आज्ञा दी थी, नेलसनका घातक हुआ। इतने नाविकोंके झमेलेमें नेलसनको ताक कर गोली मारना सहज नहीं था, परन्तु नायकके व्यक्त आकार प्रकार और पदकोंसे सुसज्जित वक्षस्थलको हज़ारों में भी पहचान लेना कठिन नहीं हुआ। फ्रेञ्च नाविकोंने ताक कर गोली दागी और गोली भी कारी जा बैठी।

नेलसनको उसके मित्रोंने पदकोंको उतार देनेका उपदेश दिया था; परन्तु वीरने गर्वके साथ कहा था, "छि:! इन्हें मैं

उतार दूँ। नहीं नहीं, मानके साथ इनको प्राप्त किया है और मान ही के साथ इनको लगाये मरूँगा।

गोली लगते ही नायकने अपने अन्तरङ्ग मित्र कप्तान हार्डीसे कहा, कि बस मित्र! मेरी समाप्ति हो गई।

बड़े कष्टसे नायकको लोग नीचे तलमें, जहाँ औषधा-लयका प्रबन्ध था, उठा ले गये। अपने कष्टोंको वीरता और धैर्य्यके साथ दबाते हुए नेलसनने आज्ञा दी, कि अन्य नाविकों से इसके घायल होनेकी बात गुप्त रक्खी जाय, जिससे उनका साहस नहीं टूटे। यह कह कर नायकने अपना रूमाल निकाल कर अपने चेहरे और पदकोंको ढक लिया।

सेनापतिकी इस अवस्थामें देख, डाक्टर लपका हुआ पहुँचा। परन्तु वीर ने बड़े धैर्य्यके साथ धन्यवाद देते हुए कहा—"डाक्टर! जाओ जाओ। हमारे उन प्यारे नाविकोंकी रक्षा करो जिनके बचनेकी आशा है। आह! मेरे लिये परिश्रम व्यर्थ है। प्यारे डाक्टर! विदा! विदा! और कुछ नहीं! जाओ अपना काम देखो।"

पाठक! कलेजा एंठा जाता है! इतने दुःखमें भी अपने सहयोगियोंका ऐसा ध्यान! धन्य! धन्य! नेलसन, तुम मानव देहमें देवता थे।

आदिसे ही नायकको विश्वास होगया था, कि अब उसकी मानव लीलाका अन्तिम पटाक्षेप हुआ चाहता है, वह अब केवल कुछ घण्टोंका पाहुना है। देहसे तो वह अत्यन्त दुःखित

था परन्तु उसकी आत्मा इस समय भी लड़ाईके दृश्यमें ही घूम रही थी। वह बार बार हार्डी (Hardy) को देखनेकी इच्छा प्रकट करता था, परन्तु कप्तानको अभी तक युद्धसे अवकाश नहीं मिला था, कि आकर अपने मुमूर्षु मित्रकी अवस्था पूछे।

भाग्यसे विजय लक्ष्मी अब अँगरेजोंकी ओर झुकी। हार्डी को जब पूरा विश्वास होगया कि अब विजयमें संशय नहीं है, तब वह सुसमाचार अपने सेनपतिको सुनानेके लिये झपटा।

हार्डीको देखतेही नायकको डूबते हुए सा सहारा मिला। उन्होंने व्याकुल हो पूछा—"हार्डी क्या समाचार है?"

हार्डीने प्रसन्नचित्तसे चौदह शत्रु-जहाजोंके पकड़े जाने का समाचार सुनाया।

नायक—हमलोगोंके जहाज तो सुरक्षित हैं न? किसी अँग-
रेज वीरने माँ की कोख तो कलङ्कित नहीं की?

हार्डी—नहीं मेरे प्यारे मित्र। इसका कोई भय नहीं है।

नेलसनने प्रसन्नचित्तसे हार्डीका कर चुम्बन किया और डूबते स्वरसे कहा, "मित्र! क्षमा करना। अब मेरी यही बिदाई है।"

हार्डी रोता हुआ फिर ऊपर आया और उसने फिर तुरन्त लौट कर पूर्ण विजय का समाचार नायक को सुनाया।

नेलसन—(धीमेस्वरसे) हार्डी! मैं सन्तुष्ट हूँ, मेरी आज्ञा मानो,
तुम तुरन्त विजित जहाजोंको बाँध दो, नहीं तो धोखा हो जायगा।

पाठक! मरते मरते भी बुद्धिमान सेनापतिकी चतुरता देखिये! नेलसनको मालूम हो गया था, कि कुछ ही दममें भयानक तूफ़ान आया चाहता है। इसी विचारसे जहाज़ोंका लङ्गर गिरानेकी आज्ञादी थी। हार्डीने उनके कथन पर विशेष ध्यान नहीं दिया, जिसका फल यह हुआ कि कई एक जहाज लापता हो गये।

नायकका अन्त अब निकट आगया। विक्टरी (Victory) के नाविकोंने विजय पर भयानक करतल-ध्वनि की, जिसके सुनते ही बुझते दीपकी शिखाकी नाईं नायकका मुखमण्डल सन्तोषसे दमक उठा। वह ऊँचे स्वरसे बोल उठा, "धन्य परमेश्वर! मैंने अपना कर्म्म कर लिया, ईश्वरको धन्यवाद है, जिसकी कृपासे मेरे कर्म्म सकुशल समाप्त हो गये।"

साँस चढने लगा, आँखें झपने लगीं, उजली पुतली नीचे ऊपर होने लगी। मुख भी कुछ एक खुलकर दो एक टूटे शब्द उच्चारण करने लगा। नायकने कुछ कहना चाहा, परन्तु केवल 'ईश्वर मेरी जन्मभूमि "इतना ही कह पाये और उनका पवित्र आत्मा शरीर-पिञ्जरको छोड अनन्त अपरिमेय सुखके उपभोगमें लीन हो गया।

इंगलैण्डके रक्षक, संसार के सबसे बड़े नाविक और योद्धाकी मानव-लीलाका सम्वरण होगया।

बस पाठक! लेखनी इतनी दूर तक सुखकी कहानी कहती हुई तेज़ चल रहीथी, पर अब इसका भी दिल टूट गया। मुखसे

काले रुधिर की धारा बहने लगी -अब लेखनी ठहर जाती है। लेखक भी अधिक कुछ कहना नहीं चाहता। परिच्छेद समाप्त करने के पहले दो एक आवश्यक बातें कह देना उचित है। शत्रुओं का नाश पूरे तौर से हो गया। अँगरेजों की ओर की क्षति उनकी तुलना में कुछ नहीं हुई। ४४०० शत्रु-सेना मारी गई और २५०० घायल हुई। अँगरेजोंकी ओरके ४०२ वीर मारे गये और ११२८ घायल हुए। सत्रह शत्रु-जहाज हाथ आये और एक उड़ गया।

पाठकों को स्मरण होगा, कि युद्ध के पहले नेलसन ने ईश्वर से जिस विजय के लिये प्रार्थना की थी वह उसे भरपूर मिल गई।

अँगरेजों ने अनेक उद्योग से बहुत से डूबते हुए शत्रुओं की रक्षा की।

युद्धके चौदह दिन बाद यह समाचार इँगलेण्ड पहुँचा। जगह जगह आनन्दके बधावे बजने लगे। नर नारी प्रसन्न-चित्त हो मृत देश-भक्तको आशीर्वाद देने लगे।

नेलसनका ताबूत बड़े समारोह से वेष्टमिनिष्टर में पहुँचाया गया। समूचा साम्राज्य महीनों तक शोक-चिह्न धारण किये रहा।

पाठक! ढीठ बालक नेलसन अपनी देश भक्ति और उद्योग के कारण सार्वजनिक मान्य का विषय हुआ! उसने अपने देशको, नहीं नहीं, समग्र योरप महाप्रदेश की रक्षा की।

इंगलैण्ड को जल शक्तिका बीज बो दिया और अपना नाम अमर कर लिया।

धन्य!

सदो (Southey) के शब्दों में, पाठक हमें अब अपने नायक से विदा होने दीजिये--

"इसने अपना नाम और उदाहरण सैकड़ों बालक तथा हजारों इंगलैण्डवासी युवकों को उन्नत करने के लिये संसार में छोड़ा है। इसका नाम, इसके देशका गर्व और वर्म्म है और सदा ही उन्हें उत्तेजित करता है और करता रहेगा।"

उपसंहार ।

पाठक ! बस, समुज्ज्वल दीपका निर्वाण होगया । इँगलैण्डके वृद्ध, युवा, बालक सभोंके हृदयमें दुःखकी अन्धियाली छागई । राजराजेश्वरने वीर सेवक के लिये, मित्रोंने सहृदय सुहृदके लिये, जन्मभूमिने योग्य पुत्रके लिये और लेखकने अपने नायक के लिये आँसू बहाये ।

नेलसन अब नहीं रहा । स्वर्ग की अप्सराओंने विस्तृत बाहु से उसका स्वागत करते हुए, उसे वीरोचित स्थान दे सम्मानित किया ।

पाठक, नेलसन की अन्तिम इच्छा सदा यही रही, कि उसके कानोंमें यह शब्द कोई सुना देता कि तुम्हारी जन्मभूमि तुम्हारे उद्योग से स्वतन्त्र हो गई । ईश्वरने उसकी इच्छा भी पूरी की । नेपोलियन अपना सा मुँह ले देश लौटा और इँगलैण्ड-विजय रूप कड़वे फल पर फिर दाँत नहीं लगा सका ।

नेलसन ! वीरवर ! आज तुम नहीं हो तो क्या, स्वर्ग से ही झाँक कर देखलो, तुम्हारी प्रेयसी जन्मभूमि आज राजराजेश्वरों के मुकुटों को अपने पैरोंसे ठुकराती हुई कहती है, कि मैं

संसार-विजयिनी हूँ, मेरा लोहा पार्थिव वस्तुएँ ही नहीं, स्वर्गीय ही नहीं, ईश्वरीय शक्तियाँ भी मानती हैं। मेरे सुविस्तृत राज्यमें सूर्य्यकी भी नहीं चलती, वह भी भयातुर हो मेरी प्रजाओं को सुख देता है और कभी अस्ताचल पर नहीं जाता, सदा अपने काम पर ही डटा रहता है।

नर-शार्दूल! यह तुम्हारी ही कीर्त्ति है, कि समुद्र के प्रशस्त वक्षस्थल पर तुम्हारे देश की शक्तिका सामना करना किसी से नहीं होता।

नेलसन! तुम अमर हो! तुम्हारा नाम, तुम्हारे देश-वासियों का गर्व और वर्म्म है। तुम न रहने पर भी जीते हो।

पाठको! नेत्रोन्मीलन कर दो। हृदयको दृढ़ कर बाहु में बल का सञ्चार कर दो। अपने आलस्यमय जीवनसे मुँह मोड़ उत्साह और उमङ्गरूपी मदिरा का पान कर, कार्य्यक्षेत्रमें आ डटो। आपके सम्मुख लेखकने एक वीरकी, एक देश-प्रेमोन्मत्त की, जीवनी ला रक्खी है। आप उद्योग करें ऐसे आदर्श पुरुष को अपना उदाहरण बनावें, उसके कार्यों की आलोचना करें और अपने जीवन में गुणोंका भरपूर समावेश कर देवें।

आप में शक्ति की कमी नहीं, कमी है इच्छा की। जिस समय आप देश-भक्त होनेका विचार कर लेंगे, सभी आपके सानुकूल हो जायँगे। लाख विघ्न वाधायें आपके मार्ग से हट कर आपके साफल्य का मार्ग साफ कर देंगी। आप यशवान, धनवान, और बुद्धिमान हो जायँगे। भारतवर्ष को ऐसे ही

उद्योगशील नरशार्दूलों की आवश्यकता है, जो अपने उद्योग और उत्कट परिश्रमसे सच्चे नागरिक रहते हुए भी देशका उद्धार कर सकें।

सर्व सच्चिदानन्द परमेश्वर! हम भारतवासियोंको बल दो, एकता और प्रेम का सञ्चार हममें कर दो, जिससे हमें भी नेलसन की नाईं अपने देशवासी और देशसे प्रेम हो और उनकी उन्नतिके उद्योगमें अपना अस्तित्व तक मिटा सकनेकी शक्ति हो।

समाप्त।

लीजिये ! तय्यार होगया !

वही अपूर्व, अद्वितीय और चिरभिलाषित

हिन्दी–बँगला कोष ।

जैसे कोषकी हिन्दी संसारमें आवश्यकता थी, जिसके बिना सहस्र सहस्र हिन्दी भाषा-भाषी बँगला सीखनेसे वञ्चित हो रहे थे, सीखना आरम्भ करके भी शब्दोंके अर्थ नहीं मालूम होनेसे हतोत्साह हो छोड़ बैठते थे, कोई लेख या ग्रन्थ अनुवाद करते समय शब्दोंका हिन्दी-पर्य्याय नहीं मालूम होनेके कारण अपनी इच्छाको रोक लेते थे, वही हिन्दी-बँगला कोष छपकर तैय्यार हो गया ! बँगलाके अनेकानेक ग्रन्थोंका हिन्दी-अनुवाद कर यश प्राप्त किये हुए, मनोरञ्जन मासिक पत्रके सुयोग्य सम्पादक, आरा-निवासी पण्डित ईश्वरीप्रसाद शर्म्माने बड़े परिश्रमसे इस कोषका सङ्कलन किया है और हर तरहसे हिन्दी-जाननेवालोंके लिये इसे परम उपयोगी बना दिया है। इसमें बँगभाषाके प्रचलित, बहुप्रचलित और अल्पप्रचलित सभी तरहके शब्दोंका संग्रह किया गया है और उनका अर्थ शुद्ध और सरल हिन्दीभाषामें, देवनागरी अक्षरोंमें, दे दिया गया है। संसा-

रको किसी भी भाषाको अच्छी तरह जाननेके लिये कोषकी आवश्यकता होती है। बुद्धिमानोंने कहा है कि जिसको कोष नहीं वह बहिरा है। अतएव जो बँगला जानना, जान कर उसके रत्नोपम ग्रन्थोंका आस्वाद लेना अथवा उनका अनुवाद कर यश और धन कमाना चाहते हैं, उनके लिये इस कोषकी एक कापी अपने पास रख छोड़ना

ज़रूरी और लाभदायक

है। बँगलाके सभी कोष बँगलामें हैं अर्थात् बँगला शब्दोंके बँगलामें ही मानी दिये गये हैं, अतएव वे उन्हींके कामके हैं जिनकी मातृ भाषा बँगला है, किन्तु हमारा यह कोष उनके लिए है जिनकी मातृभाषा हिन्दी है और जो बँगलाका अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लाभ उठाना चाहते हैं। बँगलामें छपे हुए अनेक कोष ऐसे है जिन में देशज अथवा प्रान्तीय शब्दोंका संग्रह कम है अथवा है ही नहीं; पर इस कोषमें ग्रामीण और कम प्रचलित शब्दोंका भी समावेश कर दिया गया है, अतएव यह हिन्दी-संसारमें तो अपूर्व है ही, बँगलाके अन्य छोटे मोटे शब्द-कोषोंसे विशेषता भी रखता है। सारांश, पुस्तक उपादेय और कल्पवृक्षके समान अभीष्टदायक है। इसकी एक प्रति अपने पास रख छोड़नेसे थोड़ेही दिनोंमें आपको बँगला भाषा हस्तामलकवत हो जायगी और आप बेखटके सुगमताके साथ बँगला ग्रन्थोंका

अनुवाद कर हिन्दी-संसारमें यश और धन प्राप्त कर सकते हैं। विशेष प्रशंसा करना व्यर्थ है। "नहि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते," कस्तूरीमें सुगन्ध है यह बतलानेके लिये क़सम नहीं खायी जाती। वह आप ही अपनी खुशबू ज़ाहिर कर देती है। मूल्य भी ऐसे अद्वितीय ग्रन्थका सिर्फ़ २) मात्र है।

स्वर्गीय जीवन।

महात्मा डाक्टर राल्फ वाल्डो ट्राइन अमेरिकामें अध्यात्म विद्याके अनुभवी विद्वान हैं। आपने अध्यात्म विद्या पर अपने अनुभवसे एक ग्रन्थ लिखा है। उसका नाम "इन ट्यून विद दी इनफाइनाइट" है। इस ग्रन्थका अमेरिकामें बड़ा आदर है। आपके उसी ग्रन्थ "In tune with the infinite" का यह हिन्दी अनुवाद है। अगर आप अपने जीवनको शान्त, पवित्र और सुखमय बनाना चाहते हैं; अगर आप यह यह जानना चाहते है कि मनका शरीर पर, और शरीरका मनपर कैसा प्रभाव पड़ता है; अगर आप सुख की अभिलाषा रखते हैं, अगर आप संसारका असल तत्त्व जानना चाहते हैं, अगर आप सुख, शान्ति और शारीरिक आरोग्यता चाहते हैं; अगर आप पूर्ण शक्तिवान होना चाहते हैं; अगर आप महात्मा और दूरदर्शी होनेकी इच्छा रखते हैं;

तो आप "स्वर्गीय जीवन" पढ़िये और विचारिये। इसके विचारोंका अनुशीलन करनेसे आप सचमुच महात्मा हो जायँगे; सुख दुःखके जञ्जालसे छूट जायँगे। आपमें अपार शक्तिका सञ्चार हो जायगा। जैसा आनन्द गीतामें है, वैसाही आनन्द इसमें है। हम अगर अधिक तारीफ करेंगे, तो शायद पाठक हमारी बात सच न मानेंगे; इस लिये हम हिन्दी संस्कृत आदि विद्याओंके महासागर

सरस्वती सम्पादक

पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदीकी रायका सारांश दिये देते हैं—

"जगदात्मासे ऐक्य स्थापना और आत्मानन्दका सुखानुभव प्राप्त करनेके विषयमें ट्राइन महोदयको जो अनुभव हुए हैं उन्हींका इसमें वर्णन है। पुस्तक दिव्य विचारोंसे परिपूर्ण है। अध्यात्मका थोडासा भी ज्ञान प्राप्त करनेकी इच्छा रखनेवालोंको अवश्य अवलोकन करना चाहिये।" कीमत ॥) डाकखर्च और पेकिंग ≠)

शान्ति और सुख।

संसारमें सब कोई सुख और शान्ति चाहते हैं। इससे कम या ज़ियादा मनुष्य इच्छा ही क्या कर सकता है? शान्ति और सुख किस तरह मिल सकते हैं, यह बहुत कम लोग

जानते हैं। सुख और शान्तिकी राह दिखानेवाले उस्ताद लाखों खर्च करने पर भी बड़ी कठिनतासे मिलते हैं।

शान्ति और सुखकी प्रत्येक प्राणीको जरूरत है। परन्तु वह अज्ञानके कारण किसी ही भाग्यवानको मिलते हैं। बहुत लोग समझते हैं, कि धनसे सुख शान्ति मिलती है, बहुतसे बल और प्रभुतासे सुख शान्तिका मिलना संभव समझते हैं; कुछ लोग कहते हैं कि मित्रोंसे सुख शान्ति मिलती है, मगर हमारी रायमें, इन सबसे सुख शान्ति नहीं मिलती। हाँ, ये सब सुख शान्तिके आधार अवश्य है।

इस गरज़से, कि सबको सुख और शान्ति मिले, जगत् दुःखोंसे छुटकारा पा जाय, हमने यह सुख-शान्तिकी राह दिखानेवाला उस्ताद तय्यार कर दिया है। अब भी जो लोग छः आनेका मोह करके सुखशान्तिसे कोरे रहें, उनका दुर्भाग्य ही समझना चाहिये। यह विलायतके लार्ड एव्हवरीकी पुस्तकका सरल और रोचक अनुवाद है। छपाई सफाई ऐसी है कि मनुष्य देखते ही मोहित हो जाता है। ११२ सफोंकी पुस्तकका दाम ।≠) डाक महसूल ≠)

नेलसन।

नेलसन एक दीन हीन पिताका पुत्र था। परन्तु वह

अपने उद्योग, सहनशीलता तथा सहिष्णुता इत्यादि गुणोंके कारण जगत्-मान्य हो गया।

उसने अपने देशके लिये अनेक बार मृत्युका सामना किया। अपने देशके शत्रुओंको मार भगानेमें अपना अमूल्य शरीर तक अर्पण कर दिया। उसने अपनी मातृभूमिकी सेवाके सामने अपने ऐश्वर्य्य, दारा, गेह, देह तककी निष्काम आहुति देदी।

योरपके हौआ नेपोलियनको उसने ही नीचा दिखाया। यह नेलसनके स्वार्थ त्याग और वीरताका फल है, कि आज इँगलेण्ड (वलायत) बड़े बड़े राजराजेश्वरोंके मुकटोंको भी अपने पैरोंसे ठुकराती है और कहती है कि मैं संसारकी विजय करनेवाली हूँ। संसारमें मेरा सामना करनेवाली कोई शक्ति नहीं है। मेरे बड़े राज्यमें सूर्य्यको भी नहीं चलती। वह भी डरकर मेरी प्रजाओंको सुख देता है और कभी अस्त न होकर, सदा अपने काम पर डटा रहता है।

इँगलेण्ड जो आज प्राय: तिहाई संसार पर एकछत्र शासन कर रही है, उसका कारण उसकी समुद्रीय शक्ति है। अँगरेजोंकी समुद्रीय शक्तिका सामना करनेकी हिम्मत आज किसीमें नहीं है, पर इँगलेण्डको ऐसी धाक बैठानेवाला एक मात्र वीर नेलसन ही था।

ऐसे महावीर, जगत्-मान्य, इँगलेण्डको स्वतन्त्र और जगत् विजयिनी शक्ति देनेवाले, नेलसनकी जीवनीको कौन न

पढ़ना चाहेगा ? हिन्दीमें ऐसे कर्मवीर, महावीरकी जीवनी नहीं थी, इसीसे हमने इसे छपाकर सस्ते दामोंमें अपने प्रेमी ग्राहकोंकी भेंट करनेका विचार किया है। घर घर यह पुस्तक पहुँचे और छोटे बड़े सभी इसे पढ़कर नेलसन होने का उद्योग करें, इस गरज़से इसका दाम भी ।≈) मात्र रक्खा है।

हिन्दी बङ्गवासीने लिखा है—

ग्रन्थकर्त्ताने इस पुस्तकके सम्बन्धमें भूमिकामें सत्य ही लिखा है—"यह पुस्तक एक कर्मवीरकी जीवनी है। नेलसनका जीवनी हमलोगोंको सच्चा स्वदेशभक्त, सहृदय, तथा अहङ्कारशून्य होना सिखाती है और हमें लाखों "विघ्न बाधाओंकी अजय सैन्यके सन्मुख भी अटट दुर्गसे खड़े रहनेका आदेश करती है।" भाषा तथा छपाई अच्छी है।

लवङ्गलता

अहा ! लवङ्गलताका निष्फल प्रेम, अपने धर्मको छोड़ दूसरा धर्म ग्रहण करना, अहङ्कारका प्रायश्चित, रमेशकी धूर्त्तता उसी धूर्त्तताका भयानक फल तारोकी पापलीला, पापियोंके पापका भीषण प्रायश्चित, ईश्वरके न्यायका ज्वलन्त उदाहरण, अन्तमें फिर अपने धर्मपर आना, आदि सभी घटनाएँ आश्चर्यजनक, कौतुहलवर्द्धक तथा शिक्षाप्रद हैं।

इस उपन्यासको पढ़नेवाला, अपनी गृहस्थीको सोनेका संसार बना सकता है। ऐसा उपदेश भरा और दिलमें

सुभनेवाला उपन्यास आज तक कहीं नहीं छपा। एक बार पढ़ना आरम्भ करनेपर, मनुष्य जब तक इसे समाप्त नहीं कर लेता, खाना पीना सोना सब भूल जाता है।

यदि आप कन्याओंको अँगरेज़ी पढ़ानेका बुरा परिणाम देखना चाहते हैं, यदि आप औरतोंको आज़ादी देनेका बुरा नतीजा देखना चाहते हैं, यदि आप अपनी गृहस्थीको सुख-मयी बनाना चाहते हैं, तो इसे मँगाकर अवश्य देखिये। इसके पढ़नेसे आपका दिल भी खुश होगा और शिक्षा भी मिलेगी। छपाई सफाई खूब सुन्दर है। २१८ पृष्ठकी पुस्तकका दाम ॥) डाकखर्च) है।

सम्मति

हिन्दीके सुकवि, पं० शुकलालप्रसादजी पाण्डेयने "नवकु-लता" के विषयमें अपनी यह सम्मति लिख भेजी है—

"पुस्तक बड़ी अच्छी हुई है। अनुवाद सबके समझने योग्य भाषामें सरल और सुन्दर हुआ है। पुस्तकको एक बार हाथमें लेनेसे, उसे बिना समाप्त किये, रखनेको चित्त नहीं चाहता।

मिलनेका पता—

हरिदास एण्ड को०

२०१ हरिसन रोड, कलकत्ता।